भूमिका.

देखो, एक समय वह था कि ब्रह्मादिक देवता और ऋषिमुनियोंने संसारके उपकारार्थ आयुर्वेदके अनेक ग्रन्थ रचे; और औषधियोंका यहांतक चमत्कार दिखाया कि ब्रह्माका कटा हुआ शिर अश्विनीकुमारने जोड दिया, क्या इससे अधिक औषधियोंका कुछ और चमत्कार होगा? फिर एक समय वह था कि राजमुकुट दिवोदास, वीरविक्रमादित्य, भोजराज, मदनपाल और हर्षादिक राजाओंने ब्राह्मणोंको द्रव्य दे देकर द्रव्यगुणके अनेक ग्रन्थ बनवाकर प्रजाके उपकारके लिये संसारमें प्रचार किया और यहांतक हुआ कि रोगोंको रहना भारी पड गया,एक समय वह हुआ कि यवनोंने उन ग्रन्थोंका नाम निशानभी न रक्खा, कहीं [illegible]नीमें बहाये कहीं आगमें जलाये और अपने बनाये ग्रन्थोंका प्रचार [illegible]या, जैसे कि तिब्बे अहमदी, तिब्बे अकबरी, इजालयमसीहा, मखजने[illegible]गी, कानूनशैख, इनहीकी चर्चा फैल उस समय भारतवासियोंका [illegible] अत्यन्त खिन्न हुआ, कारवार छूट गया, आयुर्वेदका नाम संसारसे [illegible]या, सबने अपने अपने धर्म कर्म छोड दिये, नौकरी चाकरी करके अ[illegible] [illegible]ालबच्चोंका प्रतिपाल करने लगे. और यवनोंसे बातबातमें डरने लगे, यहांतक हुआ कि सब देशमें फारसीहीका रिवाज हो गया, और नागरीका तो नामभी लोगोंके मुखसे निकलना कठिन हो गया.

अब एक समय यह आया कि जबसे जगत्सुखदानी महारानी विकटोरियाका राज्य इस देशमें हुआ तबसे हरेक विद्याका प्रचार घरघर होने लगा, कविलोगभी अपने अपने शास्त्र सुधारने लगे, वैद्यलोग आयुर्वेदकी चर्चामें प्रवृत्त हुए, प्राचीन ग्रन्थोंकी तलास होने लगी, नवीन नवीन ग्रन्थ बनने लगे, परन्तु जितनी उन्नति इस शास्त्रकी होनी चाहिये अभीतक उतनी उन्नति नहीं हुई, क्योंकि पूर्वकालमें जो चिकित्साके ग्रन्थ प्रकाशित थे अब वह सब ग्रन्थ संस्कारके अभावसे और सम्प्रदायके दोषसे लुप्त हो गये, अब बडे परिश्रमसे वैद्य लोगोंने खोजते खोजते चरक, सुश्रुत, माधवनिदान, वाग्भट, भावप्रकाशादिक प्रसिद्ध प्रसिद्ध ग्रन्थोंके पते लगाये, परन्तु इनके अतिरिक्त अनेक ग्रन्थोंका अभीतक पता नहीं, कि कहां गये?--

अब हमने बडे यत्न और परिश्रमके साथ आयुर्वेदीय शास्त्र अलभ्य रत्न महोपकारी 'राजवल्लभनिघण्टु' साधारण मनुष्योंके उपकारार्थ तलास करके प्रकाश किया, इस अमूल्य ग्रन्थको प्राप्त करके पहिले जैसा आनन्द हुआ कुछ वर्णन नहीं कर सक्ता, परन्तु आन्तरिक दशा देखकर वैसाही चित्तको खेदभी हुआ, क्योंकि वह पुस्तक इतनी अशुद्ध थी कि वारम्वार पढने परभी कहां कहांका अर्थ समझमें नहीं आया, परन्तु दूसरे ग्रन्थोंकी सहायतासे और सज्जनोंकी कृपासे जहांतक हो सका और अपनी बुद्धिसे जो कुछ समझमें आया, वहांतक शुद्ध किया, मैं साहस करके अपने आपको पुरा कृतकार्य हुआ नहीं समझता, इस भाषानुवादमें इतना कहना अवश्य है कि इस दुर्घट जटिल आयुर्वेदीयग्रन्थका अनुवाद करना सहज बात नहीं, वास्तवमें इस ग्रन्थके पाठ करनेसे ग्रन्थकर्ताकी साधारण बुद्धिमानीका परिचय नहीं पाया जाता, महाबुद्धिवान् महाराज श्रीमान्राजवल्लभ ग्रन्थके बनानेवाले और सर्वगुणपारायण वैद्यराज नारायणदास इसके प्रतिसंस्कारक हैं, परन्तु ऐसे अनुपम ग्रन्थोंके प्रकाश करनेमें वैश्यवंशअवतंस. कल्याणनिवासी श्रीश्रेष्ठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासकी समान प्रकाश करनेमें दूसरा दृष्टि नहीं आता,जिन्होंने अत्यन्त साहस करके आयुर्वेदकी नौकाको आलस्यके समुद्रमें डूबती हुई देख कटिबद्ध हो, केवट बन तन मन लगा उसको पार करनेका सहज उपाय कर दिया, कि देशदेशान्तरोंसे आयुर्वेदीय ग्रन्थ मगाय मगाय भाषानुवाद कराय कराय उनको अत्यन्त सुगम कर अपने 'लक्ष्मीवेंकटेश्वर यन्त्रालयमें प्रकाशित कर नगर नगर ग्राम ग्राममें उनका प्रचार करने लगे, उनके उपकारकाभी वर्णन नहीं हो सक्ता, जब मैंने देखा कि ऐसे ऐसे परमोपकारी संसारोमें आयुर्वेदकी सहायतामें कटिबद्ध हैं,जब उन लोकोंका इस प्रकार साहस देखा तो मैंनेभी अपने मनमें विचार किया कि यद्यपि इसकी भाषा करनी कठिनभी है परन्तु तोभी राजवल्लभकी टीका करनेको प्रस्तुत हुआ, और टीकाका नाम द्रव्यचन्द्रिका रक्खा और जहांतक हो सका उसकी भाषा ऐसी सरल और रसीली बनाई जो कि एकवार पाठ करनेसेही सर्व साधारणकी समझमें आ जाय, और इस ग्रन्थके मंगानेमें और शुद्ध करनेमें जो जो कठिनता पड़ी वह पहिलेही वर्णन कर चुका हूं, अब सब पाठकगणोंसे मेरी यह प्रार्थना है कि जो इस ग्रन्थमें किसी प्रकारकी अशुद्धि हो तो पाठक

लोग क्षमा करें, और इस ग्रन्थके पाठ करनेसे पाठकोंका थोडासाभी उपकार हो तो मैं अपने यत्न और परिश्रमको सार्थक समझूंगा.

कार्तिककृष्णाष्टमी ८ }
विक्रम संवत् १९५२ }

आपका परममित्र–
शालिग्रामवैश्य,
दीन्दारपुरा, मुरादाबाद सिटी.

यह राजवल्लभग्रन्थ द्रव्यचन्द्रिकाटीकासहित
सर्वविद्यासागर वैद्यवंशउजागर
श्रीश्रेष्ठ गंगाविष्णुश्रीकृष्णदासको
समर्पण किया, शुभमस्तु.



॥ श्रीः ॥

दीपनपाचनादि पारिभाषिकशब्दोंका अर्थ.

भाषांतरमें कहीं २ जगह " दीपन, पाचन. अभिष्यंदी " इत्यादि शब्दोंकाही प्रायः उपयोग किया गया है सो इट इन शब्दोंका अर्थ सर्व साधारण लोगोंकी समझमें आना कठिन है इसीलिये इन दीपनपाचनादि पारिभाषिक शब्दोंका अर्थ नीचे लिखा है—

१ दीपन—जो आमको न पचावे सिर्फ अग्निको बढावे. जैसे—सौंफ.

२ पाचन—जो आमको पचावे परंतु अग्निको न बढावे. जैसे—नागकेशर.

३ दीपनपाचन—जो आमको पचावे और अग्निकोभी बढावे. जैसे—चित्रक.

४ संशमन—जो वातादि दोषोंको न बिगाडे न शोधे किंतु समान रखे. जैसे—गिलोय.

५ अनुलोमन—जो वातादि दोषोंको पचाके बंधे हुओंको अलग २ करके गुदाद्वारसे बाहर निकाल देवे. जैसे—हरड.

६ स्रंसन—जो वातादि दोष और मलमूत्रको जबरदस्तीरे पक होनेके पहिलेही गुदाद्वारसे बाहर निकाले. जैसे—किरवारे की गिरी.

७ भेदन—जो वातादि दोषोंसे बंधे हुए मलमूत्रको अल २ करके गुदाद्वारसे बाहर निकाले. जैसे—कुटकी.

८ रेचन—जो पक्वापक्व अन्नादि और वातादि दोषोंको पतला करके गुदाद्वारसे बाहर निकाले. जैसे—निसोत.

९ वमन—जो विना पचे कफपित्तको मुखके द्वारा निकाले. जैसे—मैनफल.

१० संशोधन—जो स्वस्थानमें स्थित वातादि दोष और मलको ऊपरके ओर खींचके मुखनासिकाके द्वारा बाहर निकाले. जैसे—देवदाली.

११ छेदन—जो परस्पर मिले कफादि दोषोंको अपनी शक्तिसे अलग २ कर देवे. जैसे—जवाखार.

१२ लेखन—जो रसादि धातु और वातादि दोषोंको सुखायके बाहर निकाले. जैसे—सहत.

१३ ग्राही—जो अग्निको बढावे और आमको पचावे तथा स्वयं उष्णवीर्य होनेसे जलरूप कफादि दोष तथा धातुमलको शोषण करे. जैसे—सोंठ.

१४ स्तंभन—जो स्वयं रूक्ष, शीतल, कषेला और जल्दी पचनेवाला होनेसे वादीको उत्पन्न करे. जैसे—नागरमोथा.

१५ रसायन—जो जरा और रोगोंको दूर करे. जैसे—नीमगिलोय.

१६ वाजीकरण—जो वीर्यको बढाके स्त्रीसे प्रीति करावे. जैसे—कौंचके बीज.

१७ धातुवर्द्धक—जो वीर्यको बढावे. जैसे—असगंध.

१८ धातुचेतन–जो वीर्यको चेतन तथा उत्पन्न करे. जैसे–दूध.

१९ सूक्ष्म–जो रोमकूपोंके द्वारा शरीरमें प्रवेश करे. जैसे–तेल.

२० व्यवायी–जो पचनेके पूर्वही सब देहमें व्याप्त होवे. जैसे–भांग.

२१ विकाशी–जो शरीरकी संधियोंके बंधन और धातुओं-के ओजको शिथिल करे. जैसे–सुपारी.

२२ मादक–जो तमोगुणी होनेसे बुद्धिको लुप्त करे. जैसे–दारू.

२३ प्राणहारक–जो व्यवायी, विकाशी, सूक्ष्म, छेदन, मादक और आग्नेय इन छः गुणोंसे युक्त होवे. जैसे–वत्सनाग.

२४ योगवाही–जो अलग २ अनुपानोंसे सब रोगोंपर दिया जावे. जैसे–पीपल.

२५ प्रमाथी–जो अपनी शक्तिसे मुख, नासिका, कर्णादि-कोंके छिद्रोंमेंसे कफादि दोषोंको दूर करे. जैसे–मिर्च.

२६ अभिष्यंदी–जो स्वयं पिच्छिल और भारी होनेसे रसवाहिनी नसोंको रोकके शरीरको जकडा देवे. जैसे–दही.

॥ श्रीः ॥

राजवल्लभनिघंटोः विषयानुक्रमणिका.

वस्त्रादिधारणगुणाः।

अनुलेपनगुणाः।

तृतीयपरिच्छेदः।

भोजनयोगिनः ।

चतुर्थपरिच्छेदः ।

षड्रसगुणाः ।

पंचमपरिच्छेदः ।

पुष्पम् ।

षष्ठः परिच्छेदः ।

नानौषधिवर्गः ।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,

कल्याण--मुंबई.

॥ त्रैलोक्यपतये नमः ॥

अथ
द्रव्यचन्द्रिकाटीकासहितः
राजवल्लभः ।

परमानन्दसन्दोहकन्दभद्रकरं सताम् ।
इन्दिरारमणं वन्दे गोविन्दं नन्दनन्दनम् ॥ १ ॥

शालिग्रामेण वैश्येन नमस्कृत्य गजाननम् ।
राजवल्लभग्रन्थस्य भाषाटीका विरच्यते ॥

अर्थ—परमानन्दसमूहके मूल और सत्पुरुषोंके कल्याण करनेवाले, ऐसे लक्ष्मीपति श्रीगोविंद आनन्दकन्द नन्दनन्दन श्रीकृष्णचन्दको प्रणाम करूं हूं ॥ १ ॥

राजवल्लभवैद्येन निर्मितो राजवल्लभः ।
द्रव्याणां गुणख्यातिस्त्वाङ्घ्रिपजानां सुखावहः ॥ २ ॥

अर्थ—श्रीमान् राजवल्लभ वैद्यराजका निर्माण किया हुवा यह राजवल्लभ निघण्टु वैद्योंको परम सुखदायक है ॥ २ ॥

प्रभातप्राह्णमध्याह्नापराह्णरजनीभवः ।
इति पञ्च परिच्छेदाः षष्ठोप्यत्रौपधाश्रयः ॥ ३ ॥

अर्थ—इस ग्रन्थमें छे परिच्छेद हैं, पहिलेमें प्रभातकालके, दूसरेमें पौर्वाह्लिक (दुपहरसे पहिलेके), तीसरेमें मध्याह्निक (दुपहरके), चौथेमें अपराह्णिक (दुपहरसे पीछे सन्ध्यातकके),

पांचवेमें रात्रिमें होनेवाले कार्य और छटेमें औषधिके गुण कहे हैं ॥ ३ ॥

॥ प्रथमपरिच्छेदः ॥

ब्राह्मे मुहूर्त उत्तिष्ठेत्सुस्थो रक्षार्थमायुषः।
शरीरचिन्तां निर्वृत्य मैत्रं कर्म्म समाचरेत् ॥ ४ ॥

अर्थ—स्वस्थ मनुष्य आयुकी रक्षाके लिये ब्राह्ममुहूर्तमें उठकर शरीरकी चिन्ता (मलमूत्रादिक त्याग) से निवृत्त हो हितके करनेवाले कार्य्योंको विचारे ॥ ४ ॥

स्वभावतः प्रवृत्तानां मलादीनां जिजीविषुः।
न वेगान् धारयेद्धीरः कामादीनां तु धारयेत् ॥ ५ ॥

अर्थ—जीवनकी इच्छा करनेवाले पुरुषोंको स्वभावसे चाहिये कि आये हुए मलमूत्रादिकके वेगको कभी न रोके, क्योंकि इनके रोकनेसे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, और जो रोके तो कामक्रोधादिकके वेगको रोके जिससे संसारके रोगोंका नाश हो ॥ ५ ॥

पाद-मलमार्गाणां शौचगुणाः।

मेध्यं पवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकलिनाशनम्।
पादयोर्मलमार्गाणां शौचाधानमभीक्ष्णशः ॥ ६ ॥

अर्थ—दोनों पांव और मलके मार्ग सदैव स्वच्छ रखने चाहिये, क्योंकि, इनको स्वच्छ रखनेमें मेधाकी वृद्धि होती है, पवित्रता उत्पन्न होती है, आयु बढ़ती है और अलक्ष्मी (दरिद्र)-का विनाश होता है ॥ ६ ॥

उषःपानगुणाः ।

कासश्वासातिसारज्वरवमथुकटीकोठकुष्टप्रकारान् ।
मूत्राघातोदरार्शःश्वयथुगलशिरःकर्णनासाक्षिरोगान् ॥
ये चान्ये वातपित्तक्षयकफकृता व्याधयः सन्ति जन्तोः ।
तांस्तानभ्यासयोगादपनयति पयः पीतमन्ते निशायाः ७

अर्थ—जो मनुष्य रात्रिके अन्तमें अर्थात् सूर्योदयसे पहिले प्रतिदिन जल पीते हैं, उनके खांसी, श्वास, अतीसार, ज्वर, वमन, कटिरोग, कोठरोग, अठारह प्रकारके कोढ, मूत्राघात, उदररोग, मस्तकरोग, कर्णरोग, नासिकारोग, नेत्ररोग, वात, पित्त, कफ और क्षयरोगसे उत्पन्न हुए रोग सब दूर होते हैं॥७॥

दन्तधावनविधिः ।

प्रातर्भुक्त्वा च मृद्वग्रं कषायकटुतिक्तकम् ।
भक्षयेद्दन्तपवनं दन्तमांसान्यबाधयन् ॥ ८॥

अर्थ—प्रातःकालमें कषैले, कटु और कडवे वृक्षके अगले भागकी नरम दतौन लावे, उसके द्वारा इस प्रकार दांतोंको मर्दन करे कि जिससे दांतोंका मांस अर्थात् मसूढे न छिलजांय॥८॥

मतान्तरम् ।

केप्यत्र करवीरार्ककरञ्जनकुलासनान् ।
दन्तकाष्टार्थमन्ये तु सर्वान् कण्टकिनो विदुः ॥९॥

अर्थ—कोई कोई वैद्य कनेर, आक, करञ्ज, बकुल (मौलश्री) और शालवृक्षकी दतौन करनी चाहिये ऐसा कहते हैं ।

और कोई कहते हैं कि सब प्रकारके कांटेवाले वृक्षोंकी दतौन करनी चाहिये, जैसे कीकर, सिहोड़ इत्यादि ॥ ९ ॥

निषिद्धं यथा।

गुवाकतालहिन्तालखर्जूरैः केतकीमतैः।
नारिकेलेन ताड्या च न कुर्य्याद्दन्तधावनम् ॥१०॥

अर्थ–सुपारी, ताड, हिन्ताल, खजूर, केतकी, नारियल और ताडी (पत्रवृक्ष) इन वृक्षोंकी दतौन नहीं करनी चाहिये ॥ १० ॥

जिह्वालेखनगुणाः।

जिह्वानिर्लेखनं रौप्यं सौवर्णं ताम्रमायसम्।
तन्मलापहरं शस्तं मृदुश्लक्ष्णदशाङ्गुलम् ॥ ११ ॥
निहन्ति वक्त्रवैरस्यं जिह्वादन्ताश्रितामयम्।
आरोग्यं रुचिमाधत्ते सद्यो दन्तविशोधनम् ॥ १२ ॥

अर्थ–चांदी, सोना, तांबा, तथा लोहेकी नरम और निर्मल दशांगुलके प्रमाण सलाई बनावे उससे जिव्हाको घिसे, इस उपायके करनेसे मुखकी विरसता, जिव्हा और दांतोंके आश्रयवाले रोगोंके समूहके समूह नाशको प्राप्त होते हैं। तथा रुचिकी वृद्धि और दन्तभी शुद्ध हो जाते हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥

दन्तधावने दिङ्निर्णयः।

मृत्युः स्याद्दक्षिणास्येन पश्चिमास्येन चामयः।
पूर्वास्येनोत्तरास्येन सम्पदो दन्तधावनात् ॥ १३ ॥

अर्थ–दक्षिणकी ओरको मुख करके दतौन करनेसे मृत्यु

होती है, पश्चिमकी ओरको मुख करनेसे रोग उत्पन्न होते हैं, पूर्व और उत्तरकी ओरको मुख करके दतौन करनेसे सम्पदा बढती है ॥ १३ ॥

दन्तकाष्ठव्यवहारनिषिद्धजनाः ।

अर्दितो कर्णशूली च दन्तरोगी नवज्वरी ।
शोषी कासी च मूर्छार्तो दन्तकाष्ठं विवर्जयेत् ॥१४॥

अर्थ—अर्दित (पक्षाघातविशेष) रोगवाला, कर्णशूल (कानका दर्द) वाला, दन्तरोगवाला, नवीन ज्वरवाला, शोषयुक्त, कासरोगवाला और मूर्छारोगवाले मनुष्यको दतौन नहीं करनी चाहिये ॥ १४ ॥

चक्षुर्धावनविधिः ।

दन्तमूर्द्धमधो घृष्ट्वा प्रातः सिञ्चेच लोचने ।
तोयपूर्णमुखस्तेन दृष्टिराशु प्रसीदति ॥ १५ ॥

अर्थ—मनुष्यको चाहिये कि प्रातःकाल दांतोंके ऊर्द्ध और अधोभाग घिसकर मुखमें जल भर लेवे, फिर उस जलसे नेत्रोंको सींचे, इससे नेत्रोंमें प्रसन्नता प्रगट होती है, और ज्योति बढती है ॥ १५ ॥

अञ्जनधारणगुणमाह ।

नेत्रमञ्जनसंयोगाद्भवत्यमलतारकम् ।
दृष्टिर्निराकुला भाति निर्मलश्चन्द्रमा यथा ॥ १६ ॥

अर्थ—नेत्र अञ्जनके संयोगसे निर्मलतारका संयुक्त, स्थिरदृष्टियुक्त और चन्द्रमाकी समान दीप्तिवान् होते हैं ॥ १६ ॥

कङ्कतीगुणाः।

कङ्कती कान्तिजननी कण्डूघ्नी मूर्द्धरोगजित्।
केशप्रसादनी केश्या रजोजन्तुमलापहा ॥ १७ ॥

अर्थ—कंघी वा कंघा, कान्तिको प्रगट करनेवाली, मस्तककी खुजलीको हरनेवाली, शिरके रोगोंको मिटानेवाली, केशोंको निर्मल करके बढानेवाली, जूओंकी शत्रु और बालोंके मलको निकालनेवाली है ॥ १७ ॥

उष्णीष (पगडी) धारणगुणाः।

उष्णीषं शिरसा धार्य्यं प्रभाते लघु नित्यशः।
केश्यं चक्षुष्यमायुष्यं रजःशीतोष्णवारणम् ॥१८॥

अर्थ—प्रतिदिन प्रभातके समय हलके वस्त्रकी पगडी शिरपर धारण करे। यह केशोंको हितकारी, नेत्रोंकी कष्टहारी, आयुवर्द्धक तथा रज, शीत और धूपनिवारक है ॥ १८ ॥

श्मश्रुनखादिच्छेदनगुणाः।

पौष्टिकं कल्पमायुष्यं शौचरूपविराजनम्।
केशश्मश्रुनखादीनां कृन्तनं सम्प्रसादनम् ॥ १९ ॥

अर्थ—केश, श्मश्रु (दाढी, मूछ) और नखादिके छेदनसे शरीरकी कान्ति, पुष्टि, बल और आयु बढती है। तथा मनुष्य पवित्र और स्वरूपवान् होता है ॥ १९ ॥

प्रभातद्रष्टव्यः।

वैद्यः पुरोहितो मंत्री दैवज्ञोऽत्र चतुर्थकः।
प्रभातकाले द्रष्टव्यो नित्यं स्वाश्रियमिच्छता ॥२०॥

अर्थ-ऐश्वर्य्यकी इच्छा करनेवाले मनुष्योंको प्रातःकालके समय वैद्य, पुरोहित, मंत्री और ज्योतिषियोंका दर्शन करना चाहिये ॥ २० ॥

अग्निसेवनगुणाः ।

आग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः ।
आमाभिष्यन्दशमनो रक्तपित्तप्रकोपनः ॥ २१ ॥

अर्थ-अग्निके सेवन करनेसे वात और कफकी स्तम्भता, शीत, कम्प, अपक्वरस (आम) और शरीरका क्लेद (पसीना) नाश होता है, और रक्तपित्त प्रकुपित होता है ॥ २१ ॥

धूम-हिम-गुणाः ।

धूमः पित्तानिलौ कुर्य्यादवश्यायः कफानिलौ॥२२॥

अर्थ-धूम सेवन करनेसे पित्त तथा वातकी वृद्धि होती है, और शीत (हिम) का सेवन करनेसे कफ और वात बढती है ॥ २२ ॥

शिशिरगुणाः ।

शिशिरं शीतलं रूक्षं वृष्यं वातप्रकोपनम् ॥ २३ ॥

अर्थ-शिशिर शीतल, रूखा, वीर्यका बढानेवाला और वातप्रकोपक है ॥ २३ ॥

कुज्झटिगुणाः ।

रूक्षो तमोगुण प्रायो कुज्झटिः कफपित्तलः ॥२४॥

अर्थ-कुज्झटि (कुहरा, कोल, कुहासा) रूखा, तमोगुणसंयुक्त और कफ, पित्तका बढानेवाला है ॥ २४ ॥

अवस्थानगुणाः।

आस्या मेदोद्युतिश्लेष्मसौकुमार्य्यकरी सुखा ॥ २५॥

अर्थ—आस्या (अवस्थान, आसन) मेद, कान्ति, तथा कोमलता और अत्यन्त सुखका देनेवाला है ॥ २५ ॥

इत्थं मैत्रक्रियादीनां संक्षेपेणातिगुम्फितः ।
प्राभातिकः परिच्छेदः समाप्तो राजवल्लभे ॥ २६ ॥

अर्थ—इस राजवल्लभनिघंटुमें मैत्रादिक क्रियादिकोंका प्राभातिक संक्षेप और विस्तारको छोडकर मध्यम रीतिसे वर्णन करके समाप्त किया ॥ २६ ॥

इति श्रीराजवल्लभनिघण्टे द्रव्यगुणचन्द्रिकाटीकायां आयुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यकृतायां प्रथमपरिच्छेदः समाप्तः ॥१॥

॥ द्वितीयपरिच्छेदः ॥

अथ पौर्वाह्णिकं कृत्यं नानातंत्रान्निरुच्यते ॥ १ ॥

अर्थ—इसके उपरान्त अनेक प्रकारके तंत्रोंसे निरूपण की हुई पौर्वाह्णिक क्रियाओंको कहते हैं ॥ १ ॥

छत्रादिपञ्चकम्।

छत्रं वर्षातपरजोवातावश्यायनाशनम्।
वर्ण्यं दृष्टिकरं बल्यं गुप्त्यावरणसंकरम् ॥ २ ॥

अर्थ—छत्र (छाता, छत्री) लगानेसे वर्षा, धूप, धूल, वायु और शीत दूर होता है। यह छाता वर्ण (रंग) और दृ-

ष्टिकी शक्तिका बढानेवाला है, बलकारक और पिशाचबाधाका तो शत्रु समझना चाहिये ॥ २ ॥

दृष्टिगुणमाह ।

दृष्टिर्निष्पन्दिनी शीता निद्राश्लेष्मबलप्रदा ।
मलापहारिणी वायुदायिनी वह्निवारिणी ॥ ३ ॥

अर्थ—दृष्टि कफादिको टपकानेवाली, शीतल, निद्रा और श्लेष्मके बलकी बढानेवाली, मलनाशक, वायुजनक और मन्दाग्निकारक है ॥ ३ ॥

आतपगुणमाह ।

आतपः कटुको रूक्षः स्वेदमूर्च्छातृपापहः ।
दाहवैवर्ण्यजननो नेत्ररोगप्रकोपनः ॥ ४ ॥

अर्थ—सूर्यकी तपन कटु और रूखे गुणवाली है । तथा पसीना, मोह, तृषा, दाह, विवर्णता और नेत्ररोगको उत्पन्न करनेवाली है ॥ ४ ॥

छायागुणमाह ।

छाया दाहश्रमस्वेदहरा मधुरशीतला ॥ ५ ॥

अर्थ—छाया दाह, श्रम और पसीनेको दूर करनेवाली है । तथा मधुर और शीतलगुणयुक्त है ॥ ५ ॥

यष्टिधारणगुणमाह ।

स्खलतः संप्रतिष्ठानां शत्रूणां च विरोधनम् ।
अवष्टम्भनमायुष्यं भयघ्नं दण्डधारणम् ॥ ६ ॥

अर्थ—यष्टि (लकडी, लाठी) का धारण स्खलित पदको

संभालनेवाला, शत्रुविरोधक, बल और आयुका बढानेवाला और सब प्रकारके भयका नाशक है ॥ ६ ॥

अथ व्यायामगुणाः ।

व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम् ।
स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमो मतः ॥ ७ ॥
सर्वेष्वृतुषु सर्वैर्हि मर्त्यैरात्महितार्थिभिः ।
शक्त्यर्द्धेन च कर्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा ॥८॥

अर्थ—चिकनी वस्तु खानेवाले और बलवान पुरुषोंके लिये व्यायाम (कशरत) करना शीत और वसन्त ऋतुमें अत्यन्त हितकारी है, परन्तु अपना हित चाहनेवाले पुरुष और सब ऋतुओंमें आधी शक्तिके अनुसार कशरत करें, इससे अधिक कशरतका करना मनुष्योंको नष्ट कर देता है ॥ ७ ॥ ८ ॥

कुक्षौ ललाटे ग्रीवायां यदा घर्म्मः प्रवर्तते ।
शक्त्यर्द्धं तं विजानीयाद् यावदुच्छ्वासमेव च ॥ ९ ॥

अर्थ—जब कोख, माथा और कण्ठसे पसीना निकलने लगे, श्वास शीघ्रतासे आने लगे इसकोही " आधीशक्ति " कहते हैं ॥ ९ ॥

लाघवं कर्म्मसामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेशसहिष्णुता ।
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते ॥ १० ॥

अर्थ—कसरत करनेसे शरीरकी लघुता, कर्ममें चतुरता, स्थिरता और क्लेशसहिष्णुता (क्लेशका सह लेना) उत्पन्न होती है ॥ १० ॥

व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् ।
विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥ ११ ॥

अर्थ–दोष (वात, पित्तादि) क्षय होते हैं और अग्नि बढती है, नित्यके कशरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकारी वस्तु, अथवा उत्तम वस्तु जो कुछभी वह खा लें वह सब दोषरहित हो पक जाती है ॥ ११ ॥

नच व्यायामसदृशमन्यत्स्थौल्यापकर्षणम् ।
नच व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात् ॥ १२ ॥

अर्थ–स्थूलताका नाश करनेके लिये कशरतकी समान संसारमें और कोई दूसरी वस्तु नहीं है, क्योंकि कशरत करनेवाले पुरुषपर किसीका बलभी नहीं चल सक्ता और उसको कोई पराजयभी नहीं कर सक्ता ॥ १२ ॥

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिगच्छति ।
व्यायामक्षुण्णगात्रस्य पद्भ्यामुद्वर्तितस्य च ॥१३ ॥
व्याधयो नोपसर्पन्ति वैनतेयमिवोरगाः ।
वयो बलं शरीरं च देशकालमथापि च ॥ १४ ॥
समीक्ष्य कुर्य्याद्व्यायामं युक्त्या शक्त्या च बुद्धिमान् ।
रक्तपित्ती क्षयी शोषी कासी श्वासी क्षतातुरः ॥ १५ ॥

अर्थ–और उस पुरुषको एकीएका बुढापाभी नहीं आता, जिस प्रकार सर्पोका समूह गरुडपर आक्रमण नहीं कर सक्ता, वैसेही रोगोंका समूहभी उस पुरुषपर-जिसने कसरत करके अ-

पना शरीर सुखाया है-हमला नहीं कर सक्ता । बुद्धिमान् मनुष्यको चाहिये कि आयु, बल, शरीर, देश, काल इन युक्ति और शक्तियोंका भली भांति विचार करै । रक्तपित्त, क्षयी, शोष, खांसी, श्वास, जिसके अंगमें घाव हो गया हो, ऐसे रोगी॥ १३॥ १४॥ १५॥

भुक्तवान् स्त्रीषु च क्षीणो व्यायामं परिवर्जयेत् ।
वातपित्तामयी बालो वृद्धोऽजीर्णी च तं त्यजेत्॥ १६॥

अर्थ-और भोग करने वा मैथुन करनेसे क्षीण हो रहा है शरीर जिसका वह कभी कशरत न करे । वात-पित्तरोगी बालक (सोलह वर्षतक बाल्यावस्था रहती है), बूढा (सत्तर वर्षके उपरान्त वृद्धावस्था होती है) और अजीर्ण रोगवालेकोभी कशरत करनी नहीं चाहिये ॥ १६ ॥

अतिव्यायामतः कासो रक्तपित्तप्रतानकः ।
श्रमः क्लमः क्षयस्तृष्णा ज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥१७॥

अर्थ-अत्यन्त कशरत करनेसे रक्त, पित्त, खांसी, श्रम (थकावट), क्षय, प्यास, ज्वर और छर्दि इत्यादि रोग उत्पन्न होते हैं ॥ १७ ॥

अंगमर्दनगुणमाह ।

संवाहनं श्रमहरं वृष्यं निद्रासुखप्रदम् ।
मांसासृक्त्वक्प्रसन्नत्वं कुर्य्याद्वातकफापहम् ॥१८॥

अर्थ-शरीरका मर्दन श्रमनाशक, वृष्य (शुक्रका बढानेवाला), निद्राजनक, सुखदायक तथा मांस, रुधिर और त्वचाको निर्मल करनेवाला तथा वातकफको दूर करे है ॥ १८ ॥

शरीरघर्षणगुणमाह ।

उद्घर्षणं दृष्टिकरं कण्डूकोष्टविनाशनम् ।
तेजनं त्वग्गतस्याग्नेः सिरासुखविरेचनम् ॥ १९ ॥

अर्थ–शरीरका घिसना दृष्टि, शक्तिको बढानेवाला, खुजली और कोढ रोगका नाशक, चर्म्मस्थित अग्निके तेजको प्रबल करनेवाला और शरीरकी सिराओंको सुखवर्द्धक है ॥ १९ ॥

पथभ्रमणगुणमाह ।

अध्वा मेदःकफस्थौल्यसौकुमार्य्यविनाशनः ॥२०॥

अर्थ–मार्गका चलना मेद, कफ, शरीरकी स्थूलता और शरीरकी कोमलताको विगाडे है ॥ २० ॥

अतिभ्रमणगुणाः ।

यत्तु चंक्रमणं नातिदेहपीडाकरं भवेत् ।
तदायुर्वलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥ २१ ॥

अर्थ–अत्यन्त भ्रमण शरीरमें क्लान्ति उत्पन्न करनेवाला है, इससे आयु, वल, मेधा और अग्निकी वृद्धि होती है और इंद्रियोंको प्रफुल्लित करे है ॥ २१ ॥

पादुकाधारणगुणाः ।

पादत्रधारणं वृष्यमोजस्यं चक्षुषोर्हितम् ।
सुखप्रचारमायुष्यं वल्यं पादरुजापहम् ॥ २२ ॥

अर्थ–पादुकाधारण वीर्य्य और ओजकी बढानेवाली, नेत्रोंको हितकारी, चलनेके समय सुखदायक, आयु और वलवर्द्धक और पाओंकी पीडाको दूर करे है ॥ २२ ॥

पादुकाऽधारणदोषाः ।

पादाभ्यामनुपानद्भ्यां नृणां चंक्रमणं सदा ।
अनारोग्यमनायुष्यमिंद्रियघ्नमदृष्टिकृत् ॥ २३ ॥

अर्थ-बिनापादुकाके सदैव भ्रमण करना स्वस्थता, आयु, इन्द्रिय और दृष्टिकी शक्तिको कम करे है ॥ २३ ॥

हस्त्यादिगमनगुणाः ।

हस्त्यश्वरथदोलाद्यैर्भ्रमणं वातकोपनम् ।
स्थिरीकरणमङ्गानां बल्यं वह्निविवर्द्धनम् ॥ २४ ॥

अर्थ-हाथी, घोडा, रथ और डोलादि (पालकी) में बैठकर भ्रमण करनेसे वात प्रकुपित होती है,सब अंग स्थिरताको धारण करते हैं, बल और जठराग्निकी वृद्धि होती है ॥ २४ ॥

विश्रामगुणाः ।

विश्रामो बलकृत्स्वेदश्रमनुत्स्वास्थ्यदः शुभः॥२५॥

अर्थ-विश्राम बलकारक है, पसीनेको और श्रमको दूर करनेवाला है, चित्तको स्वस्थता और अत्यन्त शुभदायक है॥२५

पादप्रक्षालनगुणाः ।

पादप्रक्षालनं पादमलरोगश्रमापहम् ।
दृष्टिप्रसादनं वृष्यं रूक्षोघ्नं प्रीतिवर्द्धनम् ॥ २६ ॥

अर्थ-पाओंका प्रक्षालन अर्थात् धोना, पाओंका मैल और पाओंका रोग तथा श्रमको दूर करे है, दृष्टिकी शक्तिको तेज करे है, वीर्य्यको बढावे है, शरीरके रूखापनका नाश करे है और प्रीतिका बढानेवाला है ॥ २६ ॥ इति व्यायामगुणाः समाप्ताः ॥

प्राग्वातगुणमाह ।

प्राग्वातो मधुरः क्षारो वह्निमान्द्यकरो गुरुः ।
वैरस्यगौरवोष्णानि करोत्यप्स्वौषधीषु च ॥ २७ ॥

अर्थ–पूर्वदिशाकी पवन (पुरवाइ हवा)–मधुर, क्षार, मन्दाग्निकारक, भारी, औषधी और जलमें विरसता, गुरुता और उष्णता करनेवाली है ॥ २७ ॥

भग्नेऽपीष्टः क्षताद्येषु श्वयथुरोगकृत् ।
सन्निपातज्वरश्वासत्वग्दोषार्शोविपक्रमीन् ॥ २८ ॥

अर्थ–भग्न और क्षतादि रोगोंमें प्रशंसनीय, तथा नासास्राव, सूजन, सन्निपातज्वर, श्वास, त्वग्दोष, बवासीर, विपक्रमि॥२८॥

कोपयेदामवातञ्च घनसंघातकारकः ॥ २९ ॥

अर्थ–और आमवातादि रोगोंको बढानेवाली है, तथा मेघको सञ्चय करनेवाली है ॥ २९ ॥

दक्षिणमारुतगुणाः ।

दक्षिणो मारुतो बल्यश्चाक्षुष्यः शस्यघातकः ।
मधुरश्च विदाही च कषायान्नरसो लघुः ॥ ३० ॥

अर्थ–दक्षिणदिशाकी वायु–बलकारक, नेत्रोंको हितकारी, शस्य (खेती) नाशक, मधुर, दाहजनक, अन्नको कषैला करनेवाली, लघु (हलकी) ॥ ३० ॥

रक्तपित्तप्रशमनो नच मारुतकोपनः ।
गण्डूपदादिकीटानां जनकः प्राणकारकः ॥ ३१ ॥

अर्थ–रक्तपित्तविनाशक है,परन्तु वातको कुपित करनेवाली

नहीं है। गण्डूपदा (केंचुवा) इत्यादि कीडोंको उत्पन्न करनेवाली और प्राणियोंको प्राणदायक है॥ ३१॥

पश्चिमपवनगुणाः।

पश्चिमोऽग्निपूर्ववर्णबलारोग्यविवर्द्धनः।
कषायः शोषणः स्वर्य्यो रोचनो विषदो लघुः॥३२॥

अर्थ–पश्चिमदिशाकी वायु–अग्नि, शरीर, वर्ण, बल और आरोग्यतावर्द्धक है। कषैली, शोषक, स्वर शुद्ध करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, निर्मल, हलकी॥ ३२॥

अपां लघुत्ववैशद्यशैत्यवैमल्यकारकः।
सर्वद्रव्येष्वभिव्यक्तप्रभावरसवीर्य्यकृत्॥ ३३॥

अर्थ–तथा जलको लघुता, श्वेतवर्णता, शीतलता और स्वच्छता देनेवाली है। सब वस्तुओंमें प्रगटता, प्रभाव, रस, वीर्य्यको करनेवाली है॥ ३३॥

व्रणसंरोपणस्त्वच्यो दाहशोथतृषापहः॥ ३४॥

अर्थ–व्रणको भरनेवाली, त्वचाको उत्तम करनेवाली और दाह, सूजन, तृषाको हरनेवाली है॥ ३४॥

उत्तरवायुगुणाः।

औत्तरो मारुतः स्निग्धो मृदुर्मधुर एव च।
कषायान्नरसः शीतः सर्वदोषप्रकोपनः॥ ३५॥

अर्थ–उत्तरदिशाकी पवन–स्निग्ध, मृदु, मधुर, जल और अन्नको कषायरसान्वित करनेवाली है। शीतल, सब दोषोंको कुपित करनेवाली है॥ ३५॥

क्षीणक्षतविषार्तानां हितो दाहतृषापहः ॥ ३६ ॥

अर्थ–क्षीण, क्षत और विषग्रसित रोगियोंको हितकारी है, और दाह तृषाको दूर करनेवाली है ॥ ३६ ॥

नीहारादिसंयुक्तवायुगुणाः ।

शीताधिकः सनीहारः सविद्युत्स्तनयित्नुमान्॥३७॥

अर्थ–नीहार (बरफ)–विद्युत ,(बिजली) और मेघसंयुक्त पवन अत्यन्त शीतल है ॥ ३७ ॥

विश्वग्वायुगुणाः ।

विश्वग्वायुरनायुष्यः प्राणिनां नैकदोषकृत् ।
सर्वर्तुलिङ्गको हन्ता हृद्योत्पातः पुरःसरः ॥ ३८ ॥

अर्थ–घूमता हुवा पवन (ववूला)–प्राणियोंकी आयुका नाशक, त्रिदोषको कुपित करनेवाला, सब ऋतुओंका लक्षणकारी, जीवननाशक और हृदयमें उद्वेग करनेवाला है ॥ ३८ ॥

व्यजनानिलगुणाः ।

मूर्च्छास्वेदतृपादाहश्रमघ्नो व्यजनानिलः ॥ ३९ ॥

अर्थ–पंखेकी पवन–मूर्छा, पसीना,तृपा, दाह और श्रमको हरनेवाली है ॥ ३९ ॥

तालवृन्तपवनगुणाः ।

तालवृन्तभवो वातस्त्रिदोषशमनो लघुः ॥ ४० ॥

अर्थ–ताडके पंखेकी पवन–त्रिदोषनाशक और हलकी है ॥ ४० ॥

वंशव्यजनपवनगुणाः ।

वंशव्यजनजो वातो रूक्षोष्णवातपित्तदः ॥ ४१ ॥

अर्थ–वांसके पंखेकी पवन–रूखी, गरम और वातपित्तदायक है ॥ ४१ ॥

वालव्यजनवायुगुणाः ।

वालव्यजनमोजस्यं मक्षिकादीन् व्यपोहतिं ॥ ४२ ॥

अर्थ–चमर अथवा चमरीकी वायु–तेजको बढानेवाली और मक्खी इत्यादिको उडानेवाली है ॥ ४२ ॥

मयूरपक्षादिनिर्म्मितव्यजनवायुगुणाः ।

मायूरा वस्त्रजा वैत्रा वालदोषत्रयापहाः ॥ ४३ ॥

अर्थ–मोरकी पूछके, कपडेके और वेंतके पंखेका पवन त्रिदोषनाशक है ॥ ४३ ॥ इति वायुगुणाः समाप्ताः ॥

तैलगुणमाह ।

तैलं कषायमधुरं सूक्ष्ममुष्णं व्यवायि च ।
पित्तलं वर्द्धविण्मूत्रं नच श्लेष्मातिवर्द्धनम् ॥ ४४ ॥
वातघ्नमुत्तमं त्वच्यं मेधाग्निबलवर्द्धनम् ।
नास्ति तैलात्परं किञ्चिदौषधं मारुतापहम् ॥४५॥
तैलसंयोगसंस्कारात् सर्वरोगापहं स्मृतम् ॥ ४६ ॥

अर्थ–तेल–कषैला, मधुर, सूक्ष्म, गरम, व्यवायि (मैथुनजनक द्रव्य), पित्तकारक, मलमूत्रका बांधनेवाला, किञ्चित्कफवर्द्धक है । वातविनाशक, त्वचामें कान्ति झलकानेवाला, मेधा, अग्नि और बलको बढानेवाला, तेलकी समान वातनाशक और

दूसरी औषधि नहीं है । और द्रव्योंके संयोगसे पक्का तेल सब रोगोंको दूर करनेवाला है ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

तिलतैलगुणाः ।

तिलतैलं वयःस्थैर्य्यकरं वातघ्नमुत्तमम् ।
हितं वस्त्यभ्यङ्गपाने नस्ये कर्णाक्षिपूरणे ॥ ४७ ॥

अर्थ–तिलका तेल–अवस्थास्थापक, वातविनाशक, तथा वस्तिकर्म्ममें, मर्दन करनेमें, नास लेनेमें, कर्ण और आंखोंके लगानेमें परम हितकारी है ॥ ४७ ॥

सर्षपतैलगुणाः ।

कटूष्णं सार्षपं तैलं रक्तपित्तप्रदूषणम् ।
कफशुक्रानिलहरं कण्डूकृमिविनाशनम् ॥ ४८ ॥

अर्थ–सरसोंका तेल–चरपरा, गरम, रक्तपित्तके कोपको बढा-नेवाला, कफ, शुक्र, वात, खुजली और कीडोंका दूर करनेवाला है ॥ ४८ ॥

एरण्डतैलगुणाः ।

ऐरण्डतैलं मधुरं शुक्रश्लेष्माभिवर्द्धनम् ।
वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरं परम् ॥ ४९ ॥

अर्थ–अरण्डका तेल–मधुर, भारी, कफका बढानेवाला तथा वातरक्त, गुल्म, हृदयरोग और जीर्णज्वरनाशक है ॥४९॥

हृद्वस्तिपार्श्वजानूरुत्रिकपृष्टास्थिशूलिनाम् ।
आनाहाष्ठीलवातासृक्प्लीहोदावर्तशूलिनाम् ॥५०॥
हितं वातामयश्वासग्रंथिव्रणविकारिणाम् ॥ ५१ ॥

अर्थ–तथा हृदयरोग, बस्तिकर्म्म,पार्श्व,जानु,ऊरु, त्रिक, पीठ और हड्डियोंके शूलवाले रोगियोंको तथा आनाह, अष्ठीला, वातरक्त, प्लीहा, उदावर्त, शूल, वातरोग, श्वास, ग्रन्थि और ब्रध्नरोगवाले पुरुषोंको अत्यन्त हितकारी है ॥ ५० ॥ ५१ ॥

अतसीतैलगुणाः ।

स्वाद्वम्लमतसीतैलं वीर्योष्णं कटुपाकि च ॥ ५२ ॥

अर्थ–अलसीका तेल–स्वादिष्ठ, अम्ल, उष्णवीर्य्य और पचनेमें चरपरा है ॥ ५२ ॥

कुसुम्भतैलगुणाः ।

कुसुम्भतैलं कटुकं गुरूष्णञ्च त्रिदोषदम् ॥ ५३ ॥

अर्थ–कसुम्भ (कर्ड) का तेल–चरपरा, भारी, गरम और त्रिदोषजनक है ॥ ५३ ॥

करंजतैलगुणाः ।

करञ्जतैलं किट्टिमकुष्ठकण्डूनिवारणम् ।
तिक्तकृमिहरं तीक्ष्णं रक्तपित्तप्रदूषणम् ॥ ५४ ॥

अर्थ–करञ्जका तेल–कड़वा, कृमिनाशक, तीक्ष्ण, रक्तपित्तप्रकोपक, किट्टिम, कोढ और कण्डूका दूर करनेवाला है॥५४॥

निम्बतैलगुणाः ।

निम्बतैलन्तु कुष्ठघ्नं तिक्तं कृमिहरं परम् ॥ ५५ ॥

अर्थ–नीमका तेल–कोढका हरनेवाला, कीड़ोंका दूर करनेवाला और अत्यन्त कडुवा है ॥ ५५ ॥

अनुक्तफलोद्भवतैलगुणाः ।

फलोद्भवानि तैलानि यान्यनुक्तानि कानि च ।
गुणान् कर्म्म च विज्ञाय फलानि च विनिर्दिशेत्॥५६

अर्थ–फलसे निकला हुआ जिन फलोंके तैलोंका तेल इस ग्रन्थमें नहीं कहा गया है, उन फलोंके गुण और कर्म्मको समझकर उस तेलका गुण कहना चाहिये ॥ ५६ ॥

तिलतैलस्य प्रधानत्वमाह ।

सर्वेभ्यस्त्विह तैलेभ्यस्तिलतैलं प्रशस्यते ॥ ५७ ॥

अर्थ–सब स्थावर स्नेह द्रव्योंमें अर्थात् और तेलोंकी अपेक्षा तिलका तेल परमोत्तम है ॥ ५७ ॥

स्थावरस्नेहस्य तैलत्वमाह ।

निष्पत्तेस्तद्गुणत्वाच्च तैलत्वमितरेष्वपि ॥ ५८ ॥

अर्थ–तिलका चूरा कर उसको यंत्र (कोल्हू) इत्यादिमें छेतकर तेल निकला जाता है। सरसों आदिका स्नेहभी इसीप्रकारसे निकाला जाता है और वैसाही गुणवाला है। इससे सरसोंके स्नेहादिकोभी तेलही कहते हैं ॥ ५८ ॥

अभ्यङ्गगुणाः ।

अभ्यङ्गो मार्दनकरः कफवातविनाशनः ।
धातूनां पुष्टिजननो बलवर्णप्रसादनः ॥ ५९ ॥

अर्थ–शरीरमें तेल मलनेसे अत्यन्त कोमलता आती है, कफ और वातका नाश होता है, धातुकी वृद्धि होती है, बल बढता है और रंग दमकने लगता है ॥ ५९ ॥

पादाभ्यंगगुणाः ।

पादाभ्यङ्गोऽथ निद्राकृच्चक्षुष्यः पादरोगहा ।
चक्षुषि प्रतिरन्ध्रं द्वे शिरे पादगते नृणाम् ॥ ६० ॥
अतश्चक्षुःप्रासादार्थी पादाभ्यङ्गं समाचरेत् ॥ ६१ ॥

अर्थ—पाओंसे तेलका मलना—निद्राकारक, नेत्रोंको हितकारी, पाओंके रोगोंको दूर करनेवाला, आखोंके छेदोंमें जो दो शिरा (नसें) हैं वह पाओंमें जाकर मिली हैं, इसलिये पाओंमें तेल मलनेसे नेत्रोंका हित होता है । इसकारण आंखोंमें सुख चाहनेवाले पुरुषोंको पाओंसे तेल मलना चाहिये ॥६०॥६१॥

स्नेहोऽवगाहने युक्तः शरीरे बलमाहरेत् ॥ ६२ ॥

अर्थ—तेल मलकर जलमें स्नान करनेसे शरीरमें अधिक बल बढता है ॥ ६२ ॥

शिरसि तैलमर्द्दनगुणाः ।

नित्यं स्नेहार्द्रशिरसः शिरःशूलो न जायते ।
न खालित्यं न पालित्यं न केशाः प्रपतंति च ॥६३ ॥
दृढमूलाश्च कृष्णाश्च भवन्ति च घनायताः ।
इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुदृग् भवति लोचनम् ॥६४ ॥

अर्थ—जो पुरुष प्रतिदिन शिरसे तेल मलते हैं, उनके शिरमें शूल कभी नहीं होता, तथा केशोंकी अल्पता और प्रपकता नहीं होती, और केश पतितभी नहीं होते, तथा उनके केश दृढमूलयुक्त, कृष्णवर्ण और सघन होते हैं, और सदा इन्द्रियोंमें प्रसन्नता तथा नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होती है ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

कर्णतैलपूरणगुणाः ।

कर्णप्रपूरणं नित्यं न मन्या न हनुग्रहाः ।
नोच्चैःश्रुतिर्न बाधिर्य्यं न कर्णे वातजा रुजः ॥६५॥

अर्थ–जो मनुष्य प्रतिदिन कानमें तेल डालते हैं उनको मन्यास्तंभ, हनुग्रह, कमरका दर्द, बधिरता और कानकी वातजन्य पीडा इत्यादि रोग उत्पन्न नहीं होते ॥ ६५ ॥

तैलद्रोणीअवस्थितिगुणाः ।

तैलद्रोणी प्रशस्ता विविधिगदमये वातरोगार्दितेषु ।
व्याकुल्ये पङ्गुभूते सविषमबधिरे भिन्मिने गद्गदे च॥६६॥

अर्थ–द्रोणी (काठका बर्तन) का पक्का तेल अनेक प्रकारके रोग तथा वात अर्दित, शरीरकी व्याकुलता, पंगु, विषम, बधिर, मिन्मिनाहट, गदगद ॥ ६६ ॥

धन्वङ्के स्तब्धपृष्ठे प्रचलितपवने गात्रकस्येकपाट्यां ।
ग्रीवाभङ्गेऽपतंत्रे क्षयरुधिरभवे मूत्रकृच्छ्रे च बस्तौ ॥६७

अर्थ–धनुस्तम्भ, स्तब्धपृष्ठ, प्रचलितपवन, गात्रकम्प, कपाटी, ग्रीवाभङ्ग, अपतंत्रक, रक्तक्षय, मूत्रकृच्छ्रादि रोगमें और बस्तिक्रियाके विषय अत्यन्त प्रशंसाके योग्य है ॥६७॥

उद्वर्तनगुणाः ।

उद्वर्तनं वातहरं कफमेदोनिलापहम् ।
स्थिरीकरणमङ्गानां त्वक्प्रसादकरं परम् ॥ ६८ ॥

अर्थ–उद्वर्तन (उबटन) वातरोग, कफ, मेद और वातविनाशक है, शरीरको स्थिरता देनेवाला और चर्म्मका निर्मल करनेवाला है ॥ ६८ ॥

उद्वर्तनं हरिद्राद्यैः कण्डूवैवर्ण्यरौक्ष्यजित् ।
तिलेनोद्वर्त्तनं कण्डूरौक्ष्यत्वग्दोषनाशनम् ॥ ६९ ॥

अर्थ–हलदी इत्यादिका उवटन–कण्डू, विवर्णता और शरीरके रूखापनको दूर करे है। तिलोंका उवटन खुजली, रुक्षता और चर्म्मदोषविनाशक है ॥ ६९ ॥ इति उद्वर्तनगुणाः ॥

जलगुणमाह ।

ईषत्कषायमधुरं पानीयं क्लेदि शीतलम् ।
तृष्णाघ्नमव्यक्तरसं शरीरेन्द्रियतर्प्पणम् ॥ ७० ॥

अर्थ–सामान्य जल–किञ्चित्कषैला, मधुर, क्लेदकारक, शीतल, अव्यक्त रसवाला जल. तृष्णानाशक, शरीर और इन्द्रियोंको तृप्ति देनेवाला है ॥ ७० ॥

सुगन्धमस्पष्टरसं सुशीतं तर्पनाशनम् ।
स्वच्छं लघु च हृद्यं च तोयं गुणवदुच्यते ॥ ७१ ॥

अर्थ–सुगन्ध और अव्यक्त रसयुक्त जल शीतल और तृष्णानाशक है। निर्मल जल हलका, हृदयको हितकारी और दूधकी समान गुणवाला है ॥ ७१ ॥

पिच्छिलं कृमिलं क्लिन्नं पर्णशैवालकर्दमैः ।
वैवर्णं विरसं सान्द्रं दुर्गन्धि न हितं जलम् ॥ ७२ ॥

अर्थ–पत्ते, शिवार, कर्दमादिद्वारा पिच्छिल और क्लिन्न, गदला तथा कीटादियुक्त जल, और विवरण, विरस, घन और दुर्गन्धवाला जल अहितकारक है ॥ ७२ ॥

साधारणमेघजलगुणाः ।

गगनाम्बु त्रिदोषघ्नं गृहीतं यत्सुभाजने ।
बल्यं रसायनं मेध्यं पात्रापेक्षि च तत्परम् ॥ ७३ ॥

अर्थ—मेघका जल उत्तमपात्रमें ग्रहण किया हुवा—त्रिदोषनाशक, बलकारक, रसायन, मेधाजनक और वह जैसे पात्रमें रक्खा होगा वैसाही उसका गुण होगा ॥ ७३ ॥

सूर्यचन्द्रकिरणसंयुक्तजलगुणाः ।

दिवार्ककिरणैर्जुष्टं स्पृष्टमिन्दुकरैर्निशि ।
अरूक्षमनभिष्यन्दि तत्तुल्यं गगनाम्बुना ॥ ७४ ॥

अर्थ—जिस जलपर रातमें चन्द्रमाकी किरण और दिनमें सूर्य्यकी किरण पडती हों; ऐसा जल रूक्षताहीन और अक्लेदी है। उसमें आकाशके जलकी समान गुण हैं ॥ ७४ ॥

अनार्तवमेघजलगुणाः ।

अनार्तवं प्रयुंजति वारि वारिधरास्तु यत् ।
तत्रिदोषाय सर्वेषां देहिनां परिपिक्तिनाम् ॥ ७५ ॥

अर्थ—वर्षाऋतुको छोडकर जो और ऋतुओंमें जल वर्षता है, वह जल सब प्राणियोंके ऊपर पडनेसे त्रिदोषको उत्पन्न करता है ॥ ७५ ॥

वर्षाकालीयमेघजलपाननिषिद्धता ।

वर्षासु चरन्ति घनैर्महोरगा वियति कीटलूताश्च ।
तद्विषपुष्टमपेयं स्वजलमगस्त्योदयात्पूर्वम् ॥ ७६ ॥

अर्थ—वर्षाऋतुमें सांप, कीडे, मकडी इत्यादि विषधारी

जन्तु मेघके साथ आकाशमार्गमें भ्रमण करते हैं, और उन जन्तुओंका विष मेघके जलके साथ पृथ्वीमें पतित होता है. इस कारण अगस्त्योदयसे पहिले आकाशका पानी पीना नहीं चाहिये ॥ ७६ ॥

मेघजलपानकालनिर्णयः ।

शुक्लागस्त्यत्रयोदश्यां भाद्रस्यान्ते शरद्यपि ।
अर्घ्यं दत्त्वा त्वगस्त्याय गृह्णीयाद्गगनोदकम् ॥७७॥
हेमन्ते वापि गृह्णीयात् खजलं मृन्मये घटे ।
हेमन्ते तत्प्रयोक्तव्यं नहि शङ्केदनार्तवम् ॥ ७८ ॥
कालेन पक्कं निर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम् ।
हंसोदकमिति ख्यातं शारदं विमलं जलम् ॥ ७९ ॥

अर्थ–भादों मासके व्यतीत होनेपर शरदऋतुकी शुक्ल अगस्त्यत्रयोदशीके दिन अगस्त्यको अर्घ देकर गगनोदक (आकाशका जल) ग्रहण करे। अथवा हेमन्तऋतुमें मेघका जल मट्टीके घडेमें लेकर अनार्तवकी शंकाको त्यागकर काममें लावे। उपर्युक्त कालमें पका हुवा तथा अगस्त्योदयकरके विषरहित किया हुवा शरदऋतुका निर्मल जल हंसोदकनामसे विख्यात है ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

अनूपदेशजातजलगुणाः ।

अनूपदेशे यद्वारि तत्सान्द्रगुरु पिच्छिलम् ।
मधुरं श्लेष्मजननं स्निग्धपावकनाशनम् ॥ ८० ॥
प्रमेहश्लीपदच्छर्दिगलगण्डादिरोगकृत् ॥ ८१ ॥

अर्थ—अनूपदेश (जलाशयके निकटके स्थान) का जल—घन और भारी, पिच्छिल, मधुर, कफकारक, अग्निनाशक तथा प्रमेह, श्लीपद, वमन और गलगण्डादि रोगोंका उत्पन्न करनेवाला है ॥ ८० ॥ ८१ ॥

जाङ्गलजलगुणाः ।

जाङ्गलं त्वन्यथानूपात् पानीयं परिकीर्तितम्॥८२॥

अर्थ—जाङ्गलदेशका जल—अनूपदेशके जलसे विपरीत गुणवाला है ॥ ८२ ॥

सर्वऋतुसम्बन्धीयआकाशजलगुणाः ।

वारि साधारणं वृष्यं दीपनं मधुरं लघु ॥ ८३ ॥

अर्थ—सब ऋतुओंमें मेघका पानी वीर्य्यवर्द्धक, जठराग्निप्रदीपक, मधुर और हलका है ॥ ८३ ॥

वार्षिकजलगुणमाह ।

गुर्वभिष्यन्दि पानीयं वार्षिकं मधुरं सरम् ॥ ८४ ॥

अर्थ—वर्षाऋतुका पानी—भारी, क्लेदजनक, मधुर और कुछ कुछ दस्तावर है ॥ ८४ ॥

शारदीयजलगुणमाह ।

शारदं चानभिष्यन्दि लघु तत्परिकीर्तितम् ॥८५॥

अर्थ—शरदऋतुका पानी अनभिष्यन्दि (क्लेदरहित) और हलका है ॥ ८५ ॥

हैमन्तिकजलगुणमाह ।

हैमन्तिकं जलं स्निग्धं वृष्यं वल्यं हितं गुरु॥ ८६ ॥

अर्थ—हेमन्तऋतुका पानी—स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, हितकारी और भारी है ॥ ८६ ॥

शैशिरजलगुणमाह ।

शैशिरं कफवातघ्नं किञ्चिद्धैमन्तिकाल्लघु ॥ ८७ ॥

अर्थ—शिशिरऋतुका जल—कफ-वात-नाशक और हेमंतऋतुके जलसे किञ्चित् हलका है ॥ ८७ ॥

वासन्तिकजलगुणमाह ।

कषायं मधुरं रूक्षं विद्याद्वासन्तिकं जलम् ॥ ८८ ॥

अर्थ—वसन्तऋतुका जल—कषैला,मधुर और रूखा है॥८८॥

ग्रैष्मिकजलगुणमाह ।

ग्रैष्मिकञ्चानभिष्यन्दि जलमित्येव निश्चयः ॥ ८९ ॥

अर्थ—ग्रीष्मऋतुका जल—अनभिष्यंदी है ॥ ८९ ॥

तडागजलगुणमाह ।

ताडागं वातलं स्वादु कषायं कटुपाकि च ॥ ९० ॥

अर्थ—तडागका जल—वातवर्द्धक, स्वादिष्ठ, कषैला और पचनेमें कटु है ॥ ९० ॥

वापीजलगुणमाह ।

वाप्यं गुरु कटु क्षारं पित्तलं कफवातजित ॥९१॥

अर्थ—बावडीका जल—भारी, कटु, खारी, पित्तकारक तथा कफ और वातनाशक है ॥ ९१ ॥

कूपजलगुणमाह ।

कौपं वातकफौ हन्ति दीपनं लघु पित्तलम् ॥ ९२ ॥

अर्थ–कुवेका जल–वात और कफनाशक है। दीपन, हलका और पित्तकारक है ॥ ९२ ॥

कुण्डजलगुणमाह ।

कौण्डयमग्निकरं रूक्षं मधुरं कफकृद्गुरु ॥ ९३ ॥

अर्थ–कुण्डका जल–अग्निकारक, रूखा, मधुर, कफकारी और भारी है ॥ ९३ ॥

निर्झरजलगुणमाह ।

नैर्झरं लघु पथ्यञ्च दीपनं कफनाशनम् ॥ ९४ ॥

अर्थ–झरनेका जल–हलका, पथ्य, दीपन और कफनाशक है ॥ ९४ ॥

सरोवरजलगुणमाह ।

सारसं लघु तृष्णाघ्नं बल्यं स्वादु कषायवत् ॥ ९५ ॥

अर्थ–सरोवरका जल–हलका, तृषाहारक, बलकारक, स्वादिष्ठ और कषैला है ॥ ९५ ॥

केदारजलगुणमाह ।

कैदारं मधुरं प्रोक्तं विपाके कटु दोषणम् ॥ ९६ ॥

अर्थ–केदारजल-मधुर, गुरुपाकी और दोषजनक है ॥ ९६ ॥

पल्वलजलगुणमाह ।

पल्वलं गुर्वभिष्यन्दि विष्टम्भि दोषणं परम् ॥ ९७ ॥

अर्थ–पल्वल अर्थात् तलैयाका जल–अभिष्यन्दि, विष्टम्भकारक और दोषजनक है ॥ ९७ ॥

समुद्रजलगुणमाह ।

सामुद्रमुदकं क्षारं सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ ९८ ॥

अर्थ–समुद्रका जल–क्षार और सर्वदोषोंको कुपित करनेवाला है ॥ ९८ ॥

नदीजलगुणमाह ।

नादेयं वातलं रूक्षं सान्द्रं गुरु कफापहम् ॥ ९९ ॥

अर्थ–नदीका जल–वादी, रूखा, घन, भारी और कफहारी है ॥ ९९ ॥

शीघ्रवहानदीजलगुणमाह ।

नद्यः शीघ्रवहाः प्रायो लघ्व्यो याश्चामलोदकाः ॥१००॥

अर्थ–शीघ्र वहनेवाली नदीयोंका जल–प्राय हलका और निर्मल होता है ॥ १०० ॥

मृदुवहा-पूर्वसमुद्रगानदीजलगुणमाह ।

प्रायो मृदुवहा गुर्व्यो याश्चपूर्वसमुद्रगाः ॥ १०१ ॥

अर्थ–मन्द वहनेवाली तथा पूर्व समुद्रमें जानेवाली नदीयोंका जल भारी है ॥ १०१ ॥

पाषाणवालुकायुक्तनदीजलगुणमाह ।

नद्यः पाषाणसिकतावाहिन्यो विमलोदकाः ॥१०२॥

अर्थ–पाषाण और वालुकायुक्त नदीका जल–अत्यन्त निर्मल होता है ॥ १०२ ॥

गंगादिनदीजलगुणाः ।

हिमवत्प्रभवा याश्च जलं तास्वमृतोपमम् ॥ १०३ ॥

अर्थ–हिमालयपर्वतसे प्रगट होनेवाली गंगादि नदीयोंका जल अमृतकी समान है ॥ १०३ ॥

पारिभद्रादिपर्वतजानदीजलगुणाः ।

पारिभद्रभवा याश्च विन्ध्यसिन्धुभवाश्च याः ।
शिरोहृद्रोगकुष्ठानां ता हेतुः श्लीपदस्य च ॥१०४॥

अर्थ-पारिभद्र, विन्ध्याचल तथा सिन्धुपर्वतसे निकली हुई नदीयोंका जल-शिरोरोग, हृदयरोग, कोढ और श्लीपदरोगोंका कारण है ॥ १०४ ॥

चन्द्रकिरणादियुक्त-पर्वतवारिगुणाः ।

चन्द्रार्ककरसंसृष्टं वायुना स्फालितं मुहुः ।
पर्वतोपरि यद्वारि समं पौरन्दरेण तत् ॥ १०५ ॥

अर्थ-जिसपे चन्द्रमा और सूर्यकी किरणें पडती हों और जो पवनकरके हलाया गया ऐसा पर्वतका जल-मेघके जलकी समान गुणवाला है ॥ १०५ ॥

चन्द्रकान्तमणिसंसृष्टजलगुणमाह ।

चन्द्रकान्तोद्भवं रूक्षं शीतं दाहविनाशनम् ॥१०६॥

अर्थ-चन्द्रकान्तमणिसे उत्पन्न हुवा जल-शीतल और दाहको दूर करनेवाला है ॥ १०६ ॥

औद्भिदजलगुणमाह ।

औद्भिदं मधुरं पित्तशमनं न विदाहि च ॥ १०७ ॥

अर्थ-औद्भिदजल (वृक्षगुल्मादिके स्थानका)-मधुर, पित्तको शान्ति करनेवाला और अविदाही है ॥ १०७ ॥

तालफलोद्भवजलगुणमाह ।

तालाम्बु पित्तजित् शुक्रस्तन्यवृद्धिकरं गुरु॥१०८॥

अर्थ–ताडके फलका जल–पित्तनाशक शुक्र और स्तनोंमें दूध बढानेवाला है ॥ १०८ ॥

नारिकेलजलगुणमाह ।

नारिकेलाम्बु तरुणं तृष्णाघ्नं पित्तनाशनम्।
बालस्य नारिकेलस्य जलं प्रायो विरेचनम् ॥१०९॥
शीतं वमथुमूर्छाघ्नं पित्तज्वरविनाशनम्।
नारिकेलोदकं जीर्णं विष्टम्भि गुरु शीतलम्॥११०॥

अर्थ–तरुणनारियलका जल–तृष्णा और पित्तको दूर करनेवाला है। बालनारियलका जल–दस्तावर, शीतल तथा वमन, मूर्छा और पित्तज्वर निवारक है। वृद्धनारियलका जल–विष्टम्भजनक, भारी और शीतल है ॥ १०९ ॥ ११० ॥

शीतलजलगुणमाह।

शीताम्बु मदमूर्छाघ्नं छर्दिपित्तज्वरापहम्।
श्रमक्लमतृषादाहमदात्ययविषापहम् ॥ १११ ॥

अर्थ–शीतलजल–मद, मूर्छा, वमन, पित्तज्वर, श्रम, क्लम, तृषा, दाह, मद्यपानजनक रोग और विषविनाशक है ॥१११॥

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।
आयुराहारकाले च भुक्त्वा नोपरि नो निशि॥११२॥

अर्थ–अजीर्णमें जल औषधीके समान गुण करनेवाला है। जीर्णमें जलका पीना बलको बढाता है। आहारके समय जलका पीना आयुको बढाता है, परन्तु आहारके उपरान्त तथा रात्रिमें जल पीना नहीं चाहिये ॥ ११२ ॥

धारापातजलगुणमाह ।

धारापातेन विष्टम्भि दुर्जरं पवनाहतम् ॥ ११३ ॥

अर्थ–धारापातका जल–विष्टम्भी और पवनसे ताडितसे जल दुर्जर अर्थात् देरमें पचता है ॥ ११३ ॥

शृतशीतजलगुणमाह ।

शृतशीतं त्रिदोषघ्नं यदन्तर्वाप्पशीतलम् ॥ ११४ ॥

अर्थ–औटाकर ठंडा किया जल–त्रिदोषका नाश करे है, जो अन्तर्बाप्पसे शीतल किया गया है ॥ ११४ ॥

उष्णोदकसाधारणगुणमाह ।

उष्णोदकं सदा पथ्यं कासश्वासविबन्धनुत् ।
कफवातामदोषघ्नं दीपनं बस्तिशोधनम् ॥ ११५ ॥

अर्थ–उष्णजल–निरन्तर पथ्य है । तथा खाँसी, श्वास, विबन्ध, कफ, वात और आमदोषनाशक है । जठराग्निको दीपन करनेवाला और बस्तिशोधक है ॥ ११५ ॥

उष्णजललक्षणं विशेषगुणश्चाह ।

क्वाथमानन्तु यत्तोयं निष्फेनं निर्मलीकृतम् ।
भवत्यर्द्धावशिष्टन्तु तदुष्णोदकमुच्यते ॥ ११६ ॥

अर्थ–क्वाथमान (काढेकी समान औटाया हुवा) जल–औटाते २ निर्मल,झागरहित और आधा रहे जाय उसको उष्ण जल कहते हैं ॥ ११६ ॥

तत्पादहीनं वातघ्नं अर्द्धहीनन्तु पित्तजित् ।
कफघ्नं पादशेषन्तु पानीयं लघु दीपनम् ॥ ११७॥

अर्थ–इस जलका जब चतुर्थांश जल जाय तो यह जल वातनाशक होता है। और जब इसका अर्द्धभाग जल शेष रह जाय तब यह जल पित्तनाशक होता है,और जो चतुर्थांश शेष रह जाय तो कफनाशक होता है। यह जल हलका और अग्निदीपक है॥

ऋतुभेदे उष्णजलभेदाः।

हेमन्ते शिशिरे पादहीनं पादस्थितं मधौ।
स्यात्पानीयं शरत्काले ग्रीष्मे चार्द्धावशेषितम् ॥११८॥
इच्छन्ति बहुदोषत्वात् प्रावृष्यष्टावशेषितम्॥११९॥

अर्थ–हेमन्तऋतुमें तथा शीतऋतुमें चतुर्थांश रहित, वसन्तऋतुमें चतुर्थांश शेष, शरद और ग्रीष्मऋतुमें अर्द्ध शेष रखकर व्यवहार करे। परन्तु वर्षाऋतुमें जल अनेक दोषयुक्त होता है इसकारण वर्षाऋतुमें अष्टमांश शेष रखकर व्यवहार करना चाहिये ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

पर्य्युषितजलगुणमाह।

दिवा शृतञ्च यत्तोयं रात्रौ तत् गुरुतां व्रजेत्।
रात्रौ शृतं दिवा चापि गुरुत्वमधिगच्छति॥ १२० ॥

अर्थ–जो जल दिनमें उष्ण कर रख दिया जावे उस जलमें रात्रिको भारीपन आ जाता है, और जो रात्रिको उष्ण करके रख दिया जावे उस जलमें दिनमें भारीपन आ जाता है॥१२०

सुवासितजलगुणमाह।

सुवासितं जलं पुष्पैः पूतं शुक्लेन वाससा।
नवमृद्भाजने न्यस्तं माङ्गल्यं रुचिकृत्परम्॥१२१॥

अर्थ-पुष्पोंकरके सुवासित किया हुवा, श्वेत वस्त्रकरके छाना हुवा ऐसा जल नवीन मृत्तिकाके पात्रमें रक्खा हुवा मङ्गलकारक और रुचिदायक होता है ॥ १२१ ॥

जलस्य प्राधान्यमाह।

पानीयं प्राणिनां प्राणास्तदायत्तं हि जीवनम्।
तस्मात्सर्वास्ववस्थासु कैश्चिद्वारि न वार्य्यते॥१२२॥

अर्थ-पानी प्राणियोंको प्राणरूप है इसकारण जीवन जलके आधीन है। अतएव प्राणियोंको जल किसी अवस्थामें त्याग नहीं करना चाहिये ॥ १२२ ॥

अन्नेनापि विना जन्तुः प्राणान् धारयते चिरम्।
तोयाभावे पिपासार्त्तः क्षणात्प्राणैर्विमुच्यते॥१२३॥

अर्थ-अन्नके विना जीव बहुत कालपर्य्यन्त जीते रहते हैं, किन्तु जलके विना क्षणमात्रमें मर जाते हैं ॥ १२३ ॥

तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान् विमुंचति।
तस्मात्प्राणस्य रक्षार्थं वारि देयं पिपासवे॥ १२४ ॥

अर्थ-तृषासे व्याकुल मनुष्योंके मोह उत्पन्न होता है, और मोहसे प्राण नष्ट हो जाते हैं। इसकारण प्राणोंकी रक्षाके लिये पियासे मनुष्यको जल देना चाहिये ॥ १२४ ॥

शरदि वसन्ते च जलपानविधिः।

पानीयं पानीयं शरदि वसन्ते च पानीयम्।
नादेयं नादेयं शरदि वसन्ते च नादेयम्॥ १२५ ॥

अर्थ-शरत् और वसन्तऋतुमें जल पीना चाहिये । परन्तु

नदीका जल शरत् और वसन्त ऋतुमें पीना नहीं चाहिये १२५

स्नानगुणमाह ।

स्नानं पवित्रमायुष्यं श्रमस्वेदमलापहम् ।
शरीरबलसन्धानं केशमोजस्करं परम् ॥ १२६ ॥

अर्थ—स्नान शरीरको पवित्र करे तथा आयुवर्द्धक है, और श्रम, पसीना तथा मैलको दूर करे है, बलवर्द्धक है, केश और ओजकारक है ॥ १२६ ॥

उष्णाम्बुस्नानगुणमाह ।

उष्णाम्बुनाधःकायस्य परिषेकः सुखावहः ।
तेनैव तूत्तमाङ्गस्य बलघ्नं केशचक्षुषोः ॥ १२७ ॥
विनिहन्ति शिरःस्नानं तृष्णाताल्वास्यशोषणम् ।
मलोष्णपिडिकाकण्डूशिरोरोगांश्च पित्तजान् ॥१२८

अर्थ—जलके द्वारा आधे शरीरपे स्नान करनेसे सुखकी वृद्धि होती है और उसी जलके द्वारा शिरसे स्नान करनेसे केश और आँखोंका बल कम होता है। तथा तृषा,तालुशोष, मुखशोष, मल, उष्णता, पिडिका, कण्डू, शिरोरोग और पित्तरोग नाश होते हैं ॥ १२७ ॥ १२८ ॥

द्रव्यविशेषस्नानगुणमाह ।

मधुकामलकैः स्नानं पित्तघ्नं तिमिरापहम् ।
स्नानं वचाघनारिष्टं श्लेष्मघ्नं तिमिरापहम् ।
स्नानं कृष्णतिलैश्चापि चक्षुष्यमनिलापहम् ॥१२९॥

अर्थ—मुलहटी और आमला मलकर स्नान करनेसे पित्त और तिमिररोग नाश होता है। वच और मोथा मलकर स्नान

करनेसे कफ और तिमिररोग नाश होता है । कले तिलोंको मलकर. स्नान करनेसे नेत्रोंकी जोत बढती है, तथा वातका नाश होता है ॥ १२९ ॥

स्नानस्य विशेषगुणमाह ।

अस्नातस्य शरीरस्य ऊष्मा सर्वाङ्गगोचरः ।
स्नानेनैकत्वमायाति तेन दीप्यति पावकः ॥ १३०॥

अर्थ–विना स्नान किये शरीरमें जो गरमी सर्वांगमें स्थित हो जाती है, स्नानसे वह एक स्थानमें आ जाती है, उससे अग्नि प्रदीप्त होती है ॥ १३० ॥

स्नानस्य निषिद्धता ।

स्नानमर्दितनेत्रास्यकर्णरोगातिसारिषु ।
आध्मानपीनसाजीर्णभुक्तवत्सु च गर्हितम् ॥१३१ ॥

अर्थ–अर्दितरोगमें, नेत्ररोगमें, मुखरोगमें, कर्णरोगमें, अतिसारमें, आध्मानरोगमें, पीनसरोगमें और अजीर्णादि रोगोंमें तथा भोजनके अन्तमें स्नान नहीं करना चाहिये ॥ १३१ ॥

शरीरमार्जनगुणाः ।

दौर्गन्ध्यं गौरवं कण्डूं कच्छूमलमरोचकम् ।
स्वेदबीभत्सतां हन्ति शरीरपरिमार्जनम् ॥ १३२ ॥

अर्थ–शरीरका मार्जन–दुर्गन्ध, भारीपन, कण्डू, कच्छू, मल, अरुचि, पसीना और घृणानाशक है ॥१३२॥ इति स्नानगुणाः॥

वस्त्रादिधारणगुणमाह ।

निर्मलवस्त्रधारणगुणाः ।

काम्यं यशस्यमायुष्यमलक्ष्मीघ्नं प्रहर्षणम् ।

श्रीमत्पारिषदं शस्तं निर्मलाम्बरधारणम् ॥ १३३॥

अर्थ—शोभायमान परमेश्वरके चरणोंमें अर्पण किया निर्मल वस्त्र उसको धारण करनेसे—काम, आयुकी वृद्धि होती है तथा अलक्ष्मीका नाश और हर्षकी वृद्धि होती है ॥ १३३ ॥

रत्नाभरणधारणगुणाः ।

धन्यं मङ्गलमायुष्यं श्रीमद्व्यसनसूदनम् ।
हर्षणं काम्यमौजस्यं रत्नाभरणधारणम् ॥ १३४ ॥

अर्थ—रत्नाभरणका धारण—धन,मंगल, आयु, और लक्ष्मीवर्द्धक है,व्यसननिवारक और हर्ष,काम तथा ओजवर्द्धक है १३४

सूर्यादेरर्चनगुणाः ।

स्वर्ग्यं यशस्यमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
धन्यं धान्यकरं नित्यं गुरुदेवद्विजार्चनम् ॥ १३५ ॥

अर्थ—गुरु और देवादिका पूजना—स्वर्ग, यश और आयुदायक है।अलक्ष्मीनाशक तथा धन और धान्यवर्द्धक है॥ १३५॥

दर्पणगुणाः ।

दर्पणं श्रीमदायुष्यं पापोपशमनं परम् ॥ १३६ ॥

अर्थ—दर्पणमें मुख देखनेसे—लक्ष्मी और आयुकी वृद्धि होती है,तथा पापका नाश होता है॥ १३६॥इति वस्त्रादिधारणगुणाः ॥

अनुलेपनगुणमाह ।

अनुलेपनसामान्यगुणाः ।

प्रीत्योजोवर्द्धनं वृष्यं स्वेददौर्गन्ध्यनाशनम् ।
तन्द्रातापोपशमनं श्रमघ्नमनुलेपनम् ॥ १३७ ॥

अर्थ-अनुलेपन-हर्ष, ओज और वीर्यवर्द्धक है। तथा पसीना, दुर्गन्ध, तन्द्रा, ताप और श्रमनाशक है ॥ १३७ ॥

चन्दनगुणाः ।

चन्दनं शीतलं तिक्तं तृष्णादाहास्रपित्तजित् ॥१३८॥

अर्थ-चंदन-शीतल, कडवा, चरपरा तथा तृषा, दाह और रक्तपित्तनाशक है ॥ १३८ ॥

अगुरुगुणाः ।

अगुरु व्रणजित्तिक्तं कटूष्णं कफवातजित् ॥ १३९ ॥

अर्थ-अगर-व्रणविनाशक, चरपरी, गरम तथा कफ-वात-नाशक है ॥ १३९ ॥

कुंकुमगुणाः ।

कुङ्कुमं भेदि वैवर्ण्यं कण्डूवातकफापहम् ॥ १४० ॥

अर्थ-केशर-भेदक, तथा विवर्णता, खुजली, और वात-कफ-नाशक है ॥ १४० ॥

कस्तूरीगुणाः ।

कस्तूरी छर्दिदौर्गन्ध्यरक्तपित्तज्वरापहा ॥ १४१ ॥

अर्थ-कस्तूरी-वमन, दुर्गन्ध, रक्तपित्त और ज्वरको हरनेवाली है ॥ १४१॥

लताकस्तूरीगुणाः ।

लताकस्तूरिका हृद्या शीता तिक्तास्यरोगनुत्॥१४२॥

अर्थ-लताकस्तूरी-हृदयको हितकारी,शीतल, कडवी और मुखरोगनाशक है ॥ १४२ ॥

तेजपत्रगुणाः।

पत्रकं कफवातार्शोहृल्लासारोचकापहम् ॥ १४३ ॥

अर्थ–तेजपात–कफ, वायु,बवासीर बवकाई और अरुचि-को दूर करे है ॥ १४३ ॥

कक्कोलगुणाः।

कक्कोलः कटुको हृद्यः सुगन्धिकफवातजित्॥१४४॥

अर्थ–शीतलचीनी–चरपरी, हृदयको हितकारी, सुगन्ध और कफवातनाशक है ॥ १४४ ॥

शटीगुणाः।

शटी वातकफश्वासकासज्वरविनाशिनी ॥ १४५ ॥

अर्थ–आमिया हलदी–वात, कफ, श्वास, खाँसी और ज्व-रनाशक है ॥ १४५ ॥

उशीरगुणाः।

उशीरं स्वेददौर्गन्ध्यदाहपित्तास्ररोगजित् ॥ १४६ ॥

अर्थ– खस–पसीना, दुर्गन्ध, दाह और रक्तपित्तका नाश करे है ॥ १४६ ॥

रक्तचन्दनगुणाः।

रक्तपित्तहरं बल्यं चाक्षुष्यं रक्तचन्दनम् ॥ १४७ ॥

अर्थ–लालचंदन–रक्तपित्तनाशक, बलकारक और नेत्रों-को हितकारी है ॥ १४७ ॥

श्रीवासादिगुणाः।

श्रीवासः सरलं पूतिः कुन्दुरुग्रन्थिपर्णकम् ।
सिह्लकः परमामांसी देवदारुमुरानखम् ॥ १४८ ॥

सर्वेमी परमालक्ष्मीरक्षोघ्ना ज्वरनाशनाः ॥ १४९ ॥

अर्थ–श्रीवास (सरलका गोंद), धूपसरल, पूति (गन्धमार्जारवीर्य्य), कुन्दुरु, गठिवन, शिलारस, वालछड, देवदारु, एकांगी और नखी-अलक्ष्मी, राक्षसबाधा और ज्वरनाशक है ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ ॥ इति अनुलेपनादिगुणाः ॥

छत्रादिपञ्चकं पूर्वं ततो व्यायाममारुतौ ।
तैलमुद्वर्त्तनं तोयं स्नानं वस्त्रादिधारणम् ॥ १५० ॥
अनुलेपनमित्येतैर्नातिसंक्षेपविस्तरः ।
पौर्वाह्निकः परिच्छेदः समाप्तो राजवल्लभे ॥ १५१॥

अर्थ–छत्रादिपंचक,व्यायाम (कसरत),वायु, तेल, उद्वर्त्तन, जल, स्नान तथा अनुलेपनादिद्वारा राजवल्लभ ग्रन्थमें न अतिसंक्षेपसे और न अति विस्तारसे पौर्वाह्निक परिच्छेद समाप्त हुआ ॥ १५० ॥ १५१ ॥

इति श्रीराजवल्लभनिघण्टे द्रव्यगुणचन्द्रिकाटीकायां आयुर्वेदोद्धारक शालिग्रामवैश्यकृत-पौर्वाह्णिककर्मगुणद्वितीयपरिच्छेदः समाप्तः ॥ २ ॥

॥ तृतीयपरिच्छेदः ॥

अथ माध्याह्निकं कृत्यं नानातन्त्रान्निरुच्यते ॥१ ॥

अर्थ–अथानन्तर अनेक शास्त्रोंसे निरूपण की हुई मध्याह्निक क्रियाओंको कहते हैं ॥ १ ॥

घान्यभेदाः ।

अथ धान्यं त्रिधा शालिषष्टिकाव्रीहिभेदतः ।
शालयो हैमनास्तत्र षष्टिका ग्रैष्मिका अपि ॥ २ ॥
व्रीहयस्त्वाशवख्याताः प्रावृट्कालसमुद्भवाः ॥ ३ ॥

अर्थ–शालि, षष्टी और व्रीहि इनमें दोसे धान तीन प्रकारके हैं।तहां शालिधान हेमन्तऋतुमें, षष्टीधान ग्रीष्मऋतुमें और व्रीहिधान वर्षाऋतुमें उत्पन्न होते हैं। यह व्रीहिधान कहीं २ आशवनामसे प्रसिद्ध है ॥ २ ॥ ३ ॥

शालिधान्यगुणाः।

शालयो मधुराः शीता लघुपाका बलावहाः ।
पित्तघ्नाल्पानिलकफाः स्निग्धा बद्धाल्पवर्चसः ॥ ४ ॥

अर्थ–शालिधान–मधुर, शीतल, पचनेमें हलके, बलवर्द्धक, पित्तनाशक, किञ्चित् वातकफकारक, स्निग्ध और अल्पमलवर्द्धक है ॥ ४ ॥

रक्तशालिगुणाः ।

रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नश्चक्षुष्यः शुक्रमूत्रलः।
तृष्णाघ्नो बलकृत्स्वर्यो हृद्यस्तदनु चापरे ॥ ५॥
शालयो रक्तशालीनां किञ्चिद्धीनगुणा गुणैः ॥ ६ ॥

अर्थ–रक्तशालि–त्रिदोषनाशक, नेत्रोंको हितकारी, शुक्रजनक, मूत्रवर्द्धक, तृषानिवारक, बलकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाले और हृदयको हितकारी है । शालिधान इनसे हीनगुणवाले हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥

कलमधान्यगुणाः ।

कलमोऽसृक्त्रिदोषघ्नश्चक्षुष्यः सकषायवान् ॥ ७ ॥

अर्थ—कलमधान—रक्तविकार और त्रिदोषनाशक है। नेत्रोंको हितकारी और कषायरसान्वित है ॥ ७ ॥

दग्धभूमिजातशालिधान्यगुणाः ।

दग्धायामवनौ जाताः शालयो लघुपाकिनः ।
कषायाबद्धविण्मूत्रा रूक्षाः श्लेष्मापकर्षिणः ॥८॥

अर्थ—दग्धभूमीमें उत्पन्न हुवे शालिधान—पचनेमें हलके, कषेले, मलमूत्रको बांधनेवाले, रूखे और कफको हरनेवाले हैं ॥ ८ ॥

छिन्नरूढशालिधान्यगुणाः ।

शालयश्छिन्नरूढा ये रूक्षास्ते बद्धवर्चसः ॥ ९ ॥

अर्थ—छिन्नरूढशालिधान—रूखे और मलको बांधनेवाले हैं ॥ ९ ॥

ग्रैष्मिकषष्टिधान्यगुणाः ।

षष्टिका ग्रैष्मिका ये स्युः पित्तलास्ते स्थिरात्मकाः ॥१०

अर्थ—ग्रीष्मऋतुमें उत्पन्न होनेवाले षष्टीधान—पित्तजनक और बहुत कालमें पचनेवाले हैं ॥ १० ॥

शालिविशेषगुणाः ।

हैमनास्तु हिमा वृष्या मधुरा बद्धवर्चसः ॥ ११ ॥

अर्थ—हेमन्तऋतुमें उत्पन्न होनेवाले शालिधान—शीतल वीर्य्यवर्द्धक, मधुर और मलको बांधनेवाले हैं ॥ ११ ॥

पाटलाव्रीहिधान्यगुणाः ।

अत्युष्णो बद्धनिष्यन्दी पाटलस्तु त्रिदोषकृत् ॥१२॥

अर्थ-पाटलनामवाले व्रीहिधान-अत्यन्त उष्णवीर्य्य तथा मलरोधक, क्लेद और त्रिदोषकारक हैं ॥ १२ ॥

शरद्ग्रीष्मोद्भवधान्यगुणाः ।

धान्यं शरद्ग्रीष्मभवं पाकेम्लं पित्तकृद्गुरु ॥ १३ ॥

अर्थ-शरद् और ग्रीष्मऋतुमें उत्पन्न होनेवाले धान-पचनेमें अम्ल, पित्तकारक और भारी हैं ॥ १३ ॥

ऋतुसन्धिभवधान्यगुणाः ।

ऋतुसन्धिभवाश्चोष्मा पित्तला कफनाशनाः ॥ १४ ॥

अर्थ-ऋतुसन्धिउद्भव धान-गरम, पित्तकारक और कफनाशक हैं ॥ १४ ॥

स्थलजधान्यगुणाः ।

स्थलजाः कफपित्तघ्नाः कषायाः कटुपाकिनः ।

किञ्चित्सतिक्तमधुराः पवनानलवर्द्धनाः ॥ १५ ॥

अर्थ-स्थलमें उत्पन्न होनेवाले धान-कफपित्तनाशक, कषैले, पचनेमें चरपरे, किंचित् कडवे, मधुर तथा वात और अग्निवर्द्धक हैं ॥ १५ ॥

चोरकव्रीहिधान्यगुणाः ।

चोरकस्तु बुधैः प्रोक्तस्त्रिदोषस्य प्रकोपनः ।

मधुरश्चाम्लपाकश्च व्रीहिः पित्तकरो गुरुः ॥ १६ ॥

अर्थ-चोरकनामवाले व्रीहिधान-त्रिदोषको कुपित करनेवाले, मधुर, पचनेमें अम्ल, पित्तकारक और भारी हैं ॥ १६ ॥

वापितावापितधान्यगुणाः ।

वापितं गुरु तद्धान्यं किञ्चिद्धीनमवापितम् ॥ १७ ॥

अर्थ–वापितधान–भारी, अवापित धान–वापितसे किंचित् हीनगुणवाले हैं ॥ १७ ॥

रोप्यातिरोप्यधान्यगुणाः ।

रोप्यातिरोप्या लघवः शीघ्रपाका गुणोत्तराः ।
अदाहिनो दोषहरा बल्या मूत्रविवर्द्धनाः ॥ १८ ॥

अर्थ–रोप्यातिरोप्यधान–हल्के, शीघ्रपाकी, गुणाढ्य, अविदाही, त्रिदोषनाशक, बलकारक और मूत्रवर्द्धक हैं ॥ १८ ॥

यवगुणाः ।

यवः कषायो मधुरो वातरक्तहरो गुरुः ।
रूक्षः स्थैर्यकरः शीतो मूत्रमेदकफापहः ॥ १९ ॥

अर्थ–जौ–कषैले, मधुर, वातरक्तनाशक, भारी, रूखे, स्थिरताकारक, शीतल तथा मूत्ररोग, मेद और कफनाशक हैं ॥ १९ ॥

गोधूमगुणाः ।

गोधूमो बृंहणो बल्यो जीवनो वातपित्तहा ।
वृष्यः स्निग्धो गुरुः शीतः सन्धाता स्थैर्यकृत्सरः ॥ २० ॥

अर्थ–गेहूं–पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, अवस्थास्थापक, वातपित्तनाशक, शुक्रजनक, स्निग्ध, भारी, शीतल, टूटे हुवे स्थानकों जोडनेवाले और सारक हैं ॥ २० ॥

तृणधान्यानां गुणमाह ।

श्यामाकः शोषणो रूक्षो वातलः श्लेष्मपित्तहा ॥ २१

अर्थ–श्यामक (समा) धान–शोषक, रूक्ष, वातवर्द्धक, और कफपित्तनाशक है ॥ २१ ॥

उडिका कोद्रवश्चैव हस्तिश्यामाकचीनकौ ।
पीनसश्वासकासोरुस्तम्भकण्ठगदान् जयेत् ।
कङ्कुकांश्चापि जानीयादेतान् श्यामाकवद्गुणैः ॥२२॥

अर्थ—उडि, कोदो, हस्तिश्यामाक और चीनियाधान—पीनस, श्वास, खाँसी, ऊरुस्तम्भ (गठिया) और कण्ठरोगका नाश करनेवाले हैं। कंगुनीके गुण समाकी समान हैं ॥२२ ॥

उडिका तत्र कथिता बलासस्य विवर्द्धनी ।
कोद्रवश्च परं ग्राही वातलः कफनाशनः ॥ २३ ॥

अर्थ—उडिधान कफवर्द्धक है । कोदो—ग्राही, वात-वर्द्धक और कफनाशक हैं ॥२३ ॥

कङ्कुका बृंहणी गुर्वी भग्नसन्धानकृन्मता ॥ २४ ॥

अर्थ—कंगूधान—पुष्टिकारक, भारी और भग्नसन्धानकारक है ॥ २४ ॥

मुद्गानां भेदाः सामान्यगुणाश्च ।

कृष्णमुद्गा महामुद्गा गौरा हरितपीतकाः ।
श्वेता रक्तास्तु निर्दिष्टा लघवः पूर्वपूर्वतः ॥ २५ ॥
प्रधाना हरितास्तत्र वन्यमुद्गास्तु मुद्गवत् ॥२६॥

अर्थ—मूगकी अनेक जाती हैं । जैसे कालीमूग, बडीमूग, मूग, गौरे रंगकी मूग, हरी मूग, पीली मूग, सफेद मूग और लाल मूग। इनमें पूर्व मूगसे पूर्व हलकी है अर्थात् लाल मूगसे सफेद और सफेदसे पीली मूग हलकी है इत्यादि। वनमूगके गुण मूगकी समान हैं ॥ २५ ॥ २६ ॥

मुद्गगुणाः ।

मुद्गः कषायमधुरः कफपित्तास्रजिल्लघुः ।
ग्राही शीतः कटुः पाके चक्षुष्यो नातिवातलः॥२७॥

अर्थ– मूग–कषेली, मधुर, कफघ्न, रक्तपित्तनाशक, हलकी, मलरोधक, शीतल, पचनेमें कटु, नेत्रोंको हितकारी और किञ्चित् वातवर्द्धक है ॥ २७ ॥

मकुष्ठगुणाः ।

मकुष्ठः शीतलो ग्राही कफपित्तक्षयापहः ॥ २८ ॥

अर्थ–मोठ–शीतल, मलरोधक तथा कफ, पित्त और क्षयरोगनाशक है ॥ २८ ॥

माषगुणाः ।

माषो बहुमलो वृष्यः स्निग्धोष्णो मधुरो गुरुः ।
वातनुत् बृंहणो बल्यो मेदोमांसकफप्रदः ॥ २९ ॥

अर्थ–उडद–बहुमलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, गरम, मधुर, भारी, वातनिवारक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक तथा मेद, मांस, और कफकारक है ॥ २९ ॥

राजमाषगुणाः ।

राजमाषः सरो रुच्यः कफशुक्राम्लपित्तहा ।
तत्स्वादुर्वातलो रूक्षः कषायो विषदो गुरुः ॥३०॥

अर्थ–लोबिया–सारक, रुचिकारक तथा कफ, शुक्र और अम्लपित्तनाशक है। स्वादिष्ट, वादी, रूखा, कषेला, विषद और भारी है ॥ ३० ॥

मसूरगुणाः।

मसूरो मधुरः शीतः संग्राही कफपित्तहा ॥ ३१ ॥

अर्थ–मसूर–मधुर, शीतल, मलरोधक और कफपित्तनाशक है ॥ ३१ ॥

चणकगुणाः।

चणको वातलः शीतः कफासृक्पित्तपुंस्त्वनुत्॥३२॥

अर्थ–चना–वातकारक, शीतल तथा कफ, रक्तपित्त और पुरुषतानाशक है ॥ ३२ ॥

वर्तुलगुणाः।

सतीला वातला रक्तपित्तघ्ना बद्धवर्चसः ॥ ३३ ॥

अर्थ–मटर–वादी, रक्तपित्तनाशक और मलको बांधनेवाली है ॥ ३३ ॥

अतसीगुणाः।

अतस्युष्णा च तिक्ता च वातघ्नी श्लेष्मपित्तला॥३४॥

अर्थ–अलसी–गरम, कडवी, वातनाशक तथा कफ और पित्तकारक है ॥ ३४ ॥

कुलत्थगुणाः।

कुलत्थः कफवातघ्नो ग्राह्युष्णो बृंहणः कटुः ।
गुल्मशुक्राश्मरीमेदःश्वासकासप्रमेहजित् ॥ ३५ ॥

अर्थ–कुलथी–कफ-वातनाशक, ग्राही, गरम, पुष्टिकारक, चरपरी तथा गुल्म, शुक्र, पथरी, मेद, श्वास, खाँसी और प्रमेहको दूर करे है ॥ ३५ ॥

तुवरीगुणाः ।

तुवरी कफपित्तघ्नी कषाया नातिवातला ॥ ३६ ॥

अर्थ-अडहर-कफ तथा पित्तनाशक है, कषेली और किञ्चित् वातकारक है ॥ ३६ ॥

तिलगुणाः ।

तिलो विपाके मधुरो बलिष्ठः स्निग्धो व्रणालेपन एव पथ्यः । दन्त्योऽग्निमेधाजननोऽल्पमूत्रस्त्वच्योथ केश्योऽनिलहा गुरुश्च ॥ ३७ ॥

अर्थ-तिल-पचनमें मधुर, बलकारक, स्निग्ध, व्रणके लेपमें हितकारी, दन्तास्थिरताकारक, जठराग्निवर्द्धक, मेधाजनक, किञ्चित् मूत्रकारक, त्वचाके रंगको उज्वलतादायक, केशोंको हितकारी, वातहारी और भारी है ॥ ३७ ॥

श्रेष्ठः कृष्णतिलो मध्यः शुक्लो हीनतरोऽन्यथा ॥३८॥

अर्थ-तिलोंमें काले तिल उत्तम हैं, सफेद तिल मध्यम हैं और इनसे दूसरे अधम हैं ॥ ३८ ॥

शिम्बिगुणाः ।

शिम्बा तु विविधा रूक्षा वातला स्वादुशीतला ।
विष्टम्भिनी कषायाग्निविट्शुक्रकफनाशिनी ॥ ३९॥

अर्थ-सर्वनकारके शिम्बिधान-रूक्ष, वादी, स्वादिष्ट, शीतल, विष्टम्भजनक, कषाय तथा मल, अग्नि, शुक्र और कफनाशक हैं ॥

नूतनपुरातनादिभेदे शूकधान्यशमीधान्यानां गुणमाह ।

शूकधान्यं शमीधान्यं समातीतं प्रशस्यते ।
परतो वातकृद्रूक्षं प्रायेणाभिनवं गुरु ॥ ४० ॥

यवगोधूममाषाश्च तिलाश्चापि नवा हिताः ।
पुराणा विरसा रूक्षा न तथार्थकरा मताः ॥ ४१ ॥
अनार्त्तवं व्याधिहतमपर्य्यायगतं तथा ।
अभूमिजं नवं चापि न धान्यं गुणवत्स्मृतम् ॥ ४२॥

अर्थ—शूकधान और शमीधान नवीन अवस्थामें भारी हैं यह धान एक वर्षके व्यतीत होनेपर व्यवहारमें लाने चाहिये, पुराने धान—वातवर्द्धक और रूक्षगुणसंयुक्त हैं, इन सब धान्योंमें जौ, गेहूं, उडद और तिल यह नूतन अवस्थामें हितकारक हैं कारण यह है कि यह पुराने होनेपर रसहीन और रूक्ष हो जाते हैं तथा नवीनकी समान गुण करनेवाले नहीं रहते । विना ऋतुमें उत्पन्न हुए, व्याधिसे मारे हुए, बुरी भूमिमें उत्पन्न हुए, कच्चे और नवीन धान गुणकारी नहीं होते ॥४०॥४१॥४२॥
इति धान्यवर्गः ॥

शाकवर्गः ।

शाकभेदमाह ।

पत्रं पुष्पं फलं नालं कन्दं संस्वेदजं तथा ।
शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरु विद्याद्यथोत्तरम् ॥ ४३ ॥

अर्थ—शाक—पत्र, पुष्प, फल, नाल, कन्द और संस्वेदज इन भेदोंसे छे प्रकारका है । इनमें पत्रसे पुष्प, पुष्पसे फल, फलसे नाल, नालसे कन्द और कन्दसे संस्वेदज शाक भारी है ॥४३॥

शाकसाधारणगुणमाह ।

शाकानि प्रायशस्तावत् विष्टम्भीनि गुरूणि च ।
रूक्षाणि बहुवर्चांसि सृष्टविण्मारुतानि च ॥ ४४ ॥

अर्थ—सर्वशाक—प्रायः विष्टम्भी, भारी, रूखे, बहुमलवर्द्धक, तथा मल और वायुकारक हैं ॥ ४४ ॥

वास्तूकशाकगुणाः ।

कटुर्विपाके कृमिहा मेधाग्निबलवर्द्धनः ।
संस्कारे सर्वदोषघ्नो वास्तूको रोचनः सरः ॥ ४५ ॥

अर्थ—वथुआ—शाकमें कटु, कृमिनाशक तथा मेधा, अग्नि और बलवर्द्धक है, यह तेल घृतादिमें छौंका हुवा त्रिदोषनाशक, रोचक और कुछ २ दस्तावर है ॥ ४५ ॥

नाडीशाकगुणाः ।

नाडी च शाकं द्विविधं तिक्तं मधुरमेव च ।
रक्तपित्तहरं तिक्तं कोष्टकृमिविनाशनम् ॥ ४६ ॥
मधुरं पिच्छिलं शीतं विष्टम्भि कफवातकृत् ।
तच्छुष्कं जलदोषघ्नं पित्तश्लेष्मामवातनुत् ॥ ४७ ॥

अर्थ—नाडीका शाक—तिक्त और मधुर इन भेदोंसे दो प्रकारका है । तहां तिक्त अर्थात् कडवा शाक—रक्तपित्त, कोठ और कृमिरोगनाशक है, । मधुरशाक—पिच्छिल, शीतल, विष्टम्भकारक और कफवातवर्द्धक है । वही नाडीका सूखा हुवा शाक—जलदोष, पित्त, कफ और आमवातनाशक है ॥४६॥४७

कश्चटशाकगुणाः ।

कश्चटं श्लेष्मलं ग्राहि हिमं पित्तास्रजिल्लघु ॥ ४८ ॥

अर्थ—कञ्चट शाक—कफकारक, ग्राही, शीतल, रक्तपित्तनाशक और हलका है ॥ ४८ ॥

हिलमोचिकाशाकगुणाः ।

हिलमोची सरा तिक्ता कुष्ठघ्नी कफपित्तजित् ॥४९॥

अर्थ—हुलहुलशाक—सारक, कडवा, कुष्ठनाशक तथा कफपित्तको जीते हैं ॥ ४९॥

कलम्बीशाकगुणाः ।

कलम्बी स्तन्यदा प्रोक्ता मधुरा शुक्रकारिणी ॥५०॥

अर्थ—कलमीशाक—स्तनोंमें दूध वढानेवाला, मधुर और शुक्रजनक है ॥ ५० ॥

मारिषशाकगुणाः ।

मारिषो मधुरः शीतो विष्टम्भी पित्तजित् गुरुः ।
रक्तनाड्यादयश्चान्ये तज्जातीयाश्च तद्गुणाः ॥५१॥

अर्थ—मरषाशाक—मधुर, शीतल, विष्टम्भकारक, पित्तनाशक और भारी है । इस मारिषजातिके अन्यान्य रक्तवर्णके नाईकि शाक—मारिषकी समान गुणवाले हैं ॥ ५१ ॥

शाकव्यवहारविधिः ।

स्विन्नं निष्पीडितरसं हितं स्नेहादिसंस्कृतम् ॥५२॥

अर्थ—प्रथम शाककू एक जगह कूट लेवे, फिर उसका रस फेला लेवे, इसके उपरान्त शाककू घृतादि स्नेह वस्तुओंके द्वारा पचाकर भोजन करे ॥ ५२ ॥

कालशाकगुणाः ।

कालशाकं तु कटुकं दीपनं गरशोथजित् ॥५३॥

अर्थ–कालशाक–चरपरा, अग्निदीपक और विषसे उत्पन्न हुई सूजनको दूर करे है ॥ ५३ ॥

काकमाचीशाकगुणाः ।

त्रिदोषशमनी वृष्या काकमाची रसायनी ॥ ५४ ॥

अर्थ–मकोयका शाक–त्रिदोषनाशक, वीर्य्यवर्द्धक और रसायन है ॥ ५४ ॥

पूतिकाशाकगुणाः ।

उपोदिका सरा स्निग्धा बल्या श्लेष्मकरी हिमा ।
स्वादुपाका रसा वृष्या वातपित्तमदापहा ॥ ५५ ॥

अर्थ–पोईका शाक–सारक, स्निग्ध, बलकारक, कफकारक, शीतल, पचनेमें स्वादिष्ठ, वीर्य्यवर्द्धक तथा वात, पित्त और मदनाशक है ॥ ५५ ॥

सर्षपशाकगुणाः ।

सार्षपं क्रुमिलं स्वादु त्रिदोषरक्तपित्तकृत् ॥ ५६ ॥

अर्थ–सरसोंका शाक–कृमिजनक, स्वादिष्ठ, त्रिदोष और रक्तपित्तकारक है ॥ ५६ ॥

सुनिषण्णकशाकगुणाः ।

अविदाही त्रिदोषघ्नः संग्राही सुनिषण्णकः ॥ ५७ ॥

अर्थ–शिरिआरीका शाक–अविदाही, त्रिदोषनाशक और ग्राही है ॥ ५७ ॥

शालिञ्चशाकगुणाः ।

शालिञ्चो दीपनस्तिक्तः प्लीहार्शःकफवातजित्॥५८॥

अर्थ–शालिञ्चशाक–दीपन, कडवा तथा प्लीहा, बवासीर और कफवातनाशक है ॥ ५८ ॥

ग्रीष्मसुन्दरशाकगुणाः ।

ग्रीष्मसुन्दरकास्तिक्तो रोचनः कफपित्तजित् ॥ ५९ ॥

अर्थ–ग्रीष्मसुन्दरशाक–कडवा, रोचक, कफ और पित्त-नाशक है ॥ ५९ ॥

कासमर्दशाकगुणाः ।

कासमर्दोऽग्निदः स्वर्य्यः स्वादुस्तिक्तस्त्रिदोषजित् ॥६०

अर्थ–कसोंदीका शाक–अग्निकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, स्वादिष्ठ, कडवा और त्रिदोषनाशक है ॥ ६० ॥

शतपुष्पशाकगुणाः ।

शतपुष्पा तु मधुरा वातपित्तहरा गुरुः ॥ ६१ ॥

अर्थ–सोयेका शाक–मधुर, वात और पित्तनाशक तथा भारी है ॥ ६१ ॥

पुनर्नवाशाकगुणाः ।

पुनर्नवा तु वीर्य्योष्णा भेदिनी च रसायनी ।
कफानिलामदुर्नामब्रध्नशोथोदरापहा ॥ ६२ ॥

अर्थ–पुनर्नवेका शाक–उष्णवीर्य्य, दस्तावर, रसायन तथा कफ, वात, आम, बवासीर, ब्रध्न, सूजन और उदररोगनाशक है ॥ ६२ ॥

मूलकशाकगुणाः ।

बालमूलकपत्री तु रोचनी वह्निदीपनी ॥ ६३ ॥

अर्थ–कच्ची मूलीके पत्तोंका शाक–रुचिकारक और अग्निदीपक है ॥ ६३ ॥

तण्डुलीयशाकगुणाः ।

तण्डुलीयमसृक्पित्तविषनुत् स्वादुपाकतः ॥६४॥

अर्थ–चौलाईका शाक–रक्तपित्त और विषविनाशक है, पचनेमें स्वादिष्ठ है ॥ ६४ ॥

कलायशाकगुणाः ।

कलायशाकं मधुरं पित्तश्लेष्महरं परम् ।
कषायानुरसं रूक्षं विष्टम्भ्यनिलकोपनम् ॥ ६५ ॥

अर्थ–मटरका शाक–मधुर, पित्तनिवारक, श्लेष्मनाशक, किश्चित् कपेला, रूखा, विष्टम्भी और वातको कुपित करनेवाला है ॥ ६५ ॥

मण्डूकपर्णीशाकगुणाः ।

मण्डूकपर्णी कासघ्नी स्वादुपाकरसायनी ॥ ६६ ॥

अर्थ–मण्डूकपर्णीका शाक–कासनाशक, पाकमें स्वादिष्ठ, रसमें स्वादिष्ठ और शीतल है ॥ ६६ ॥

ब्राह्मीशाकगुणाः ।

ब्राह्मी तु भेदिनी गुर्वी मेध्या पित्तकफापहा ॥ ६७ ॥

अर्थ–ब्रह्मीका शाक–दस्तावर, भारी, मेधाजनक तथा पित्त और कफनाशक है ॥ ६७ ॥

चाङ्गेरीशाकगुणाः ।

चाङ्गेरी कफवातघ्नी वह्निकृद् ग्रहणी हिता ॥ ६८ ॥

अर्थ–चांगेरीका शाक–कफवातनाशक, वह्निवर्द्धक और संग्रहणी रोगमें हितकारी है ॥ ६८ ॥

पृक्काशाकगुणाः ।

पृक्का तु मधुरा पाके हिता पित्तकफापहा ॥ ६९ ॥

अर्थ–असवरगका शाक–पचनेमें मधुर, हितकारी और पित्तकफनाशक है ॥ ६९ ॥

लाङ्गलीशाकगुणाः ।

लाङ्गली कफपित्तघ्नी रूक्षा वातविबन्धनुत् ॥ ७० ॥

अर्थ–लांगलीका शाक–कफपित्तनाशक, रूखा तथा वात और विबन्धनाशक है ॥ ७० ॥

चुक्रकशाकगुणाः ।

चुक्रकं दुर्जरं भेदी वातजित्पित्तलं गुरु ॥ ७१ ॥

अर्थ–चूकेका शाक–दुर्जर (देरमें पचनेवाला), दस्तावर, वातनाशक, पित्तकारक और भारी है ॥ ७१ ॥

शुपणी-महाराष्ट्रीशाकगुणाः।

शुपणी कफवातघ्नी महाराष्ट्री च तादृशी ॥ ७२ ॥

अर्थ–शुपणी और जलपीपलका शाक–कफ और वातनाशक है ॥ ७२ ॥

जयन्तीशाकगुणाः ।

जयन्ती गरदोषघ्नी चक्षुष्या मधुरा हि सा ॥ ७३॥

अर्थ–जयन्तीका शाक–विषविकारविनाशक, नेत्रोंको हितकारी और भारी है ॥ ७३ ॥

कदलीमोचकगुणाः ।

कदलीमोचकं हृद्यं कफघ्नं कृमिनाशनम् ।
तृष्णार्धहृज्ज्वरं हन्ति दीपनं वस्तिशोधनम् ॥ ७४ ॥

अर्थ–केलेका मोचा–हृदयको हितकारी तथा कफ, कृमि, तृषा, प्लीहा और ज्वरको दूर करनेवाला है;दीपन और बस्तिशोधक है॥

गोक्षुरशाकगुणाः ।

तिक्तं गोक्षुरकं शाकं वृष्यं स्रोतोविशोधनम् ॥७५॥

अर्थ–गोखुरुयोंका शाक–कडवा, वीर्य्यवर्द्धक और स्रोतोविशोधन है ॥ ७५ ॥

शाकसाधारणगुणाः ।

सर्वं शाकमचक्षुष्यमजङ्घ्यममैथुनम् ।
ऋते पटोलवास्तूककाकमाचीपुनर्नवाः ॥ ७६ ॥

अर्थ–पटोल (परवल), वथुआ, मकोय और पुनर्नवेको छोडकर अन्यशाक–नेत्रोंको अहित करनेवाले, जंघाके बलको हरनेवाले और मैथुनशक्तिनाशक हैं ॥ ७६ ॥

पटोलशाकगुणाः ।

पटोलं कफपित्तास्रज्वरकुष्ठव्रणापहम् ॥ ७७ ॥

अर्थ–पटोलशाक–कफ, रक्तपित्त, ज्वर, कुष्ठ और व्रणविनाशक है ॥ ७७ ॥

शाकभक्षणदोषमाह ।

शाकं भिनत्ति वपुरस्थि निहन्ति नेत्रम् ।
वर्णं विनाशयति शुक्रमथासृजं च ॥
प्रज्ञाक्षयञ्च कुरुते पलितं च नूनम् ।
हन्ति स्मृतिं गतिमिति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ ७८ ॥

अर्थ–शाक भक्षण करनेसे शरीरकी हड्डी विनष्ट हो जाती है । तथा वर्ण, शुक्र और रुधिरका नाश होता है । बुद्धि,स्मरण-

शक्ति और गमनशक्ति नाशको प्राप्त होती है, तथा विना समयकेही बाल धवल हो जाते हैं ॥ ७८॥

शाकेषु सर्वे निवसन्ति रोगा रोगो हि देहस्य वि-
नाश हेतुः । तस्मात् बुधैः शाकविवर्जनञ्च कार्य्यं
तथाम्लेषु त एव दोषाः ॥७९॥

अर्थ–सर्व प्रकारके शाकोंमें रोग रहते हैं, और रोगही शरीरके नाश करनेकू हेतु है, इसलिये विद्वानोंको शाक त्यागना चाहिये । अम्लमेंभी शाकहीकी समान गुण है इस कारण अम्लाकाभी त्याग करना ॥ ७९ ॥ इति पत्रशाकगुणाः ॥

पुष्पशाकगुणमाह ।

वरुणपुष्पगुणमाह ।

पुष्पं वरुणजं ग्राहि पित्तघ्नमामवातजित् ॥ ८० ॥

अर्थ–बरनाका फूल–ग्राही तथा पित्त और आमवातनाशक है ॥ ८० ॥

वासक-वङ्गसेनपुष्पस्य च गुणमाह ।

वासकस्य च पुष्पाणि वङ्गसेनस्य चैव हि ।
कटुपाकानि तिक्तानि कासक्षयहराणि च ॥ ८१ ॥

अर्थ–विसोंटेको फूल और अगस्तियाके फूल–पचनेमें चरपरे, कडवे तथा खांसी और क्षयरोगकू हरनेवाले हैं ॥ ८१ ॥

कोविदारादिपुष्पगुणाः ।

कोविदारकर्बुदारशणशाल्मलिपुष्पकम् ।
ग्राहि शाकं प्रशस्तं च रक्तपित्ते विशेषतः ॥ ८२ ॥

अर्थ—कोविदार (लाल कचनार),कर्बुदार(सफेद कचनार), सन और सेमलके फूलोंका शाक—मलरोधक और रक्तपित्तनिवारक है ॥ ८२ ॥

मधूकपुष्पगुणमाह ।

मधूकपुष्पं चाहृद्यं तर्पणं बृंहणं परम् ॥८३ ॥

अर्थ—महुवेका फूल—हृदयको हितकारी, तर्पण और पुष्टिकारक है ॥ ८३ ॥

करीरवंशपुष्पगुणाः ।

करीरो वंशजो रूक्षो वातपित्तकरः कटुः ।
सकषायो विदाही च श्लेष्मघ्नः पाकतः कटुः ॥ ८४ ॥

अर्थ— करीलके और बाँसके फूल— रूखे, वातपित्तकारक, चरपरे, कषेले, दाहजनक, कफनाशक और पाकमें कटु हैं ॥ ८४ ॥

गुवाकादिवृक्षमस्तकगुणाः ।

गुवाकतालखर्जूरनारिकेलशिरांसि च ।
स्वादुतिक्तकषायाणि मूत्रातङ्कहराणि च ॥ ८५ ॥
बलप्राणकराण्याहुः शुक्रवृद्धिकराणि च ॥ ८६ ॥

अर्थ—सुपारी,ताड, खजूर और नारियलके वृक्षका मस्तक—स्वादिष्ट, कडवा, कषेला, मूत्ररोगनाशक तथा बल, आयु और शुक्रवर्द्धक हैं ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

तालप्रलम्बगुणाः ।

तथा तालप्रलम्बं च रूक्षक्षतरुजापहम् ॥ ८७॥

अर्थ–तालप्रलम्बकेभी गुण तालके मस्तककी समान हैं विशेषकरके रूखा और क्षतरोगनाशक हैं ॥ ८७ ॥

मुञ्जाकपुष्पगुणाः ।

मुञ्जातकं परं स्वादु वृष्यं पित्तानिलापहम् ॥ ८८॥

अर्थ–मुञ्जातके फूल–स्वादिष्ठ, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त और वातनाशक हैं ॥ ८८ ॥ इति पुष्पशाकगुणाः ॥

अथ फलशाकगुणमाह ।

वार्ताकुफलगुणाः ।

अग्निप्रदा मारुतनाशिनी च शुक्रप्रदा शोणितवर्द्धिनी च । हृल्लासकासारुचिनाशिनी च वार्त्ताकुरेषा गुणसप्तयुक्ता ॥ ८९ ॥

अर्थ–बैंगन–जठराग्निप्रदीपक, वातनाशक वीर्य्यजनक, रक्तवर्द्धक तथा हृल्लास (उबकाई), खांसी और अरुचिनाशक है । यह सात गुण बैंगनमें स्वभावसेही विद्यमान हैं ॥ ८९ ॥

कोमल-पक्व-वार्ताकुगुणाः ।

सा बाला कफपित्तघ्नी पक्वा सक्षारपित्तला ॥ ९० ॥

अर्थ–कच्चा बैंगन–कफ और पित्तनाशक है । पक्का बैंगन क्षारयुक्त और पित्तवर्द्धक है ॥ ९० ॥

मध्यमवार्ताकुगुणाः ।

सदाफला त्रिदोषघ्नी रक्तपित्तप्रसादनी ।
कण्डूकच्छूहरी चैव वार्त्ताकी गुणवत्तरा ॥ ९१ ॥

अर्थ–सदाफल बैंगन–त्रिदोषनाशक, रक्तपित्तप्रसादक तथा

कण्डू और कच्छू रोगनाशक हैं । वार्त्ताकीके गुण इनसे अधिक हैं ॥ ९१ ॥

कण्टकयुक्तवार्त्ताकुगुणाः ।

कण्टकी कटुतीक्ष्णोष्णा रक्तपित्तप्रकोपनी ।
कण्डूकच्छूहरी चैव वार्ताकी दोषला मता ॥ ९२ ॥

अर्थ–कण्टकयुक्त बैंगन–कटु,तीक्ष्ण, उष्ण, रक्तपित्तप्रकोपक तथा कण्डू और कच्छूनाशक हैं । इसी प्रकारकी वार्त्ताकी दोषकारक हैं ॥ ९२ ॥

अङ्गारपक्ववार्त्ताकुगुणाः ।

अङ्गारपक्ववार्ताकुः किञ्चित् पित्तकरी मता ।
कफमेदोऽनिलहरा सरा लघुतरा परम् ॥ ९३ ॥
अतो गुरुतरा चैव सतैललवणान्विता ॥ ९४ ॥

अर्थ–अंगारेपे पकाये हुवे बैंगन अर्थात् बैंगनका भुरता किञ्चित् पित्तकारक तथा कफ, मेद और वातविनाशक है, सारक और हलका है । यही भुरता तेल और लवणके संयोगसे भारी हो जाता है ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

वृहत्याः कण्टकार्य्याश्च फलगुणाः ।

वृहत्याः कण्टकार्य्याश्च फलं पित्तकफापहम् ।
कण्डूकुष्ठकृमिघ्नं च लघूष्णं कटुतिक्तकम् ॥ ९५ ॥

अर्थ–वृहती और कटेरीके फल–पित्त, कफ, कण्डू, कुष्ठ और कृमिनाशक हैं । हलके, गरम, चरपरे और कडवे हैं ॥ ९५ ॥

कूष्माण्डगुणाः।

कूष्माण्डकं पित्तहरं बालं मध्यं कफापहम्।
पक्वं लघूष्णं सक्षारं दीपनं बस्तिशोधनम् ॥ ९६ ॥
सर्वदोषहरं हृद्यं पथ्यं चेतोविकारिणम् ॥ ९७ ॥

अर्थ–कच्चा पेठा–पित्तनाशक। मध्यम पेठा–कफनाशक। पक्का पेठा–हलका, गरम क्षारयुक्त, जठराग्निदीपक, बस्तिशोधक, त्रिदोषनाशक, हृदयको हितकारी और हृदयरोगवालेको पथ्य है ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

अलाबुगुणाः।

अलाबुर्भेदिनी गुर्वी पित्तघ्नी कफला हिमा।
पाण्डुवर्णः कृमिश्लेष्मपित्तजित्तिक्तको लघुः ॥९८॥

अर्थ–अलाबु (कद्दू, तोम्बी)–भेदक, भारी, पित्तनाशक, कफकारक और शीतल है। पाण्डुरंगका कद्दू–कृमि, कफ और पित्तनाशक है, कडवा और हलका है ॥ ९८ ॥

झिङ्गाकगुणाः।

झिङ्गाकं तिक्तमधुरमामवाताग्निमान्द्यकृत् ॥९९॥

अर्थ–झिमनी–कडवी, मधुर तथा आमवात और मन्दाग्निकारक है ॥ ९९ ॥

त्रपुषैर्वारुगुणाः।

त्रपुषैर्वारुके स्वादुगुरुविष्टम्भिशीतले।
मुखप्रियं च रूक्षं च मूत्रदं त्रपुषन्त्विति ॥ १०० ॥
एर्वारुकं च संपक्वं दाहतृष्णाक्लमार्तिनुत् ॥ १०१ ॥

अर्थ–खीरा और फूट–स्वादिष्ट, भारी, विष्टम्भकारक,

शीतल है । खीरा-मुखप्रिय, रूखा और मूत्रवर्द्धक है । पकी फूट-दाह, तृषा और क्लान्तिको दूर करे है ॥ १०० ॥ १०१ ॥

कर्कटीफलगुणाः ।

कर्कटयास्तु फलं पक्वं छर्दितृण्णाक्लमार्तिनुत् ॥१०२॥

अर्थ-पकीहुई ककडी-वमन, तृषा और क्लान्तिनाशक है १०२

शीर्णवृन्तगुणाः ।

शीर्णवृन्तं कफकरं सक्षारं मधुरं लघु ॥ १०३ ॥

अर्थ-शीर्णवृन्त (एक प्रकारका तरबूज)-कफकारक, क्षारयुक्त, मधुर और हलका है ॥ १०३ ॥

चेलानगुणाः ।

चेलानं गुरु विष्टम्भि मधुरं वातपित्तजित् ॥ १०४॥

अर्थ-तरबूज-भारी, विष्टम्भकारी, मधुर और वातपित्तनाशक है ॥ १०४॥

कारवेल्लगुणाः ।

कारवेल्लमवृष्यं च रोचनं कफपित्तजित् ॥ १०५ ॥

अर्थ-करेला-अवृष्य, रोचक तथा कफ और पित्तनाशक है ॥ १०५ ॥

कर्कोटकफलगुणाः ।

कर्कोटकफलं ज्ञेयं कारवेल्लकवद्गुणैः ॥ १०६ ॥

अर्थ-ककोडेके गुण-करेलेकी समान जानने ॥ १०६ ॥

दीर्घपटोलिकागुणाः ।

दीर्घपटोलिका स्निग्धा कटु विष्टम्भि वातला ।
भेदिनी मधुरा रुच्या शीतला श्लेष्मकोपना ॥१०७॥

अर्थ-दीर्घपटोलिका-(एकप्रकारकी तोरई) स्निग्ध, कटु, विष्टम्भकारक, वातवर्द्धक, भेदक, रुचिकारक, शीतल और कफको कुपित करनेवाली है ॥ १०७ ॥

पटोलगुणाः ।

पटोलं कफपित्तास्रव्रणकुष्ठज्वरापहम् ।
विसर्पनयनव्याधित्रिदोषगरनाशनम् ॥ १०८ ॥

अर्थ-पटोल (परवल)-कफ, रक्तपित्त, व्रण, कुष्ठ,ज्वर, विसर्प, नेत्ररोग, त्रिदोष और विषको दूर करे है ॥ १०८ ॥

पटोलपत्रं पित्तघ्नं नाडी तस्य कफापहा ।
फलं तस्यात्रिदोषघ्नं मूलं तस्या विरेचनम् ॥१०९॥

अर्थ-पटोलपत्र-पित्तनाशक है । इसकी नाडी-कफनाशक है । इसका फल-त्रिदोषनाशक है।इसकी जड-दस्तावर है१०९

नाडीशाकगुणमाह ।

कूष्मांडनाडीगुणाः ।

कूष्माण्डनाडिका गुर्वी शर्कराश्मरिनाशिनी॥११०॥

अर्थ-पेठेकी डंडी-भारी तथा शर्करा और पथरीनाशक है ॥ ११० ॥

अलाबुनाडीगुणाः ।

अलाबुनाडिका गुर्वी मधुरा मलभेदिनी ॥ १११ ॥

अर्थ-कद्दूकी डंडी-भारी, मधुर और मलभेदक है॥ १११॥

वेत्राग्रगुणाः ।

वेत्राग्रं दीपनं रुच्यं वातपित्तकफापहम् ॥ ११२ ॥

अर्थ—बेतका कोमल अग्रभाग—अग्निप्रदीपक, रुचिकारक और कफनाशक है ॥ ११२ ॥ इति नाडीशाकगुणाः ॥

मूलशाकगुणमाह ।

शूरणगुणाः ।

शूरणो दीपनो रुच्यः कफघ्नो विशदो लघुः ।
विशेषादर्शसां पथ्यो ग्राम्यः कन्दस्तु दोषलः॥११३

अर्थ—जिमीकन्द—जठराग्निप्रदीपक,रुचिकारक,कफनाशक, विशद, हलका और विशेषकरके बवासीररोगमें हितकारी है। ग्राम्यजिमीकन्द दोषकारक है ॥ ११३ ॥

माणकगुणाः ।

माणकं स्वादु शीतं च गुरु शोथहरं कटु ॥ ११४ ॥

अर्थ—मानकन्द—स्वादिष्ठ, शीतल, भारी, शोथ (सूजन)-नाशक, और चरपरा है ॥ ११४ ॥

कचुगुणाः ।

कच्वी सरा कटुक्यामवातकृद्गुरुपिच्छला॥११५॥

अर्थ—कचुकन्द—सारक, कटुपाकी, आमवातकारक, भारी और पिच्छल है ॥ ११५ ॥

कदलीमूलगुणाः ।

कदल्या बलकृन्मूलं वातपित्तहरं गुरु ॥ ११६ ॥

अर्थ—केलेकी जड—बलकारक, वातपित्तनिवारक और भारी है ॥ ११६ ॥

केबुकमूलगुणाः ।

केबुकं कफपित्तघ्नं रोचनं वह्निदीपनम् ॥ ११७ ॥

अर्थ—केउँआकी जड—कफपित्तनाशक, रुचिकारक और अग्निदीपक है ॥११७॥

मूलकगुणाः ।

मूलकं गुरु विष्टम्भि तीक्ष्णमामं त्रिदोषकृत्।
तदेव स्नेहपक्वं चेत्कफकृद्वातपित्तजित् ॥ ११८॥

अर्थ—कचीमूली—भारी, विष्टम्भकारी, तीक्ष्ण तथा त्रिदोषकारक है। वही मुली घृतादि पचाई हुई—कफकारक और वातपित्तहारक है ॥ ११८ ॥

शुष्कमूलकगुणाः ।

शुष्कं त्रिदोषशमनं शोथघ्नं गरजिल्लघु ॥ ११९॥

अर्थ—सूखी मुली—त्रिदोषकू शान्ति करनेवाली, सूजनको दूर करनेवाली और विषको हरनेवाली है ॥ ११९ ॥

मूलकपुष्पफलगुणाः ।

तत्पुष्पं कफपित्तघ्नं तत्फलं कफवातजित् ॥१२०॥

अर्थ—मूलीके फूल—कफ—पित्तनाशक हैं । मूलीकी फली-कफवातनाशक है ॥ १२० ॥

खण्डकर्णगुणाः ।

खण्डकर्णो कफोच्छेदी कटुपाकश्च पित्तजित् ॥१२१

अर्थ—खण्डकर्ण आलू—कफनाशक, पाकमें कटु और पित्तनिवारक है ॥ १२१ ॥

वाराहीकन्दगुणाः ।

वाराहीकन्दः श्लेष्मघ्नः पित्तकृद्बलवर्द्धनः ॥ १२२ ॥

अर्थ—वाराहीकन्द—कफनाशक, पित्तकारक और बलवर्द्धक है ॥ १२२ ॥

विदारीकन्दगुणाः ।

विदारी वातपित्तघ्नी वृष्या बल्या रसायनी ॥ १२३॥

अर्थ—विदारीकन्द—वात और पित्तनाशक, वीर्यवर्द्धक और रसायन है ॥ १२३ ॥

वंशकरीरगुणाः ।

वंशकरीराः श्लेष्मघ्नाः सकषायविदाहिनः ॥१२४॥

अर्थ—वंशकरीर (बाँसका कल्ला)—कफनाशक, कपेला और दाहजनक है ॥ १२४ ॥

हस्तिकन्दादिगुणाः ।

हस्तिमध्वालुकादीनि रक्तपित्तहराणि च ।
गुरूणि स्वादुशीतानि स्तन्यशुक्रकराणि च॥१२५॥

अर्थ—हस्तिकन्द और मधु आलू—रक्तपित्तनाशक, भारी, स्वादिष्ठ, शीतल, स्तनोंमें दूध बढानेवाले और शुक्रको उत्पन्न करनेवाले हैं ॥ १२५ ॥

पिण्डालुकगुणाः ।

पिण्डालुकं कफकरं गुरु वातप्रकोपनम् ॥ १२६॥

अर्थ—पिण्डालू—कफकारी, भारी और वातकू कुपित करे है ॥ १२६ ॥

तरुटादिगुणाः ।

तरुटविसशालूकं क्रौञ्चादनकशेरुकम् ।
शृङ्गाटकाङ्कलोड्यञ्च गुरु विष्टम्भि शीतलम् ॥१२७

अर्थ–तरुम (नीलोत्पलकी जड)–बिस, शालूक(भसींडा), क्रौञ्चादन (घघोल), कशेरु, सिंघाडा और अंकलोड्य–भारी, विष्टम्भकारी और शीतल है ॥ १२७ ॥ इति मूलकशाकगुणाः ॥

स्वेदजशाकगुणाः ।

छत्रिकास्तु पलालेक्षुकरीपक्षितिरेणुजाः ।
सर्वाः संस्वेदजाः शीताः कषायाः स्वादुशीतलाः १२८
गुरवश्छर्दचतीसारज्वरश्लेष्मामयप्रदाः ॥ १२९ ॥

अर्थ–पलाल अर्थात् अन्नरहित अन्नकी नाल,ईख, सूखा गावर और रेणुमें उत्पन्न होनेवाला संस्वेदज शाक–शीतवीर्य्य, कपेला, स्वादिष्ठ, शीतल, भारी तथा वमन,अतिसार, ज्वर और कफरोगको दूर करनेवाला है ॥ १२८ ॥ १२९ ॥

पलालजशाकगुणाः ।

स्वादुपाकरसा रूक्षा दोपलास्तु पलालजाः ॥१३०॥

अर्थ–पलालज संस्वेदजात शाक–रूक्ष और त्रिदोपजनक है ॥ १३० ॥

शुचिस्थलादिजातशाकगुणाः।

श्वेताः शुचिस्थलीकाष्ठवंशगोत्रजसम्भवाः ।
नातिदोपकरा ज्ञेयाः शेषास्त्वेभ्यो विगर्हिताः॥१३१

अर्थ–शुचिस्थली (सफेद दृढभूमि), काष्ठ, बाँस, गोव्रज (जिस स्थानमें गौ विचरण करती हैं)इत्यादि संस्वेदजात शाक–किंचित् दोपकारक हैं । इनमें गोष्ठजात शाक अल्पगुणवाला है ॥ १३१ ॥ इति स्वेदजशाकगुणाः ॥

फलगुणमाह ।

बालमध्यमाम्रगुणाः ।

आम्रबालं रक्तपित्तकरं मध्यन्तु पित्तलम् ॥ १३२ ॥

अर्थ—कच्ची अमिया—रक्तपित्तकारक और तरुण आमपित्तजनक है ॥ १३२ ॥

पक्वाम्रफलगुणमाह ।

पक्वं वर्णकरं रुच्यं मांसशुक्रबलप्रदम् ।
पित्तविरोधि वातघ्नं हृद्यं गुर्वनुलोमनम् ॥ १३३ ॥

अर्थ—पका आम—शरीरके रंगको सुंदर करनेवाला, रुचिकारक तथा मांस, शुक्र और बलवर्द्धक है, पित्तनिवारक, वातनाशक, हृदयको हितकारी, भारी और अनुलोमन है॥ १३३॥

मधुना तत्क्षयप्लीहवातश्लेष्महरं परम् ।
सघृतं वातपित्तघ्नं दीपनं बलवर्णकृत् ॥ १३४ ॥

अर्थ—यह मधुके साथ—क्षय, प्लीहा और वातको दूर करे है । घृतके साथ—वातपित्तनाशक, जठराग्नि प्रदीपक तथा बल और वर्णकारक है ॥ १३४ ॥

आम्रपेषीगुणाः ।

आम्रपेषी कषायाम्ला भेदिनी कफवातजित्॥ १३५॥

अर्थ—आमपेषी अर्थात् अमचूर—कषेला, खट्टा, भेदक तथा कफ और वातनाशक है ॥ १३५ ॥

दाडिमगुणाः ।

दाडिमं हृद्यमम्लोष्णं वातघ्नं ग्राहि दीपनम् ।
कषायानुरसं प्रोक्तं कफपित्तविरोधि च ॥ १३६ ॥

अर्थ—अनार—हृदयको हितकारी, खट्टा, गरम, वातविनाशक, ग्राही, दीपन, किंचित्कषेला तथा कफ और पित्तनिवारक है ॥ १३६ ॥

दाडिमभेदेन गुणमाह ।

द्विविधं तत्तु विज्ञेयं मधुरं चाम्लमेव च ।
मधुरन्तु त्रिदोषघ्नं आम्लं वातकफापहम् ॥ १३७ ॥
ज्वरघ्नं दीपनं पथ्यं पाके लघ्वग्निदीपनम् ॥ १३८ ॥

अर्थ—अनार—अम्ल और मधुर इन भेदोंसे दो प्रकारका है । तहाँ मधुर अनार—त्रिदोषनाशक है । और अम्ल अर्थात् खट्टा अनार—वात—कफनाशक है । ज्वरनिवारक, रुचिकारक, पथ्य,लघुपाकी और जठराग्निको दीपन करे है॥१३७॥१३८॥

मातुलुङ्गफलगुणमाह ।

मातुलुङ्गफलं हृद्यमम्लं लघ्वग्निदीपनम् ।
श्वासकासारुचिहरं तृष्णाघ्नं कण्ठशोधनम् ॥ १३९ ॥
विबन्धे चैव हिक्कायां शूले छर्द्यांच शस्यते॥१४०॥

अर्थ—विजोरा नींबू—हृदयको हितकारी, खट्टा,हलका, अग्निदीपक, तथा श्वास,खाँसी, अरुचि और तृष्णानिवारक है । कण्ठशोधक, यह मूत्रमलकी विबन्धतामें, हिक्कारोगमें, शूलरोगमें और वमन रोगमें हितकारी है ॥ १३९ ॥१४० ॥

लिम्पाकगुणाः ।

लिम्पाकं सुरभि स्वादु नात्यम्लं भक्तरोचकम् ।
वातश्लेष्महरं हृद्यं छर्दिघ्नं नातिपित्तकृत् ॥ १४१ ॥

अर्थ—लिम्पाक (एक प्रकारका जम्भीरीनीबू)—सुगन्धि,स्वादिष्ट, किंचित् अम्ल, अन्नरोचक, वात-कफनाशक, हृदयको हितकारी, वमनको दूर करनेवाला और किंचित् पित्तकारक है ॥ १४१ ॥

जम्बीरगुणाः ।

जम्बीरं मधुरं किञ्चिदत्यम्लं पित्तकृत् गुरु ।
सुगन्धि दुर्जरं वह्निकफवातविबन्धनुत् ॥ १४२ ॥

अर्थ—जम्भीरीनीबू—किंचित् मधुर, अत्यन्त अम्ल, पित्तकारक, भारी, सुगन्धि, दुर्जर तथा अग्नि, कफ, वात और विबन्धनाशक है ॥ १४२ ॥

मधुकुक्कुटिकागुणाः ।

मधुकुक्कुटिका शीता श्लेष्मास्यस्यप्रसादनी ।
रुच्या स्वादुर्गुरुः स्निग्धा वातपित्तविनाशिनी॥१४३

अर्थ—चकोतर—शीतल, कफकारक, मुखको निर्मल करनेवाला, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, स्वादिष्ट, भारी, स्निग्ध, वात और पित्तनाशक है ॥ १४३ ॥

नागरंगगुणाः ।

नागरंगन्तु सुरभि विपाके दुर्जरं गुरु ।
नात्यम्लमीषन्मधुरं वृष्यं वातविनाशनम् ॥ १४४ ॥

अर्थ—नारंगी—सुगन्धित, पाकमें दुर्जर, भारी, किञ्चित् अम्ल, ईषत् मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और वातविनाशक है॥१४४॥

अपक्वकर्कन्धु-कोल-बदराणां गुणाः।

कर्कन्धुकोलबदरमामं पित्तकफावहम् ॥ १४५ ॥

अर्थ–कर्कन्धु (छोटी जातिके बेर), कोल (साधारण बेर), बदर (बडी जातिके बेर) यह सब कच्चे–पित्त और कफवर्द्धक हैं ॥ १४५ ॥

तेषां पक्वगुणाः।

पक्वं पित्तानिलहरं स्निग्धं समधुरं सरम् ॥ १४६ ॥

अर्थ–वही पके बेर–पित्त और वातविनाशक हैं,तथा स्निग्ध, मधुर और सारक हैं ॥ १४६ ॥

तेषां शुष्कगुणाः।

तच्छुष्कं कफवातघ्नं नच पित्ते विरुध्यते ॥ १४७ ॥

अर्थ–वही सूखे बेर–कफ और वातनाशक हैं, और पित्तवर्द्धक नहीं हैं ॥ १४७ ॥

तेषां पुरातनगुणाः।

पुराणं तृट्प्रशमनं श्रमघ्नं दीपनं लघु ॥ १४८ ॥

अर्थ–वही पुराने बेर–तृषाको शान्ति करनेवाले, श्रमनाशक, दीपन और हल्के हैं ॥ १४८ ॥

करमर्दगुणाः।

करमर्दं पिपासाघ्नमम्लं रुच्यञ्च पित्तकृत् ॥ १४९॥

अर्थ–करोंदा–पियासको हरनेवाला,खट्टा, रुचिकारक और पित्तजनक है ॥ १४९ ॥

लिकुचफलगुणाः।

लिकुचं गुरु विष्टम्भि त्रिदोषशुक्रदूषणम् ॥ १५० ॥

अर्थ–वडहर–भारी, विष्टम्भकारक, त्रिदोषजनक और शुक्रको दूषित करे है ॥ १५० ॥

आम्रातकफलगुणाः ।

आम्रातं तर्पणं वल्यं गुरु विष्टम्भ्यजीर्णकृत् ॥ १५१॥

अर्थ–अम्बाडा–तृप्तिकारक, बलवर्द्धक, भारी और विष्टम्भ, अजीर्णकारक है ॥ १५१ ॥

कर्म्मरंगफलगुणाः ।

कर्म्मरङ्गन्तु तीक्ष्णोष्णं कटु पाकेऽम्लपित्तकृत् १५२

अर्थ–कमरख–तीक्ष्ण, गरम, पचनेमें चरपरी, खट्टी और पित्तकारक है ॥ १५२ ॥

प्राचीनामलकगुणाः ।

पानीयामलकं ग्राहि स्वाद्वम्लं मुखशोधनम् ॥१५३॥

अर्थ–पानीआमला–ग्राही, स्वादिष्ठ, अम्ल और मुखशोधक है ॥ १५३ ॥

बहुवारफलगुणाः ।

बहुवारं हिमं वृष्यं श्लेष्मलं मधुरं गुरु ॥ १५४ ॥

अर्थ–बहुवार (लिसोडा)–शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारक और भारी है ॥ १५४ ॥

लवनीफलगुणाः ।

लवनीनां फलं हृद्यं सुगन्धं कफवातजित् ॥ १५५ ॥

अर्थ–हरफारेवडी–हृदयको हितकारी, सुगन्धि तथा कफ और वातनाशक है ॥ १५५ ॥

अपक्वकर्कन्धु-कोल-बदराणां गुणाः।

कर्कन्धुकोलबदरमामं पित्तकफावहम् ॥ १४५ ॥

अर्थ–कर्कन्धु (छोटी जातिके बेर), कोल (साधारण बेर), बदर (बडी जातिके बेर) यह सब कच्चे–पित्त और कफवर्द्धक हैं ॥ १४५ ॥

तेषां पक्वगुणाः।

पक्वं पित्तानिलहरं स्निग्धं समधुरं सरम् ॥ १४६ ॥

अर्थ–वही पक्के बेर–पित्त और वातविनाशक हैं,तथा स्निग्ध, मधुर और सारक हैं ॥ १४६ ॥

तेषां शुष्कगुणाः।

तच्छुष्कं कफवातघ्नं नच पित्ते विरुध्यते ॥ १४७ ॥

अर्थ–वही सूखे बेर–कफ और वातनाशक हैं, और पित्तवर्द्धक नहीं हैं ॥ १४७ ॥

तेषां पुरातनगुणाः।

पुराणं तृट्प्रशमनं श्रमघ्नं दीपनं लघु ॥ १४८ ॥

अर्थ–वही पुराने बेर–तृषाको शान्ति करनेवाले, श्रमनाशक, दीपन और हलके हैं ॥ १४८ ॥

करमर्दगुणाः।

करमर्दं पिपासाघ्नमम्लं रुच्यञ्च पित्तकृत् ॥ १४९॥

अर्थ–करोंदा–पियासको हरनेवाला,खट्टा, रुचिकारक और पित्तजनक है ॥ १४९ ॥

लिकुचफलगुणाः।

लिकुचं गुरु विष्टम्भि त्रिदोषशुक्रदूषणम् ॥ १५० ॥

अर्थ—बडहर—भारी, विष्टम्भकारक, त्रिदोषजनक और शुक्रको दूषित करे है ॥ १५० ॥

आम्रातकफलगुणाः ।

आम्रातं तर्पणं बल्यं गुरु विष्टम्भ्यजीर्णकृत् ॥ १५१॥

अर्थ—अम्बाडा—तृप्तिकारक, बलवर्द्धक, भारी और विष्टम्भ, अजीर्णकारक है ॥ १५१ ॥

कर्म्मरंगफलगुणाः ।

कर्म्मरङ्गन्तु तीक्ष्णोष्णं कटु पाकेऽम्लपित्तकृत् १५२

अर्थ—कमरख—तीक्ष्ण, गरम, पचनेमें चरपरी, खट्टी और पित्तकारक है ॥ १५२ ॥

प्राचीनामलकगुणाः ।

पानीयामलकं ग्राहि स्वाद्वम्लं मुखशोधनम् ॥१५३॥

अर्थ—पानीआमला—ग्राही, स्वादिष्ठ, अम्ल और मुखशोधक है ॥ १५३ ॥

बहुवारफलगुणाः ।

बहुवारं हिमं वृष्यं श्लेष्मलं मधुरं गुरु ॥ १५४ ॥

अर्थ—बहुवार (लिसोडा)—शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारक और भारी है ॥ १५४ ॥

लवनीफलगुणाः ।

लवनीनां फलं हृद्यं सुगन्धं कफवातजित् ॥ १५५ ॥

अर्थ—हरफारेवडी—हृदयको हितकारी, सुगन्धि तथा कफ और वातनाशक है ॥ १५५ ॥

जम्बुफलगुणाः।

जाम्बवं गुरु विष्टम्भि कषायं स्वादु शीतलम्।
अग्निसन्दूषणं रूक्षं वातलं कफपित्तजित् ॥ १५६ ॥

अर्थ—जामुन—भारी, विष्टम्भकारक, कषेली, स्वादिष्ठ, शीतल, अग्निदूषक, रूखी, वातवर्द्धक तथा कफ और पित्तनाशक है ॥ १५६ ॥

भव्यफलगुणाः।

भव्यं स्वादु कषायाम्लं हृद्यमास्यविशोधनम्॥१५७

अर्थ—भव्यफल—स्वादिष्ठ, कषेला, खट्टा, हृदयको हितकारी और मुखशोधक है ॥ १५७ ॥

अपक्वतिन्दुकफलगुणाः।

तिन्दुकं वातकृच्चामं कषायं गुरु शीतलम् ॥ १५८॥

अर्थ—कच्चा तेंदु—वातनाशक, कषेला, भारी और शीतल है ॥ १५८ ॥

पक्वतिन्दुकफलगुणाः।

पक्वन्तु गुरु पाके तु मधुरं कफपित्तनुत् ॥ १५९ ॥

अर्थ—पक्का तेंदु—भारी, पचनेमेंभी भारी, मधुर तथा कफ और पित्तनाशक है ॥ १५९ ॥

अपक्वपरूषकफलगुणाः।

परूषमामं वातघ्नं पित्तकारि च तत्स्मृतम् ॥ १६०॥

अर्थ—कच्चा फालसा—वातविनाशक और पित्तकारक है ॥ १६० ॥

पक्वपरूपकफलगुणाः।

पक्वं स्वादुरसं पाके शीतलं वातपित्तनुत् ॥१६१॥

अर्थ—पक्का फालसा—पाकमें और रसमें स्वादिष्ठ, शीतल तथा वात और पित्तनाशक है ॥ १६१ ॥

अपक्वकपित्थ-फलगुणाः।

कपित्थमामं कण्ठघ्नं विषघ्नं ग्राहि वातलम्।
मधुराम्लकषायत्वात् सौगन्ध्याच्च रुचिप्रदम्॥१६२॥

अर्थ—कच्चा कैथ—कण्ठनाशक, विषविनाशक, मलरोधक, वातवर्द्धक, यह मधुर, अम्ल और कषायरसयुक्त होनेसे तथा सुगन्धिसहित होनेसे रुचिदायक है ॥ १६२ ॥

पक्वकपित्थफलगुणाः।

तदेव पक्वं दोषघ्नं गुरु ग्राहि विषापहम् ॥ १६३ ॥

अर्थ—पक्का कैथ—त्रिदोषनाशक, भारी, ग्राही और विषविनाशक है ॥ १६३ ॥

अपक्वाम्लवेतसगुणाः।

अम्लवेतसमत्यम्लमानाहकफवातजित् ॥ १६४ ॥

अर्थ—कच्चा अमलवेत—अत्यन्त खट्टा तथा आनाह, कफ और वातनाशक है ॥ १६४ ॥

पक्वाम्लवेतसगुणाः।

तदेव सिद्धं दोषघ्नं श्रमघ्नं ग्राहि गुर्वपि ॥ १६५ ॥

अर्थ—पक्का अमलवेत—त्रिदोषनाशक, श्रमहारी, ग्राही और भारी है ॥ १६५ ॥

महार्द्रकगुणाः।

महार्द्रं दीपनं ग्राहि रूक्षं वातकफापहम् ॥१६६॥

अर्थ–महार्द्रक (वनअदरख)–दीपन, ग्राहि, रूखा, वात और कफनाशक है ॥ १६६ ॥

अपकतिन्तिडीफलगुणाः।

अम्लिकायाः फलं बालं वातघ्नं कफपित्तकृत्॥१६७॥

अर्थ–कची इमली–वातनिवारक, कफ और पित्तकारक हैं ॥ १६७ ॥

पकतिन्तिडीफलगुणाः।

तत्पकं दीपनं रुच्यमत्युष्णं कफवातजित् ॥१६८॥

अर्थ–पकी इमली–दीपन, रुचिकारक, अत्यन्त उष्ण, कफ और वातविनाशक है ॥ १६८ ॥

करुणनिम्बूकगुणाः।

करुणं कफवातास्रमेदोघ्नं पित्तकोपनम् ॥ १६९ ॥

अर्थ–कन्ना नीबू–कफ, वातरक्त और मेदोदोषनाशक है, तथा पित्तप्रकोपक है ॥१६९॥

कोपाम्रफलगुणाः।

कोपाम्रं कफवातघ्नं दीपनं ग्राहि तत्परम् ॥ १७० ॥

अर्थ–कोशम–कफ-वातनाशक, जठराग्निदीपक और ग्राही है ॥ १७० ॥

चीरुकफलगुणाः।

चीरुकं रोचनं चाम्लं विदाहि कफपित्तकृत् ॥१७१॥

अर्थ—चीरुक—रुचिकारक, खट्टा, दाहजनक तथा कफ और पित्तकारक है ॥ १७१ ॥

पक्वकण्टाफलगुणाः ।

कण्टाफलं सुमधुरं बृंहणं गुरु शीतलम् ।
दुर्जरं वातपित्तघ्नं श्लेष्मशुक्रबलप्रदम् ॥ १७२ ॥

अर्थ—पक्का कटहर—मधुर, पुष्टिकारक, भारी, शीतल, दुर्जर, वात-पित्तनाशक तथा कफ, शुक्र और बलवर्द्धक है ॥ १७२॥

अपक्वकण्टाफल-तदस्थिगुणाः ।

कण्टाफलमपक्वन्तु कषायं स्वादु शीतलम् ।
कफपित्तहरञ्चैव तत्फलास्थ्यपि तद्गुणम् ॥१७३॥

अर्थ—कच्चा कटैल—कषेला, स्वादिष्ठ, शीतल, कफ और पित्तनाशक है। इसकी गुठलीके गुणभी इसीके समान जानने १७३

तद्बीजं सर्पिषा युक्तं स्निग्धं हृद्यं बलप्रदम् ॥१७४॥

अर्थ—इसके बीज घृतयुक्त—स्निग्ध, हृदयको हितकारी और बलवर्द्धक हैं ॥ १७४ ॥

तालफलगुणाः ।

वातहा बृंहणो बल्यः कृमिहा कुष्ठनाशनः ।
रक्तपित्तहरः स्वादुस्तालः सप्तगुणान्वितः ॥ १७५ ॥

अर्थ—ताडका फल—वातविनाशक, पुष्टिकारक, कृमिनाशक, कुष्ठनाशक, रक्तपित्तहारक और स्वादिष्ठ है ॥ १७५ ॥

तालशस्यगुणाः ।

तालशस्यन्तु मधुरं मूत्रलं वातपित्तजित् ॥ १७६ ॥

अर्थ–तालशस्य–मधुर, मूत्रजनक, वात और पित्तनाशक है ॥ १७६ ॥

तालास्थिमज्जागुणाः।

तालास्थिमज्जा मधुरा मूत्रला शीतला गुरुः।
कफकृमिहरा वृष्या वातला दुर्जरा मता ॥ १७७ ॥

अर्थ–ताडकी गुठलीकी मींग–मधुर, मूत्रवर्द्धक, शीतल, भारी, कफनाशक, कृमिघ्न, वातकारक और दुर्जर है॥१७७॥

सामान्यनारिकेलगुणाः।

नारिकेलं गुरु स्निग्धं पित्तघ्नं स्वादु शीतलम्।
बलमांसकरं हृद्यं बृंहणं बस्तिशोधनम् ॥ १७८॥

अर्थ–नारियल–भारी, स्निग्ध, पित्तनाशक, स्वादिष्ठ, शीतल, बलवर्द्धक, मांसवर्द्धक, हृदयको हितकारी, पुष्टिकारी और बस्तिशोधक है ॥ १७८ ॥

कोमलनारिकेलगुणाः।

विशेषतः कोमलनारिकेलं निहन्ति पित्तज्वर-
मस्रदोषान्। तृट्छर्दिदाहामयमाशु हन्यात्
सरक्तपित्तप्रभवांश्च रोगान् ॥ १७९ ॥

अर्थ–कोमलनारियल–पित्तज्वर, रुधिरविकार, तृषा, वमन, दाह और रक्तपित्तनिवारक है ॥ १७९ ॥

कदलीफलसाधारणगुणाः।

कदलं मधुरं वृष्यं कषायं नातिशीतलम्।
रक्तपित्तहरं हृद्यं रुच्यं श्लेष्मकरं गुरु ॥ १८० ॥

अर्थ—केलेकी फली—मधुर, वीर्यवर्द्धक, कषेली, किञ्चित् शीतल, रक्तपित्तनाशक, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, कफकारी और भारी है ॥ १८० ॥

चम्पककदलीगुणाः ।

तदेव चम्पकाख्यन्तु वातपित्तहरं गुरु ।
वृष्यश्चैवातिशीतञ्च मधुरं रसपाकयोः ॥१८१ ॥

अर्थ—पीले जातिके केलेकी फली—वात -पित्तनाशक, भारी वीर्य्यवर्द्धक, अत्यन्त शीतल, पाक और रसमें मधुर है॥१८१॥

द्राक्षागुणाः ।

द्राक्षा तु मधुरा स्निग्धा वृष्या शीतानुलोमनी ।
बल्या वृष्या क्षतक्षीणतृषावातास्रपित्तजित् ॥ १८२॥

अर्थ—दाख—मधुर, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, मलभेदक तथा क्षीण, तृषा, वात और रक्तपित्तनाशक है ॥१८२ ॥

खर्जूरफलगुणाः ।

खर्जूरं मधुरं वृष्यं बृंहणं गुरु शीतलम् ।
क्षयेभिघाते दाहे च वातपित्ते च तद्धितम् ॥१८३ ॥

अर्थ—खजूर—मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक,भारी, शीतल तथा क्षय, अभिघात, दाह और वातपित्तरोगमें हितकारी है ॥ १८३ ॥

क्षीरवृक्षाणां फलगुणाः ।

क्षीरकायाः फलं विद्यात् गुरु विष्टम्भि शीतलम् ।
कषायमधुरं साम्लं नातिमारुतकोपनम् ॥ १८४ ॥

अर्थ–दूधवाले वृक्षोंके फल–भारी, विष्टम्भजनक, शीतल, कषेले,मधुर, अम्ल और किञ्चित् वातको कुपित करे हैं ॥ १८४॥

गाम्भारीफलगुणाः ।

गाम्भारिकाफलं ग्राहि सतिक्तं मधुरं गुरु ।
केश्यं रसायनं मेध्यं शीतलं दाहपित्तजित् ॥१८५॥

अर्थ–कुम्भेरका फल–मलरोधक, कडवा, मधुर, भारी, केशोंको हितकारी, रसायन, मेधाजनक, शीतल तथा दाह और पित्तनाशक है ॥ १८५ ॥

बालबिल्वगुणाः ।

बिल्वं बालं कषायोष्णं पाचनं वह्निदीपनम् ।
संग्राहि तिक्तकटुकं तीक्ष्णं वातकफापहम् ॥ १८६ ॥

अर्थ–कच्चा बेल–कषेला, गरम, पाचक, अग्निप्रदीपक, ग्राही, कडवा, चरपरा, तीक्ष्ण, वात और कफनाशक है ॥ १८६ ॥

पक्कबिल्वगुणाः ।

पक्कं सुगन्धि मधुरं दुर्जरं ग्राहि दोषलम् ॥ १८७ ॥

अर्थ–पक्का बेल–सुगन्धित, मधुर, दुर्जर,ग्राही और त्रिदोषकारक है ॥ १८७ ॥

बालबिल्वस्य प्राधान्यमाह ।

फलेषु परिपक्केषु ये गुणाः समुदाहृताः ।
बिल्वादन्यत्र विज्ञेया बिल्वमामं गुणोत्तरम् ॥१८८ ॥

अर्थ–सर्वप्रकारके फल पके हुवेही गुणवाले होते हैं, किन्तु बेल तो कच्चाही अधिक गुणवाला होता है ॥ १८८ ॥

बिल्वपेपिकागुणाः ।

कफवातामशूलघ्नी ग्राहिणी बिल्वपेपिका ॥ १८९ ॥

अर्थ–बेलका सूखा गूदा–कफ, वात, आम और शूलनाशक है, तथा ग्राही है ॥ १८९ ॥

बकुलफलगुणाः ।

बकुलं मधुरं ग्राहि दन्तस्थैर्यकरं परम् ॥ १९० ॥

अर्थ–मौलसिरीके फल–मधुर, ग्राही और दांतोंको स्थिर करनेवाले हैं ॥ १९० ॥

प्रियालफलगुणाः ।

पियालं मधुरं स्निग्धं बृंहणं वातपित्तजित् ॥ १९१॥

अर्थ–चिरोंजी–मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक तथा वात और पित्तनाशक है ॥ १९१ ॥

मधूकफलगुणाः ।

मधूकस्य फलं पक्वं वातपित्तप्रणाशनम् ॥ १९२ ॥

अर्थ–महुवेका पका फल–वात और पित्तनाशक है॥ १९२॥

भ्रष्टनिष्पावफलगुणाः ।

निष्पावकफलं भ्रष्टं बद्धवर्चस्करं गुरु ॥ १९३ ॥

अर्थ–भुने हुवे सेंमके बीज–मलको बांधनेवाले और भारी हैं ॥ १९३ ॥

वेत्रफलगुणाः ।

फलं वेत्रस्य वातघ्नमम्लपित्तबलासकृत् ॥ १९४ ॥

अर्थ–बेतके फल–वातनाशक तथा अम्लपित्त और कफकारक हैं ॥१९४ ॥

फल्गुफलगुणाः ।

फल्गोः फलं गुरु ग्राहि तर्पणं स्वादु शीतलम्॥१९५॥

अर्थ–कठुमरके फल–भारी, ग्राही, तर्पण, स्वादिष्ठ और शीतल हैं ॥ १९५ ॥

त्रिफलासाधारणगुणाः ।

त्रिफला तु त्रिदोषघ्नी नात्युष्णा मलभेदिनी॥१९६॥

अर्थ–त्रिफला (हड़, बहेडा, आमला)–त्रिदोषनाशक, किञ्चित् उष्ण और मलभेदक है ॥ १९६ ॥

हरीतकीनां भेदमाह ।

जीवन्ती रोहिणी चैव विजया चाभयामृता ।
पूतना कालिका चेति पथ्या सप्तविधा मता ॥ १९७॥

अर्थ–हरड़–जीवन्ती, रोहिणी, विजया, अभया, अमृता, पूतना और कालिका इन भेदोंसे सात प्रकारकी है ॥१९७॥

तेषां लक्षणमाह ।

सुवर्णवर्णा जीवन्ती रोहिणी कपिलद्युतिः ।
अलाबुवृन्ता विजया पंचाशा चाभया स्मृता॥१९८॥
स्थूलमांसामृता ज्ञेया पूतनास्थिमती मता ।
त्र्यंशा च कालिकेत्येवं सप्तजातिहरीतकी ॥ १९९ ॥

अर्थ–जीवन्ति हरड–सुवर्णके वर्ण, रोहिणी पिंगलवर्ण, विजया अलाबु (कद्दू) की समान वृन्तयुक्त, अभया पांच रेखावाली, अमृता स्थूल मांसयुक्त अर्थात् मोटी, पूतना बडी गुठलीवाली और कालिका हरड तीन रेखावाली होती है ॥१९८॥१९९॥

तेषां प्रयोगविधिः।

स्नेहपानेषु सर्वेषु जीवन्ती च प्रशस्यते ।
रोहिणी क्षयरोगेषु विजया सर्वकर्म्मसु ॥ २०० ॥
पूतना लेपने ज्ञेया चामृता तु विरेचने ।
अभया नेत्ररोगेषु गन्धयुक्तेषु कालिका ॥ २०१ ॥

अर्थ–तेल, घृतादि कार्य्यमें जीवन्ति, क्षयरोगमें रोहिणी, सर्वकार्य्योंमें विजया, व्रणादिके लेपमें पूतना, विरेचनकर्ममें अमृता, नेत्ररोगमें अभया और गन्धयोग कर्म्ममें कालिका हरड़ लेनी चाहिये ॥ २०० ॥ २०१ ॥

हरीतकीशब्दस्य निरुक्तिकथनम् ।

हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः ।
हरते सर्वरोगांश्च तेन नाम्ना हरीतकी ॥ २०२॥

अर्थ–हरके भवनमें उत्पन्न हुई, स्वभावसे हरे रंगवाली तथा सर्वरोगोंको हरनेवाली इसकारण इसका नाम हरीतकी है ॥ २०२॥

हरीतक्या उत्पत्तिकथनम् ।

पीयूषं पिबतास्त्रिविष्टपपतेर्य्ये बिन्दवो निर्गता-।
स्तेभ्योऽभूदभया दिवाकरकरश्रेणीव दोषापहा ॥
कालिन्दीव बलप्रमोदजननी गौरीव शूलिप्रिया ।
वह्निद्योतकरी घृताहुतिरिव क्षोणीव नानारसा॥२०३॥

अर्थ–इन्द्रने जब अमृत पिया था उस समय जो अमृतकी बूंदें पृथ्वीपर गिरीं उन अमृतकी बूंदोंसे हरडकी उत्पत्ति हुई,

जिसप्रकार सूर्यकी किरणें अन्धकारके समूहका नाश करती हैं, तथा यमुनानदीके जलमें स्नान करनेसे जिस प्रकार बल और हर्षकी वृद्धि होती है, जैसे शंकरको पार्वती प्यारी है, घृताहुति जिसप्रकार अग्निका उद्योत करती है और पृथ्वी जैसे अनेक रसयुक्त है, उसीप्रकार हरड़ त्रिदोषनाशक, बल और हर्षजनक, मनुष्योंको प्यारी, अग्निवर्द्धक और अनेकरसान्वित है ॥ २०३ ॥

द्रव्यविशेषेण हरीतकीभक्षणगुणाः ।

वातघ्नी लवणैः पथ्या पित्तघ्नी घृतसंयुता ।
नागरेण कफं हन्ति सर्वदोषान् गुडान्विता ॥२०४॥

अर्थ–हरड लवणके साथ–वातका, घृतके साथ–पित्तका, सोंठके साथ–कफका और गुडके साथ भक्षण करनेसे त्रिदोषका नाश करती है ॥ २०४ ॥

हरीतकीसाधारणगुणाः ।

पथ्या पञ्चरसायुष्या चक्षुष्या लवणा सरा ।
मेध्योष्मा दीपनी शोथदोषकुष्ठव्रणापहा ॥ २०५ ॥

अर्थ–हरड–पंचरसयुक्त, लवणरसरहित, अवस्थास्थापक, नेत्रोंको हितकारी, सारक, मेधाकारक, उष्णवीर्य्य, अग्निदीपक, तथा सूजन, त्रिदोष, कोड और व्रणविनाशक है ॥ २०५ ॥

आमलकीफलगुणाः ।

तद्वद्धात्री विशेषेण वृष्या शीतैव वीर्य्यतः ।
हन्ति वातं तदम्लत्वात् पित्तं माधुर्य्यशैत्यतः॥२०६

कफं रूक्षकषायत्वात् फलेभ्योऽप्यधिकं हि तत् ।
आदावन्ते च मध्ये च भोजनस्य प्रशस्यते ॥२०७॥
निवत्ययं दोषहरं फले त्वामलकीफलम् ॥ २०८ ॥

अर्थ–अमलेकेभी गुण हरडकी समान हैं। विशेष करके विवर्द्धक और शीतवीर्य्य हैं । यह खट्टेपनसे वातका नाश करता है । मधुरता और शीतलतासे पित्तका नाश करता है । रूखे और कषेलेपनसे कफका नाश करता है । इसप्रकार आमला त्रिदोषनाशक है । यह और फलोंकी अपेक्षा अधिक गुणवाला है। भोजनकी आदि अन्त और मध्यमें इसको भक्षण करना चाहिये। फलोंमें उत्तम और दोषनाशक है ॥२०६॥ २०७॥ २०८ ॥

विभीतकफलगुणाः ।

विभीतं भेदि तीक्ष्णोष्णं वैस्वर्यं कृमिनाशनम् ।
चक्षुष्यं स्वादुपाकि च कषायं कफपित्तनुत् ॥ २०९

अर्थ–बहेडा–भेदक, तीक्ष्ण, उष्ण, स्वरभंगनाशक, कृमिघ्न, नेत्रोंको हितकारी, स्वादुपाकी, कषेला तथा कफ और पित्तनाशक है ॥ २०९ ॥

पथ्यामज्जागुणाः ।

पथ्यामज्जा तु चक्षुष्या वातपित्तहरा गुरुः ॥ २१०॥

अर्थ–हरडकी मींग–नेत्रोंको हितकारी, वात-पित्तनाशक और भारी है ॥ २१० ॥

विभीतकामलयोर्मज्जागुणाः ।

विभीतमज्जा तृट्छर्दिकफवातहरा लघुः ।
कषाया मेदकृच्चापि धात्रीमज्जापि तद्गुणा ॥२११॥

अर्थ—बहेडेकी मींग—तृषा, वमन, कफ और वातनाशक है। हलकी, कषैली, मेदवर्द्धक, आमलेकी मींगके गुणभी इसीकी समान जानने ॥ २११ ॥

बदरफलमज्जागुणाः ।

कोलमज्जा तु मधुरा पित्तच्छर्दितृषापहा ॥ २१२ ॥

अर्थ—बेरकी मींग— मधुर तथा पित्त, वमन और तृषानिवारक है ॥ २१२ ॥

कूष्माण्डफलमज्जागुणाः ।

कूष्माण्डमज्जा वृष्या स्यात् पित्तनुद्बस्तिशोधना २१३

अर्थ—पेठेकी मींग- वीर्यवर्द्धक, पित्तनाशक और बस्तिशोधक है ॥ २१३ ॥

अनुक्तमज्जागुणाः ।

यस्य यस्य फलस्येह वीर्य्यं भवति यादृशम् ।
तस्य तस्यैव वीर्येण मज्जानं हि विनिर्दिशेत्॥२१४॥

अर्थ—जिस जिस फलोंमें जैसा२ वीर्य है, वैसा वैसाही उसकी मज्जामें जान लेना ॥ २१४ ॥ इति फलगुणाः ॥

अथ मत्स्यवर्गमाह ।

मत्स्यसामान्यगुणाः ।

मत्स्यास्तु बृंहणाः सर्वे गुरवः शुक्रवर्द्धनाः ।
बल्याः स्निग्धोष्णमधुराः कफपित्तकराः स्मृताः२१५
व्यायामाध्वरतानां च वातार्तानां च पूजितः ।
मत्स्याशिनो न बाधन्ते रोगा वातसमुद्भवाः॥२१६॥

अर्थ–सर्वप्रकारकी मछली–पुष्टिकारक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, स्निग्ध, गरम, मधुर, कफकारक, पित्तजनक, व्यायाम (कसरत, दंड) कारी, पथभ्रमणकारक तथा वातरोगीकू हितकारी है, मछली खानेवाले प्राणीको वातसे उत्पन्न हुवे रोग नहीं बाधा देते ॥ २१५ ॥ २१६ ॥

बृहन्मत्स्यगुणाः ।

महाप्रमाणा गुरवः शुक्रला बद्धवर्चसः ॥ २१७ ॥

अर्थ–बडा मच्छ–भारी, वीर्य्यजनक और मलरोधक है ॥ ॥ २१७ ॥

क्षुद्रमत्स्यगुणाः ।

क्षुद्रमत्स्यास्तु लघवो ग्राहिणो ग्रहिणीहिताः॥२१८॥

अर्थ–छोटी मछली–हलकी, ग्राही और संग्रहणीरोगमें हितकारी है ॥ २१८ ॥

कृष्णवर्णमत्स्यगुणाः ।

कृष्णमत्स्या लघुस्निग्धा वातघ्ना वह्निवर्द्धनाः॥२१९॥

अर्थ–काले रंगकी मछली–हलकी,स्निग्ध, वातनाशक और जठराग्निवर्द्धक है ॥ २१९ ॥

पाण्डुमत्स्यगुणाः ।

पाण्डुरा दोपलाः स्निग्धा गुरवो भिन्नवर्चसः॥२२०॥

अर्थ–पाण्डुवर्णकी मछली–त्रिदोषकारक, स्निग्ध, भारी और मलभेदक है ॥ २२० ॥

क्लिन्नशुष्कमत्स्ययोर्गुणाः।

कुथिता दोषला मत्स्याः शुष्का विष्टम्भिदुर्जराः२२१

अर्थ–क्लिन्नमछली–त्रिदोषकारक और सूखी मछली–विष्टम्भकारक और दुर्जर है ॥ २२१ ॥

लवणसंयुक्तमत्स्यगुणाः।

लवणैस्ताडिता मत्स्याः कफपित्तकराः सराः ॥२२२॥

अर्थ–लवणमिश्रित मछली–कफकारक, पित्तवर्द्धक और सारक है ॥ २२२ ॥

सामुद्रिकमत्स्यगुणाः।

सामुद्रा गुरवो वृष्याः स्निग्धोष्या वातनाशनाः।
पित्तलास्तु विशेषेण मांसाशित्वाद्बलावहाः ॥२२३॥

अर्थ–समुद्रकी मछली–भारी, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, गरम, वातविनाशक, पित्तजनक, समुद्रमें रहनेवाली सर्व प्रकारकी मछली मांसका आहार करती है इसकारण समुद्रकी मछलीयोंको भक्षण करनेसे बलकी वृद्धि होती है ॥ २२३ ॥

नादेयमत्स्यगुणाः।

नादेयाः श्लेष्मला वृष्या मधुराः स्वल्पवर्चसः २२४

अर्थ–नदीकी मछली–कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर और मलको अल्प करनेवाली है ॥ २२४ ॥

सरोवर-तडागसम्भूतमत्स्यगुणाः।

सरस्तडागसम्भूताः स्निग्धा स्वादुरसाः स्मृताः२२५

अर्थ–सरोवर और तड़ागकी मछली–स्निग्ध और स्वादिष्ठ है॥

हृदजातमत्स्यगुणाः ।

महाह्रदेषु बलिनः स्वल्पाऽम्भस्यबलाः स्मृताः ।
दुर्नामानिलदोषघ्नाः कृमिदूषीविषापहाः ॥ २२६ ॥
चक्षुष्या मधुराः पाके स्वल्पमेधाग्निवर्द्धनाः ॥२२७॥

अर्थ-बहुजलवाले ह्रद (एकप्रकारका जलाशय) की मछली-बलवर्द्धक है। और अल्पजलवाले ह्रदकी मछली-बलनाशक है, तथा बवासीर, वातविकार, कृमि और दूषीविषहारक है, नेत्रोंको हितकारी, पचनेमें मधुर, मेधा और अल्पअग्निकी बढानेवाली है ॥ २२६ ॥ २२७ ॥

रोहितमत्स्यगुणाः ।

रोहितः सर्वमत्स्यानां वरो वृष्योऽर्दितार्तिजित् ।
कषायानुरसः स्वादुर्वातघ्नो नातिपित्तलः ॥ २२८ ॥

अर्थ-रोहितमच्छली-सर्व मछलियोंकी अपेक्षा उत्तम है, वीर्य्यवर्द्धक, अर्दितरोगनाशक, किञ्चित्कषेली, स्वादिष्ट, वातविनाशक और अत्यन्त पित्तल नहीं है ॥ २२८ ॥

भाकुटमत्स्यगुणाः ।

भाकुटो मधुरः शीतो वृष्यः श्लेष्मकरो गुरुः ।
आमवातकरो हृद्यो वातपित्तहरो मतः ॥ २२९ ॥

अर्थ-भाकुटमछली-मधुर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारक, भारी, आमवातकारक, हृदयको हितकारी तथा वात और पित्तनाशक है ॥ २२९ ॥

पाठीनमत्स्यगुणाः ।

पाठीनः श्लेष्महा स्निग्धो मधुरः सकषायवान् ।
बल्यो वृष्यः कटुः पाके रोचनो वातपित्तजित् ॥२३०

अर्थ–पाठीनमछली–कफकारक, स्निग्ध, मधुर, कषेली, बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, पचनेमें चरपरी, रुचिकारी तथा वात और पित्तनाशक है ॥ २३० ॥

शिलिन्दमत्स्यगुणाः ।

शिलिन्दः श्लेष्मलो बल्यो विपाके मधुरो गुरुः ।
आमवातकरो हृद्यो वातपित्तहरो मतः ॥ २३१ ॥

अर्थ–शिलिन्दमछली–कफवर्द्धक, पचनेमें मधुर, भारी, आमवातकारक, हृदयको हितकारी तथा वातपित्तनाशक है ॥२३१

आडिमत्स्यगुणाः ।

आडिमत्स्यो गुरुः स्निग्धो वातश्लेष्मप्रकोपनः ॥२३२

अर्थ–आडीमछली–भारी, स्निग्ध, तथा वात और कफको कुपित करे है ॥ २३२ ॥

भल्लकीमत्स्यगुणाः ।

भल्लकी मधुरः शीतो वृष्यः श्लेष्मकरो गुरुः ॥ २३३

अर्थ–भल्लकी मछली–मधुर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारी और भारी है ॥ २३३ ॥

चित्रफलमत्स्यगुणाः ।

चित्रफलो गुरुः स्वादुः स्निग्धो वृष्यो बलप्रदः ॥२३४

अर्थ–चित्रफलमछली–भारी, स्वादिष्ट, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक और बलदायक है ॥ २३४ ॥

गर्गरमत्स्यगुणाः ।

गर्गरो मधुरः स्निग्धो गुरुर्वातविनाशनः ॥ २३५ ॥

अर्थ–गर्गरमछली–मधुर, स्निग्ध, भारी और वातविनाशक है ॥ २३५ ॥

नन्दावर्त्तमत्स्यगुणाः ।

नन्दावर्तस्तु संग्राही कफपित्तविनाशनः ॥ २३६ ॥

अर्थ–नन्दावर्त्तमछली–ग्राही तथा कफ और पित्तनाशक है ॥ २३६ ॥

कुलिशमत्स्यगुणाः।

कुलिशो मधुरो हृद्यः कषायो दीपनो मतः ।
बल्यः स्निग्धो लघुर्ग्राही हितो वाते च रोचकः॥२३७

अर्थ–कुलिशमछली–मधुर, हृदयको हितकारी, कषेली, अग्निदीपक, बलकारक, स्निग्ध, हलकी, मलरोधक, वातरोगमें हितकारी और रुचिकारी है ॥ २३७ ॥

इलिशमत्स्यगुणाः।

इलिशो मधुरो हृद्यः पित्तश्लेष्मामवर्द्धनः ।
भृशं व्यवायनित्यानां हितः शीतोऽग्निकृल्लघुः॥२३८॥

अर्थ–इलिशमछली–मधुर, हृदयको हितकारी तथा पित्त, कफ और आमवर्द्धक है, अधिक मैथुन करनेवाले मनुष्योंको हितकारी, शीतल, अग्निवर्द्धक और हलकी है ॥ २३८ ॥

वापुपमत्स्यगुणाः ।

वापुपो मधुरो वृष्यो बृंहणो धातुवर्द्धनः ॥ २३९ ॥

अर्थ–वापुपमछली–मधुर, वृष्य, पुष्टिकारक और धातुवर्द्धक है ॥ २३९ ॥

वृहच्छफरीमत्स्यगुणाः ।

स्निग्धास्यकण्ठरोगघ्नी श्रेष्ठा प्रोष्ठी प्रकीर्तिता ॥२४०

अर्थ–बडी प्रौष्ठी मछली–स्निग्ध तथा मुखरोग और कण्ठरोगनाशक है ॥ २४० ॥

मद्गुरमत्स्यगुणाः ।

मद्गुरो मधुरः स्निग्धः संग्राही शुक्रलो गुरुः ॥२४१॥

अर्थ–मद्गुर मछली–मधुर, स्निग्ध, ग्राही, शुक्रजनक और भारी है ॥ २४१ ॥

शृङ्गीमत्स्यगुणाः ।

शृङ्गी स्वादुरसा स्निग्धा बृंहणी कफकोपिनी॥२४२॥

अर्थ–शृङ्गीमछली–स्वादिष्ठ, स्निग्ध, बृंहण और कफको कुपित करे है ॥ २४२ ॥

शकुलमत्स्यगुणाः ।

शकुलो मधुरो ग्राही रूक्षः पित्तास्रजिद्गुरुः ॥२४३॥

अर्थ–शकुलमछली–मधुर, मलरोधक, रूखी, रक्तपित्तनाशक और भारी है ॥ २४३ ॥

वर्मुपमत्स्यगुणाः ।

वर्मुपो वातहा स्निग्धो ग्राही दोषविनाशनः ॥२४४॥

अर्थ–वर्मुपमछली–वातहारक, स्निग्ध, मलरोधक और त्रिदोषसंहारक है ॥ २४४ ॥

वर्मिमत्स्यगुणाः ।

वर्मिमत्स्यो गुरुर्वृष्यः कषायो रक्तपित्तहा ॥२४५॥

अर्थ–वर्मिमछली–भारी, वीर्य्यवर्द्धक, कषेली और रक्तपित्तनाशक है ॥ २४५ ॥

फलिमत्स्यगुणाः ।

फलिः स्वादुर्गुरुः स्निग्धो बलकृच्छुक्रवर्द्धनः॥२४६॥

अर्थ–फलिमछली–स्वादिष्ट, भारी, स्निग्ध, बलकारी और शुक्रवर्द्धक है ॥ २४६ ॥

चिडंगमत्स्यगुणाः ।

चिडङ्गस्तु गुरुर्ग्राही मधुरो बलवर्द्धनः ।
मेदःपित्तास्रजिद्वृष्यो रोचनः कफवातलः ॥२४७॥

अर्थ–चिडिंगमछली–भारी, ग्राही, मधुर, बलवर्द्धक, मेददोषनिवारक, रक्तपित्तनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, रोचक तथा कफ और वातवर्द्धक है ॥ २४७ ॥

कवपीमत्स्यगुणाः ।

कवपी मधुरा स्निग्धा बल्या वातकफापहा ॥२४८॥

अर्थ–कवपीमच्छली–मधुर, स्निग्ध, बलकारक तथा वात और कफनाशक है ॥ २४८ ॥

शकलीमत्स्यगुणाः ।

शकली रोहिताकारा भूमौ प्रायश्चरत्यसौ ।
गुर्वी पाके च मधुरा भेदिनी दोषकोपनी ॥ २४९ ॥

अर्थ–शकलीमछली–रोहितमछलीकी समान आकारवाली

होती है । यह मछली प्राय भूमिमें विचरती है । भारी, पचनेमें मधुर, भेदक और त्रिदोषको कुपित करनेवाली है ॥२४९॥

गडिशमत्स्यगुणाः ।

गडिशो मधुरो ग्राही बल्यो वह्निप्रदो गुरुः ॥२५०॥

अर्थ–गडिशमछली–मधुर, मलरोधक, बलकारक, अग्निदीपक और भारी है ॥ २५० ॥

चन्द्रकमत्स्यगुणाः ।

चन्द्रकस्त्वनभिष्यन्दी मधुरो बलवर्द्धनः ॥ २५१ ॥

अर्थ–चन्द्रकमछली–अनभिष्यन्दी, मधुर और बलवर्द्धक है ॥ २५१ ॥

चम्पकुन्दमत्स्यगुणाः ।

चम्पकुन्दो गुरुर्वृष्यो मधुरो वातपित्तजित् ।
शुक्रलो बलकृत्प्रोक्तः स्नेहनः श्लेष्मकोपनः ॥२५२॥

अर्थ–चम्पकुन्दमछली–भारी, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, वातपित्तनाशक, शुक्रजनक, बलकारक, स्नेहयुक्त और कफको कुपित करे है ॥ २५२ ॥

दण्डिमत्स्यगुणाः ।

दण्डिकः कफजित्तिक्तो वातपित्तहरो लघुः ॥२५३॥

अर्थ–दण्डिकमछली–कफनाशक, वातनिवारक, पित्तहारक और हलकी है ॥२५३ ॥

त्रिकण्टकमत्स्यगुणाः ।

त्रिकण्टः पित्तदो रूक्षो दीपनः कफजिल्लघुः ॥२५४॥

अर्थ–त्रिकण्टकमछली–पित्तनाशक, रूखी, दीपन, कफनाशक और हलकी है ॥ २५४ ॥

मलङ्गीमत्स्यगुणाः ।

मलङ्गी मधुरा हृद्या वातघ्नी श्लेष्मला गुरुः ॥२५५॥

अर्थ–मलंगी मछली–मधुर, हृदयको हितकारी,वातनाशक, कफकारक और भारी है ॥ २५५ ॥

खलिशमत्स्यगुणाः ।

खलिशः कथितो बल्यो वातपित्तकफापहा ।
रूक्षो लघुः शूलहरः किञ्चिदामविनाशनः ॥२५६॥

अर्थ–खलिशमछली–बलकारक,वात-पित्त-कफनाशक, रूखी,हलकी,शूलनिवारक और किंचित् आमनाशक है ॥२५६॥

चलदङ्गमत्स्यगुणाः ।

चलदङ्गोनभिष्यन्दी हितो वातेषु रोचनः ॥ २५७॥

अर्थ–चलदङ्गमछली–अनभिष्यन्दी, वातरोगमें हितकारी और रोचन है ॥ २५७ ॥

गडकमत्स्यगुणाः ।

गडको मधुरो रूक्षः कषायः शीतलो लघुः ॥२५८॥

अर्थ–गडकमछली–मधुर,रूखी, कषेली,शीतल तथा हलकी है ॥ २५८ ॥

पर्वतमत्स्यगुणाः ।

पार्वतो वातहा स्निग्धः शुक्रलो बलवर्द्धनः ॥२५९ ॥

अर्थ–पर्वतीमछली–वातविनाशक, स्निग्ध, शुक्रजनक और बलवर्द्धक है ॥ २५९ ॥

वाचमत्स्यगुणाः ।

वाचः स्वादुर्गुरुः स्निग्धः श्लेष्मलो वातपित्तजित्॥२६०

अर्थ—वाचमछली—स्वादिष्ठ, भारी, स्निग्ध, कफकारी, वातघ्न और पित्तहारी है ॥ २६० ॥

एलङ्गमत्स्यगुणाः ।

एलङ्गो मधुरो वृष्यः संग्राही कफवातजित्॥२६१॥

अर्थ—एलंग मछली—मधुर, वीर्यवर्द्धक, मलरोधक, कफ और वातविनाशक है ॥ २६१ ॥

वल्लीगडमत्स्यगुणाः ।

वल्लीगडो लघू रूक्षोऽनभिष्यन्दी मरुत्करः ॥२६२॥

अर्थ—वल्लीगड मछली—हलकी, रूखी, अनभिष्यन्दी और वातकारक है ॥ २६२ ॥

चिलचिममत्स्यगुणाः ।

मत्स्यश्चिलचिमो ग्राही कषायो वातकोपनः॥२६३॥

अर्थ—चिलचिम मछली—मलरोधक, कषेली और वातको कुपित करे है ॥ २६३ ॥

गवाटीमत्स्यगुणाः ।

गवाट्यजीर्णाजननी गुर्वी श्लेष्मप्रकोपनी ॥ २६४ ॥

अर्थ—गवाटी मछली—अजीर्णाजनक, भारी और कफकारी है ॥ २६४ ॥

क्षुद्रशफरीमत्स्यगुणाः ।

प्रोष्ठी तिक्ता कटुः स्वादुः शुक्रला कफवातजित् २६५

अर्थ—क्षुद्रशफरी—कडवी, चरपरी, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, तथा कफ और वातविनाशक है ॥ २६५ ॥

पोताधानमत्स्यगुणाः ।

पोताधानस्तु सर्वेषां सुस्निग्धो लघुरोचनः ॥२६६ ॥

अर्थ—पोताधाननामक सर्वप्रकारकी मछलियोंके गुण—स्निग्ध, लघु और रोचक हैं ॥ २६६ ॥

मत्स्यादिडिम्बगुणाः ।

मत्स्यकूर्म्मखगाण्डानि स्वादुवाजिकराणि च ।
कटुपाकानि रुच्यानि वातश्लेष्मकराणि च ॥२६७॥

अर्थ—मछली, कछुए, पक्षी, इनके अंडे—स्वादिष्ठ, अत्यन्त रतिशक्तिवर्द्धक, पाकमें चरपरे, रुचिकारक तथा वात और श्लेष्मकारक हैं ॥ २६७ ॥ इति मत्स्यगुणाः ॥

मांसगुणमाह ।

मांसं वातहरं वृष्यं बृंहणं वलवर्द्धनम् ।
प्रीणनं गुरु हृद्यं च मधुरं रसपाकयोः ॥ २६८ ॥

अर्थ—मांस—वातविनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, वलवर्द्धक, तृप्तिकारक, भारी, हृदयको हितकारी और रस तथा पाकमें मधुर है॥२६८

स्थानक्रियादिभेदे मांसानां जातिभेदमाह ।

प्रसह्य भक्षयन्त्येते प्रसहास्तेन सञ्ज्ञिताः ।
भूशया विलशायित्वादानूपोऽनूपसंश्रयात् ॥ २६९ ॥
जले निवासाज्जलजा जलेचर्य्या जलेचराः ।
स्थलजा जाङ्गलाः प्रोक्ता मृगा जङ्गलचारिणः॥२७०

विकीर्यविष्किराश्चैव प्रतुद्यप्रतुदा मताः ।
योनिरष्टविधा तेषां मांसानां परिकीर्तिता ॥ २७१॥

अर्थ–जे पक्षी किञ्चिन्मात्रभी समयका अतिक्रम नहीं करके भक्षण करते हैं, अथवा दूसरेसे छीनकर खाते हैं, वे पक्षी प्रसह जातीके हैं। जे पशु भूमिकामें गर्त्त होकर निवास करते हैं उनको भूशय कहते हैं। जलाशयके निकट रहनेवाले पशुओंको आनूप कहते हैं। जे जन्तू जलमें निवास करते हैं उनको जलज कहते हैं। जे जलमें विचरण करते हैं उनको जलचर कहते हैं। स्थलमें रहनेवाले पशुओंको जांगल कहते हैं। जे पक्षी खानेकी वस्तुको चोंचसे बखेर २ खाते हैं वे विष्किर जातिके हैं। जे आहारके पदार्थको चोंचके द्वारा तोड २ खाते हैं उनको प्रतुद कहते हैं। इसप्रकार प्रसहादिके भेदसे मांसकी आठ जाती हैं ॥ २६९ ॥ २७० ॥ २७१ ॥

नामभेदेन तेषां जातिभेदः।

तत्र प्रसहा कुररश्येनादयः। भूशया नकुलगोधादयः। आनूपाः खड्गिमहिषवराहादयः। जलजाः कुम्भीरशिशुमारादयः ॥ २७२ ॥
जलेचरा मद्गुहंसप्रभृतयः। जाङ्गला हरिणच्छागादयः। विष्किरास्तित्तिरिमयूरकुक्कुटादयः । प्रतुदाः कपोतपारावतादयः ॥ २७३ ॥

अर्थ–कुरर(कुंज), बाज इत्यादि पक्षी प्रसहजातीके हैं। नकुल (नौला), गोधा (गोय) इत्यादिको भूशय कहते हैं।

गैंडा, भैंस और शूकरादिको आनूप कहते हैं । नाका और घडियालादिककी जलज जाती है । मद्गु और हंसादिकी जलचर जाती है । हिरण और छागादिकी जांगल जाती है । तीतर, मोर और मुरगा इत्यादिकी विष्किर जाती है । कबूतर और पिडिकिया इत्यादिको प्रतुद कहते हैं ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

प्रसहादिजलचरान्तानां मांसानां सामान्यगुणाः ।

प्रसहा भूशयानूपवारिजा वारिचारिणः ।
गुरूष्णा मधुराः स्निग्धा वातघ्नाः शुक्रवर्द्धनाः २७४

अर्थ–प्रसह, भूशय, आनूप, जलज और जलचरादिकोंका मांस–भारी, गरम, मधुर, स्निध, वातविनाशक और शुक्रवर्द्धक है ॥ ७४ ॥

विष्किरादिजाङ्गलान्तानां मांसानां सामान्यगुणाः ।

लावाद्यो विष्किरो वर्गः प्रतुदा जाङ्गला मृगाः ।
लघवः शीतमधुराः सकषायाऽहिता नृणाम् ॥२७५॥

अर्थ–लावादि विष्किरवर्ग, प्रतुद तथा जांगल जातीके पशुओंका मांस–हलका, शीतल, मधुर, कषेला और मनुष्योंको अहितकारक है ॥ २७५ ॥

सामान्येनोपदिष्टानां मांसानां स्वगुणैः पृथक् ।
केषान्तु गुणवैशिष्टयात् विशेष उपदेक्ष्यते ॥२७६॥

अर्थ–सर्वमांस साधारणसे एकही गुणवाले हैं और प्रत्येकके पृथक् २ गुण हैं । इसलिये पशु, पक्षी तथा जलचरादिकोंमें किसी२ गुणविशेषमे मांसके गुण पृथक्२ रूपमें कहे हैं॥७६॥

हरिणमांसगुणाः।

हरिणः शीतलो बद्धविण्मूत्रो दीपनो लघुः।
रसे पाके च मधुरः सुगन्धिः सन्निपातहा ॥२७७॥

अर्थ–हिरणका मांस–शीतल, मलमूत्ररोधक, अग्निप्रदीपक, हलका, मधुर, पाकमेंभी मधुर, सुगन्धित और सन्निपातनाशक है ॥ २७७ ॥

कृष्णहरिणमांसगुणाः।

एणः कषायो मधुरः पित्तासृक्कफनाशनः।
संग्राही रोचनो हृद्यो बलकृत् ज्वरनाशनः॥ २७८॥

अर्थ–काले हिरणका मांस–कषेला, मधुर, रक्तपित्तनिवारक, कफनाशक, ग्राही, रुचिदायक, हृदयको हितकारी, बलकारक और ज्वरहारक है ॥ २७८ ॥

कृष्णसारमांसगुणाः।

संग्राही रोचनो बल्यः कृष्णसारो ज्वरापहः॥ २७९॥

अर्थ–कृष्णसारमृगका मांस–संग्राही, रुचिकारक, बलवर्द्धक और ज्वरनाशक है ॥ २७९ ॥

शशकमांसगुणाः।

शशः स्वादुः कषायश्च बद्धविट् शीतलो लघुः।
शोथातिसारपित्तासृङ्नाशनो रूक्ष एव च ॥ २८०॥

अर्थ–खरगोसका मांस–कषेला, स्वादिष्ठ, मलरोधक, शीतल, हलका तथा सूजन, अतिसार और रक्त-पित्तनाशक है। और रूखा है॥ २८१ ॥

छागमांसगुणाः ।

छागमांसं परं हृद्यं बृंहणं बलवर्द्धनम् ।
स्निग्धं मृद्वनभिष्यन्दि नात्युष्णं धातुसाम्यकृत् २८१

अर्थ–बकरेका मांस–हृदयको हितकारी, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, स्निग्ध, मृदु (नरम), अनभिष्यन्दी, किञ्चित् उष्ण और धातुसाम्यकारक है ॥ २८१ ॥

मेषमांसगुणाः ।

मेषस्य बृंहणं मांसं पित्तश्लेष्मकरं गुरु ॥ २८२ ॥

अर्थ–भेडका मांस–पुष्टिजनक, पित्त और श्लेष्मकारक तथा भारी है ॥ २८२ ॥

वराहमांसगुणाः ।

वराहपिशितं वृष्यं वातघ्नं बलवर्द्धनम् ॥ २८३ ॥

अर्थ–सूअरका मांस–वीर्य्यवर्द्धक, वातविनाशक और बलवर्द्धक है ॥ २८३ ॥

माहिषमांसगुणाः ।

माहिषं तर्पणं बल्यं स्निग्धोष्णं मधुरं गुरु ।
निद्रापुंस्त्वबलस्तन्यवर्द्धनं मांसदार्ढ्यकृत् ॥२८४॥

अर्थ–भैंसका मांस–तृप्तिदायक, बलकारक, स्निग्ध, गरम, मधुर, भारी तथा निद्रा, पुरुषता, बल और स्तनोंमें दूध बढानेवाला है । तथा शरीरके मांसको दृढ करनेवाला है ॥२८४ ॥

खड्गिमांसगुणाः ।

खड्गिमांसं कफच्छेदि कषायमनिलापहम् ।
पैत्र्यं पवित्रमायुष्यं बद्धमूत्रं विरूक्षणम् ॥ २८५ ॥

अर्थ-गेंडेका मांस-कफनाशक, कषेला, वातविनाशक, पितरोंको प्रसन्न करनेवाला, पवित्र, अवस्थास्थापक, मूत्ररोधक, और रूखा है ॥ २८५ ॥

गोमांसगुणाः।

गव्यं पवित्रमायुष्यं श्रमघ्नमनिलापहम् ॥ २८६ ॥

अर्थ-गायका मांस-पवित्र, आयुवर्द्धक, श्रम और वातविनाशक है ॥ २८६ ॥

गोधिकामांसगुणाः।

गोधा विपाके मधुरा कषाया कटुका रसे ।
वातपित्तहरा वल्या बृंहणी बलवर्द्धिनी ॥ २८७॥

अर्थ-गोधका मांस-पचनेमें मधुर, कषेला, चरपरा, वातपित्तनाशक, बलकारक, बाजीकरण और बलवर्द्धक है॥२८७॥

कूर्म्ममांसगुणाः।

कूर्म्मो वातहरो वृष्यश्चक्षुष्यो बलवर्द्धनः ।
मेधास्मृतिकरः पथ्यः शोथघ्नो दोषनाशनः ॥२८८॥
भूतिस्तेषां तु पित्तघ्नी पादस्तेषां कफापहः॥२८९॥

अर्थ-कछुवेका मांस-वातविनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, बलवर्द्धक, मेधाकारक, स्मरणशक्तिवर्द्धक, पथ्य, शोथको दूर करनेवाला और त्रिदोषनाशक है। इसकी नाडी पित्तनाशक और इसके पांव कफघ्न हैं ॥ २८८ ॥ २८९ ॥

मूषिकमांसगुणाः।

मधुरो मूषिकः स्निग्धो व्यवायी शुक्रवर्द्धनः॥२९०॥

अर्थ–मूसेका मांस–स्निग्ध, व्यवायी और शुक्रवर्द्धक है ॥ २९० ॥

अश्वमांसगुणाः ।

हयमांसं बलकरमुष्णं मारुतनाशनम् ॥ २९१ ॥

अर्थ–घोडेका मांस–बलकारक, गरम और वातविनाशक है ॥ २९१ ॥

गवयमांसगुणाः ।

गवयस्यापि मांसं च स्निग्धं कासनिबर्हणम् ।
रसे पाके च मधुरं व्यवायि स्तन्यवर्द्धनम् ॥ २९२ ॥

अर्थ–गवयका मांस–स्निग्ध, कासनाशक, मधुर, पाकमेंभी मधुर, व्यवायी और स्तनोंमें दूध बढानेवाला है ॥ २९२ ॥

कर्कटमांसगुणाः ।

कर्कटः सृष्टविण्मूत्रः सन्धातानिलपित्तजित् ।
कृष्णकर्कटकस्तेषां बल्यः कोष्णोनिलापहः ॥ २९३ ॥

अर्थ–केकडेका मांस–मल-मूत्रको निकालनेवाला, भग्नसंधानकारक, वात और पित्तनाशक है । कालेरंगके केकडेका मांस–बलकारक, किञ्चित् उष्ण और वातनाशक है ॥ २९३ ॥

तित्तिरिमांसगुणाः ।

तित्तिरिः सर्वदोषघ्नो ग्राही वर्णप्रसादनः ।
मधुरो रोचनो वृष्यो मेधाग्निबलवर्द्धनः ॥ २९४ ॥

अर्थ–तीतरका मांस–त्रिदोषनाशक, मलरोधक, वर्णको प्रसन्नताजनक, मधुर, रुचिकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा मेधा और अग्नि, तथा बलवर्द्धक है ॥ २९४ ॥

कपिञ्जलमांसगुणाः ।

कपिञ्जलो लघुः शीतः कफासृक्पित्तहाग्निदः ॥२९५

अर्थ–कपिञ्जलका मांस–हलका, शीतल, कफ और रक्तपित्तनाशक और अग्निवर्द्धक है ॥२९५॥

क्रकरचक्रोपचक्रिकानां मांसगुणाः ।

क्रकरा लघवो हृद्यास्तथा चक्रोपचक्रिकाः ।
वीर्य्योष्णाः कटुपाकाश्च बल्या दीप्तिकरा मताः॥२९६

अर्थ–क्रकरका मांस–हलका और हृदयको हितकारी है। चक्र (चकवा) और उपचक्रके मांसके गुणभी क्रकरकी समान हैं। तथा उष्णवीर्य्य, पचनेमें चरपरा, बलकारक और अग्निदीपक है ॥ २९६ ॥

चटकमांसगुणाः ।

कुलिङ्गो मधुरः स्निग्धो व्यवायी बलवर्द्धनः ।
सन्निपातहरो वेश्मकुलिङ्गस्त्वतिशुक्रलः ॥२९७॥

अर्थ–कुलिंग (चिडिया) पक्षीका मांस–मधुर, स्निग्ध, व्यवायी, बलवर्द्धक, सन्निपातनाशक और अत्यन्त शुक्रको उत्पन्न करे है ॥ २९७ ॥

पारावतमांसगुणाः ।

पारावतो रसे पाके स्वादुः शीतोऽस्रपित्तहा ।
गुरुः कषायो विषदो बलोपचयकृत्परः ॥ २९८ ॥

अर्थ–पारावतपक्षीका मांस–रसमें स्वादिष्ठ, पचनेमेंभी स्वादिष्ठ, शीतल, रक्तपित्तनाशक, भारी, कपेला, विषद तथा बल और स्थूलतावर्द्धक है ॥२९८॥

कपोतमांसगुणाः ।

कपोतो मधुरः शीतः कषायो वातपित्तजित् ॥ २९९ ॥

अर्थ–कबूतरका मांस–मधुर, शीतल, कषेला और वातपित्तनाशक है ॥ २९९ ॥

हरितालमांसगुणाः ।

हरितालोऽल्पविट् स्यात्कषायो विषदो लघुः ।
रक्तपित्तप्रशमनस्तृष्णाघ्नो वातकोपनः ॥३००॥

अर्थ–हरिताल (परेवा) पक्षीका मांस–अल्प मलकारक, कषेला, विषद, हलका, रक्तपित्तनाशक, तृषानिवारक और वातको कुपित करे है ॥ ३०० ॥

कुक्कुटमांसगुणाः ।

कुक्कुटो मधुरो वृष्यः स्निग्धोष्णबलकृद्गुरुः ॥ १ ॥

अर्थ–मुरगेका मांस–मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध,गरम, बलकारी और भारी है ॥ १ ॥

वन्यकुक्कुटमांसगुणाः ।

कुक्कुटो वनजो रूक्षः कषायः स्वादुशीतलः ॥ २ ॥

अर्थ–वनमुरगेका मांस–रूखा, कषेला, स्वादिष्ठ और शीतल है ॥ २ ॥

कुक्कुटाण्डगुणाः ।

कुक्कुटाण्डं तु मधुरं बलकृद्वह्निदीपनम् ॥ ३ ॥

अर्थ–मुरगेका अंडा–मधुर, बलवर्द्धक और जठराग्निप्रदीपक है ॥ ३ ॥

हंसमांसगुणाः ।

हंसो वातहरो वृष्यः स्वर्यो मांसबलप्रदः ॥ ४ ॥

अर्थ—हंसका मांस—वातविनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, तथा मांस और बलवर्द्धक है ॥ ४ ॥

हंसाण्डगुणाः ।

हंसबीजं परं वृष्यं बृंहणं वातकोपनम् ।
पाके लघुतरं प्रोक्तं सर्वामयविनाशनम् ॥ ५ ॥

अर्थ—हंसका अंडा—अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, वाजीकरण, वातको कुपित करनेवाला, पचनेमें हलका और सर्वरोगनाशक है ॥ ५ ॥

लावमांसगुणाः ।

लावो लघुः कटुर्ग्राही स्वादुः शीतस्त्रिदोषनुत् ॥ ६ ॥

अर्थ—लवापक्षीका मांस—हलका, चरपरा, मलरोधक, स्वादिष्ठ, शीतल और त्रिदोषनाशक है ॥ ६ ॥

वर्त्तिकामांसगुणाः ।

वर्त्तिका मधुरा रूक्षा कफमारुतनाशिनी ॥ ७ ॥

अर्थ—वर्त्तिका (वत्तक) पक्षीका मांस—मधुर, रूखा और वातनाशक है ॥ ७ ॥

शुकमांसगुणाः ।

शुकमांसं परं बल्यं विपाके गुरु शीतलम् ।
कासश्वासक्षयहरं संग्राहि लघु दीपनम् ॥ ८ ॥

अर्थ—तोतेका मांस—बलकारक, पचनेमें भारी, शीतल, तथा

खांसी, श्वास और क्षयरोगका क्षय करे है, मलरोधक, दीपन और हलका है ॥ ८ ॥

मयूरमांसगुणाः ।

मयूरः श्रोत्रनेत्राग्निमेधावर्णस्वरायुषाम् ।
हितो बल्यो गुरुश्चोष्णो वातघ्नः शुक्रमांसदः ॥९॥

अर्थ-मोरका मांस-कर्ण, नेत्र, अग्नि, मेधा, वर्ण, स्वर और आयुको हितकारी है, बलवर्द्धक, भारी, गरम, वातविनाशक, शुक्रजनक और मांसवर्द्धक है ॥ ९ ॥

मयूरमांसभक्षणकालनिर्णयः ।

हेमन्तकाले शिशिरे वसन्ते सेव्यं हि मायूरमुशन्ति मांसम् । उष्णो हि बर्ही विषभोजनाच्च वर्षाशरद्ग्रीष्ममुखेष्वपथ्यम् ॥ ३१० ॥

अर्थ-हेमन्त, शीत और वसन्त ऋतुमें मयूरका मांस भक्षण करना चाहिये. शरद और ग्रीष्म ऋतुमें मयूर विषका भोजन करते हैं इसकारण उनका मांस शरद् और ग्रीष्म ऋतुमें अत्यन्त उष्ण होता है, इसलिये उक्त ऋतुमें मोरका मांस भक्षण करना अहितकारी कहा है ॥ ३१० ॥

शरार्यादीनां मांसगुणाः ।

शरारिमद्गुकादम्बबलाकाः पवनापहाः ।
स्निग्धाः सृष्टमला वृष्या रक्तपित्तहरा हिमाः ॥ ११ ॥

अर्थ-शरारी, मद्गु, कादम्ब और बलाकादि पक्षियोंका मांस-वातनाशक, स्निग्ध, मलको निकालनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, रक्तपित्तनाशक और शीतल है ॥ ११ ॥

गुरुभक्ष्या बहुभुजो ये चोपचितमेदसः।
एकदेहेपि पूर्वार्द्धं मृगाणां पक्षिणां परम्॥ १२ ॥

अर्थ-भारी पदार्थोंको भक्षण करनेवाले और बहुत भोजन करनेवाले तथा संचित मेदयुक्त पशुपक्षियोंका पूर्वार्द्ध-श्रेष्ठगुण विशिष्ट है ॥ १२ ॥

मांसानां शिरस्कन्धादीनां यथोत्तरं गुरुत्वमाह।

सर्वेषां च शिरस्कन्धप्लीहचर्मयकृद्दन्तदम्।
पादपुच्छान्त्रमस्तिष्कमुष्कक्रोडाः समेहनाः॥१३॥
धातवः शोणिताद्याश्च गुरवः स्युर्यथोत्तरम्॥ १४॥

अर्थ-सर्व प्रकारके पशु और पक्षीयोंका मस्तक, कन्धा, प्लीहा, चर्म्म, यकृद्, पाँव, पूंछ, मस्तिष्क, अण्डकोष, क्रोड, लिंग और रक्तादि यह सर्व एक २ से भारी हैं, अर्थात् मस्तकसे कन्धा, कन्धेसे प्लीहा, प्लीहासे चर्म्म, चर्म्मसे यकृद् और यकृद्-से पाद भारी हैं इत्यादि ॥ १३ ॥ १४ ॥

ग्राह्यमांसकथनम्।

वयस्थं निर्विषं सद्योहतं मांसं प्रशस्यते॥ १५॥

अर्थ-तरुण, विषरहित तथा तत्कालके मारे हुवे पशु-पक्षीयोंका मांस प्रशंसायोग्य है, अर्थात् ऐसा मांस मांसाहारीयों-के लिये भक्षण करना कहा है ॥ १५ ॥

त्याज्यमांसकथनम्।

मृतं च व्याधितं व्युष्टं वृद्धं बालं विषैर्हतम्।
अगोचरहतं व्याडं मृदितं मांसमुत्सृजेत्॥ १६॥

अर्थ-मृत, व्याधियुक्त, वृद्ध, बालक, विषसे मरा हुवा, अगोचर मरा हुवा, और व्याडादि जीवोंका मांस, तथा बासी और पेषित मांस, भक्षण नहीं करना चाहिये ॥ १६ ॥

अथ मद्यवर्गमाह।

मद्यसाधारणगुणाः।

प्रकृत्या मद्यमम्लोष्णमम्लं चोष्णं विपाकतः।
सर्वं सामान्यतस्तस्य विशेष उपदेक्ष्यते ॥ १७ ॥

अर्थ-सर्वप्रकारकी मदिरा-सामान्यपनेसे गरम और अम्लस्वभाववाली है, तथा अम्ल और उष्णपाकी है आगे विशेष गुण कहते हैं ॥ १७ ॥

सुराप्रयोगविधिः।

कृशानां रक्तमूत्राणां ग्रहण्यर्शोविकारिणाम्।
सुरा प्रशस्ता वातघ्नी स्तन्यरक्तक्षयेषु च ॥ १८ ॥

अर्थ-कृश, रक्त, मूत्र, संग्रहणी और अर्श (बवासीर) रोगवालोंको सुरा-अत्यन्त उपकारी है। तथा वात, स्तन्य और रक्तक्षयरोगको हरनेवाली है ॥ १८ ॥

श्वेतमद्यगुणमाह।

कासार्शोग्रहणीदोषप्रतिश्यायविनाशिनी।
श्वेतमूत्रकरा स्तन्यरक्तमांसकरी सुरा ॥ १९ ॥
छर्द्यरोचकहृत्कुक्षितोदशूलप्रमर्दिनी ॥ २० ॥

अर्थ-श्वेतसुरा-खांसी, बवासीर, संग्रहणी और प्रतिश्यायरोगनाशक है, मूत्रको सफेद करनेवाली, स्तनोंमें दूध बढानेवाली,

रक्तवर्द्धक, मांसवर्द्धक तथा वमन, अरुचि, हृदयरोग, कोखकी पीडा और शूलको दूर करनेवाली है ॥ १९ ॥ ३२० ॥

प्रसन्नागुणमाह ।

प्रसन्ना गुल्मवातार्शोविबन्धानाहनाशिनी ।
शूलं प्रवाहिकाटोपकफवातार्शसां हिता ॥ २१ ॥

अर्थ–प्रसन्ना–गुल्म, वात, बवासीर, विबन्ध, आनाह, शूल, प्रवाहिका, आटोप, कफ और वातार्श(वादीकी बवासीर) को दूर करनेवाली है ॥ २१ ॥

जगलमद्यगुणाः ।

जगलो ग्राहिरूक्षोष्णः शोफघ्नो भक्तरोचनः ।
शोथार्शोग्रहणीदोषान् हन्त्यरिष्टः कफामयान् ॥२२॥

अर्थ–जगलमदिरा–मलरोधक,रूखी,गरम,शोफनाशक,अन्नमें रुचि करनेवाली, तथा सूजन, बवासीर, संग्रहणी और कफरोगको दूर करनेवाली है ॥ २२ ॥

अभिनवमद्यगुणाः ।

प्रायशोभिनवं मद्यं गुरु दोपलमीरितम् ।
स्रोतसां शोधनं जीर्णं दीपनं लघु रोचनम् ॥ २३ ॥
हर्षणं प्रीणनं बल्यं मद्यं शोकश्रमापहम् ।
प्रागल्भ्यप्रतिभाकान्तितुष्टिपुष्टिस्वरप्रदम् ॥ २४ ॥

अर्थ–नवीन मदिरा–भारी, त्रिदोषवर्द्धक और शिराशोधक है । पुरानी मदिरा–दीपन, हलकी, रुचिकारक तथा हर्ष, तृप्ति और बलवर्द्धक है । शोक और श्रमनाशक है और प्रागल्भ्य, प्रतिभा, कान्ति, तुष्टि, पुष्टि और स्वरजनक है ॥ २३॥२४॥

काञ्जिकगुणाः ।

काञ्जिकं भेदि तीक्ष्णोष्णं पित्तकृत्स्पर्शशीतलम् ।
श्रमक्लमहरं रुच्यं दीपनं बस्तिशोधनम् ॥ २५ ॥
दीपनं जरणीयं च हृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥ २६ ॥

अर्थ—कांजी—दस्तावर, तीक्ष्ण, गरम, पित्तकारक, स्पर्शमें शीतल, श्रमघ्न, क्लमनाशक, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, बस्तिशोधक, जीर्णकारक तथा हृदयरोग, पाण्डु और कृमिरोगनाशक है ॥ २५ ॥ २६ ॥

सौवीरगुणाः ।

ग्रहण्यर्शोविकारघ्नं सौवीरं मलभेदनम् ॥ २७ ॥

अर्थ—सौवीर (कांजी)—संग्रहणी और अर्शनाशक है, तथा मलभेदक है ॥ २७ ॥

तुषोदकगुणाः ।

शीतवातहरं युक्त्या प्रमेहघ्नं तुषोदकम् ॥ २८ ॥

अर्थ—तुषोदक—शीतल, वातनाशक और प्रमेहको हरनेवाली है ॥ २८ ॥

सिद्धार्थतैलभृष्टतुषोदकगुणाः ।

सिद्धार्थतैलसंभृष्टं दश रोगान् व्यपोहति ।
कासं श्वासातिसारं च पाण्डुरोगं सकामलम् ॥२९॥
आमं च गुल्मशूलं च पार्श्वशूलं सवेदनम् ।
अर्शांसि श्वयथुं चैव भुक्ते पीते च शाम्यति॥३०॥

अर्थ—सर्षपतैलभृष्ट तुषोदक—खांसी, श्वास, अतिसार, का-

मलयुक्त पाण्डुरोग, आम, गुल्म, शूल, वेदनायुक्त पार्श्वशूल, बवासीर और सूजन इन दश रोगोंका नाश करे है॥२९॥३०॥

मूत्रगुणाः।

मूत्रं तीक्ष्णोष्णलवणं पित्तकृत्कटुकं लघु।
रूक्षं कृम्युदरानाहशोथार्शोविषकुष्ठनुत्॥ ३१॥

अर्थ—मूत्र—तीक्ष्ण, गरम, लवणरसयुक्त, पित्तजनक, चरपरा, हलका, रूखा तथा कृमि, उदररोग, आनाह, सूजन, बवासीर, विष और कुष्ठको नष्ट करे है॥ ३१॥ इति मद्यवर्गः॥

अथ मधुवर्गमाह।

मधुनः सामान्यगुणाः।

मधु शीतं मृदु स्वादु त्रिदोषघ्नं व्रणापहम्।
कषायानुरसं रूक्षं चक्षुष्यं श्वासकासनुत्॥ ३२॥

अर्थ—मधु—शीतल, मृदु, स्वादिष्ठ, त्रिदोषनाशक, व्रणविनाशक, किञ्चित् कषेला, रूखा, नेत्रोंको हितकारी तथा श्वास और खांसीको दूर करे है॥ ३२॥

मधुनः जातिभेदः।

पौत्तिकं भ्रामरं क्षौद्रं माक्षिकं छात्रमेव च।
आर्घ्यमौद्दालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः॥ ३३॥

अर्थ—मधु—पौत्तिक, भ्रामर, क्षौद्र, माक्षिक, छात्र, आर्घ्य, औद्दालक और दाल इन भेदोंसे आठ प्रकारका है॥ ३३॥

मधूनां उत्पत्तिकथनम्।

पिङ्गला मक्षिका ज्ञेया महत्यल्पा च सा द्विधा।
महती पूतिकानाम्नी स्वल्पा क्षुद्रेति कथ्यते॥३४॥

अर्थ—पिंगलवर्ण मक्षिका—बृहत और क्षुद्र इन भेदोंसे दो प्रकारकी है । तहां बृहत् मक्षिका पुत्तिका और क्षुद्र मक्षिका क्षुद्रा नामसे कही जाती है ॥ ३४ ॥

मध्यमा मक्षिका नीला मक्षिकेत्यभिधीयते ।
पुत्तिका भ्रमरा क्षुद्रा मक्षिकासम्भवं मधु ॥ ३५ ॥

अर्थ—मध्यमाकृति नीलवर्णमक्षिका—मक्षिका नामसे प्रसिद्ध है । पुत्तिका, भ्रमर, क्षुद्रा और मक्षिका इन चार प्रकारकी मक्खीयोंसे चारप्रकारके मधुकी उत्पत्ति होती है, अर्थात् पुत्तिका नामवाली मक्खीसे पौत्तिक, भ्रमरसे भ्रामर, क्षुद्रासे क्षौद्र और मक्षिकासे माक्षिक नामवाले मधुकी उत्पत्ति होती है ॥ ३५ ॥

पौत्तिकादुच्यते छात्रं वरटीछत्रसम्भवम् ।
तपोवने जरत्कारोरार्घ्यं मधु तरूद्भवम् ॥ ३६ ॥

अर्थ—वरटी छत्रोत्पन्न मधुको छात्र कहते हैं । जिस वनमें जरत्कारमुनिने तप किया था उस वनमें जो महुवेके वृक्ष हैं उन वृक्षोंसे जो उत्पन्न हुवा मधु उसको आर्घ्य कहते हैं ॥ ३६ ॥

औद्दालकं तु वल्मीककारिकीटविनिर्मितम् ।
दालमित्यभिनिर्दिष्टं वृक्षकोटरकीटजम् ॥ ३७ ॥

अर्थ—वल्मीककारी कीडोंसे बनाये हुवे मधुको औद्दालक कहते हैं और वृक्षकी कोटरोंमें रहनेवाले कीडोंसे बनाये हुवे मधुको दाल कहते हैं ॥ ३७ ॥

मधूनां लक्षणमाह ।

माक्षिकं तैलवर्णं स्यात् घृतवर्णं तु पौत्तिकम् ।
क्षौद्रं कपिलवर्णं स्यात् श्वेतं भ्रामरमुच्यते ॥ ३८ ॥

अर्थ–माक्षिक मधु–तेलके रंगका, पौत्तिक मधु घीके रंगका, क्षौद्रमधु भूरे रंगका और भ्रामर मधु सफेदरंगका होता है॥ ३८॥

पौत्तिकमधुगुणाः ।

पौत्तिकं तेषु वीर्य्योष्णं कषायानुरसान्वयात् ।
वातासृक्पित्तकृद्भेदि मदकृन्मधुरं मधु ॥ ३९ ॥

अर्थ–पौत्तिक मधु–उष्णवीर्य्य, किञ्चित्कषेला, वातरक्तरोगकारक, पित्तजनक, मदकारक और मधुर है ॥ ३९ ॥

भ्रामरमधुगुणाः ।

पैच्छिल्यात्स्वादुभूयस्त्वात् भ्रामरं गुरु कीर्त्तितम्३४०

अर्थ–भ्रामर मधु–पिच्छल, स्वादु और भारी है॥३४०॥

क्षौद्रमधुगुणाः ।

क्षौद्रं विशेषतो ज्ञेयं शीतलं लघु लेखनम् ॥ ४१ ॥

अर्थ–क्षौद्र मधु–अत्यन्त शीतल, हलका और दस्तावर है ॥ ४१ ॥

माक्षिकमधुगुणाः ।

तस्माल्लघुतरं रूक्षं माक्षिकं प्रवरं स्मृतम् ।
श्वासादिषु च रोगेषु प्रशस्तं तद्विशेषतः ॥ ४२ ॥

अर्थ–माक्षिक मधु–अत्यन्त हलका, रूखा, सर्वमधुओंमें उत्तम और श्वासादि रोगोंको हरनेवाला है ॥ ४२ ॥

छात्रमधुगुणाः ।

छात्रं श्वित्रकृमिहरं रक्तपित्तहरं गुरु ॥ ४३ ॥

अर्थ–छात्र मधु–श्वित्रकुष्ठ, कृमि और रक्तपित्तरोगनाशक है तथा भारी है ॥ ४३ ॥

आर्घ्यमधुगुणाः ।

आर्घ्यं चाक्षुष्यमायुष्यं कफपित्तामवातजित् ॥४४॥

अर्थ-आर्घ्य मधु-नेत्रोंको हितकारी, आयुवर्द्धक, तथा कफ, पित्त और आमवातनाशक है ॥ ४४ ॥

औद्दालकमधुगुणाः ।

औद्दालकं कषायोष्णं कटु कुष्ठविषापहम् ॥ ४५ ॥

अर्थ-औद्दालक मधु-कपेला, गरम, चरपरा तथा कुष्ठ और विषविनाशक है ॥ ४५ ॥

दालमधुगुणाः ।

दालं कफहरं रूक्षं दीपनं छर्दिमेहनुत् ॥ ४६ ॥

अर्थ-दालमधु-कफनाशक, रूखा, दीपन तथा वमन और प्रमेहनाशक है ॥ ४६ ॥

उष्णमधुनः निषिद्धता ।

उष्णमुष्णार्त्तमुष्णैश्च हन्यान्मधुविषान्वयात् ।
मधुन्युष्णो विरुध्यन्ते वर्जयित्वार्घ्यसम्भवम्॥ ४७॥

अर्थ-मधुमक्खी सहतको खाते समय विषयुक्त मधुको खा लेती हैं, इससे मधु उष्णगुणयुक्त होनेसे उष्णतासे पीडित किये हुवे मनुष्योंका नाश करता है । अतएव उष्णकार्य्यमें मधुव्यवहार करना नहीं चाहिये । परन्तु आर्घ्य मधु उष्णकार्य्यमें व्यवहार करना चाहिये कारण यह है कि इसमें विष नहीं होता ॥ ४७ ॥

अभिनवमधुगुणाः ।

बृंहणीयं मधु नवं वातश्लेष्महरं परम् ॥ ४८ ॥

अर्थ—नवीन मधु—वाजीकरण तथा वात और कफनाशक है ॥ ४८ ॥

पुरातनमधुगुणाः ।

पुराणं लघु संग्राहि निर्दोषं स्थौल्यनाशनम् ॥ ४९॥

अर्थ—पुराना मधु—हलका, ग्राही निर्दोष और स्थूलतानाशक है ॥ ४९ ॥

पक्वापक्वमधुगुणाः।

दोषत्रयहरं पक्वमाममम्लत्रिदोषकृत् ॥ ३५० ॥

अर्थ—पक्का मधु—त्रिदोषनाशक है। कच्चा मधु—अम्ल और त्रिदोषजनक है ॥ ३५० ॥

मधुजातशर्करागुणाः ।

मधुजा शर्करा रूक्षा तृष्णाछर्द्यतिसारजित्॥ ५१ ॥

अर्थ—सहतकी बनाई खांड—रूखी तथा तृषा, वमन और अतिसारनाशक है ॥ ५१ ॥ ॥ इति मधुवर्गः ॥

अथ क्षीरवर्गमाह ।

क्षीरं स्वादुरसं स्निग्धमोजस्यं धातुवर्द्धनम् ।
वातपित्तहरं वृष्यं श्लेष्मलं शीतलं गुरु ॥ ५२ ॥

अर्थ—दूध—स्वादिष्ठ, स्निग्ध,ओज और धातुवर्द्धक है, वातपित्तनाशक,वीर्य्यवर्द्धक,कफकारक, शीतल और भारी है॥५२॥

गोदुग्धगुणाः ।

गोक्षीरं जीवनं बल्यं रक्तपित्तानिलापहम् ।
आयुष्यं पुंस्त्वकृत्पथ्यं मेध्यं वृष्यं रसायनम् ॥५३॥

अर्थ–गायका दूध–प्राणरक्षक, बलकारक, रक्तपित्तनिवारक, वातविनाशक, अवस्थास्थापक, पुरुषताकारक, पथ्य, मेधाजनक, वीर्य्यवर्द्धक और रसायन है ॥ ५३ ॥

छागदुग्धगुणाः ।

छागक्षीरं तु मधुरं शीतलं ग्राहि दीपनम् ।
रक्तपित्तविकारघ्नं कासश्वासनिबर्हणम् ॥ ५४ ॥

अर्थ–बकरीका दूध–मधुर, शीतल, मलरोधक, अग्निप्रदीपक, रक्तपित्तनाशक तथा खाँसी और श्वासको हरनेवाला है ५४

छागीनामल्पकायत्वाद्विविधौषधसेवनात् ।
नात्यम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वदोषहरं पयः ॥ ५५ ॥

अर्थ–बकरीयोंकी छोटी देह होती है और अनेक प्रकारकी औषधी खाती हैं तथा अल्प जल पीती हैं और सर्वत्र विचरती कूदती फिरती हैं । इससे बकरीयोंका दूध सर्वदोषनाशक है५५

मेषीक्षीरगुणाः ।

मेषीक्षीरं गुरु स्वादु स्निग्धोष्णं कफपित्तजित् ॥५६॥

अर्थ–भेडका दूध–भारी, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, गरम तथा कफ और पित्तनाशक है ॥ ५६ ॥

महिषीदुग्धगुणाः ।

माहिषं स्निग्धमत्यर्थं निद्राकृद्वह्निनाशनम् ॥५७॥

अर्थ–भैंसका दूध–स्निग्ध,अत्यन्त निद्राजनक और मन्दाग्निकारक है ॥ ५७ ॥

उष्ट्रीक्षीरगुणाः ।

उष्ट्रीक्षीरं तु रूक्षोष्णं शोथवातकफापहम् ॥ ५८ ॥

अर्थ-ऊँटनीका दूध-रूखा, गरम, तथा सूजन, वात और कफनाशक है ॥ ५८ ॥

अश्वीदुग्धगुणाः ।

अश्वीक्षीरं सलवणं मधुराम्लरसं गुरु ॥ ५९ ॥

अर्थ-घोडीका दूध-लवणरसयुक्त, मधुर, अम्ल और हलका है ॥ ५९ ॥

हस्तिनीक्षीरगुणाः ।

हस्तिन्या मधुरं वृष्यं कषायानुरसं गुरु ॥ ३६० ॥

अर्थ-हथिनीका दूध-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किञ्चित्कषेला और भारी है ॥ ३६० ॥

मनुष्यदुग्धगुणाः ।

मानुष्यं जीवनं सात्मं बृंहणं स्नेहनं पयः ॥ ६१ ॥

अर्थ-स्त्रीका दूध-प्राणरक्षक, हितकारक, वाजीकरण और स्निग्ध है ॥ ६१ ॥

गोदुग्धग्रहणकालनिर्णयः ।

गव्यं प्रत्युषसि क्षीरं गुरु विष्टम्भि दुर्जरम् ।
तस्मादभ्युदिते सूर्ये यामं यामार्द्धमेव वा ॥ ६२ ॥
समुत्तार्य ततो ग्राह्यं तत्पथ्यं दीपनं लघु ॥ ६३ ॥

अर्थ-गायका दूध-प्रातःकालमें, भारी, विष्टम्भकारी, और दुर्जर होता है । इसकारण सूर्योदयके पश्चात् एक प्रहर अथवा अर्द्ध प्रहर समय व्यतीत होनेपर ग्रहण करना चाहिये । इसप्रकार करनेसे, हितकारी, अग्निप्रदीपक और लघु होता है ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

गोदुग्धानां प्रशस्ताप्रशस्तभेदः ।

निर्वत्साबालवत्सायाः पयो दोषलमीरितम् ।
शस्तं वत्सैकवर्णाया धवलीकृष्णयोरपि ॥ ६४ ॥
इक्ष्वादा माषपर्ण्यादा ऊर्द्ध्वशृङ्गी च या भवेत् ।
तासां गवां हितं क्षीरं शृतं वाऽशृतमेव वा ॥ ६५ ॥

अर्थ—बछडे करके रहित अथवा बाल बछडे सहित ऐसी गायोंका दूध—दोषवाला होता है । जिन गायोंका रंग बछडेके रंगसे मिलता हो उनका दूध तथा काले रंगकी अथवा गोरे रंगकी गायोंका दूध प्रशंसायोग्य अर्थात् निर्दोष है । जे गाय ईख अथवा माषपर्णी (मषवन) को खाती है तथा जिन गायोंके ऊपरको सींग उठे होय उनका दूध कच्चा अथवा पचाया हुवा हितकारी है ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

पर्य्युषितक्षीरगुणाः ।

क्षीरं पर्य्युषितं सर्वं गुरु विष्टम्भि दुर्जरम् ॥ ६६ ॥

अर्थ—सर्व प्रकारके बासी दूध—भारी, विष्टम्भकारी और कठिनतासे पचते हैं ॥ ६६ ॥

पक्वामदुग्धगुणाः ।

पयोभिष्यन्दि गुर्वामं शृतोष्णं कफवातजित् ॥ ६७ ॥

अर्थ—अपक्व दूध—क्लेदकारक और भारी है । अग्निसे उष्ण किया हुवा दूध कफ और वायुनाशक है ॥ ६७ ॥

शृतशीतधारोष्णदुग्धयोर्गुणाः ।

शृतशीतं तु पित्तघ्नं धारोष्णममृतोपमम् ॥ ६८ ॥

अर्थ—जो गरम होकर शीतल हो जाय ऐसा दूध—पित्तनाशक है। दूहनेके समय उष्णतायुक्त दूध—अमृतकी समान है॥६८

क्षीरसन्तानिकागुणाः ।

क्षीरसन्तानिका वृष्या स्निग्धा पित्तानिलापहा॥६९॥

अर्थ—मलाई मावा इत्यादि—वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध तथा पित्त और वातनाशक है ॥ ६९ ॥

वर्ज्जनीयदुग्धकथनम् ।

वर्ज्जयित्वा स्त्रियाः स्तन्यं सर्वमामं विवर्ज्जयेत् ।
वर्ज्यं सलवणं क्षीरं यच्च विग्रथितं भवेत् ॥३७० ॥

अर्थ—स्त्रीके दूधको छोडकर और सर्व दूध अपक्व अहितकारी होते हैं । अतएव अपक्व (कच्चा) दूध पीना नहीं चाहिये । लवणयुक्त तथा विग्रथित (फटा हुवा) दूध त्यागने योग्य है ॥ ३७० ॥ इति क्षीरवर्गः ॥

अथ दधिवर्गमाह ।

दधिसामान्यगुणाः ।

दधि स्वाद्वग्निदं हृद्यं स्नेहनं रोचनं गुरु ।
पाकेऽम्लमुष्णं वातघ्नं माङ्गल्यं बृंहणं परम् ॥ ७१ ॥

अर्थ—दही—स्वादिष्ट, अग्निप्रदीपक, हृदयको हितकारी, स्नेहयुक्त, रोचन, भारी, पचनेमें अम्ल, उष्णवीर्य्य, वातविनाशक, मङ्गलकारक और पुष्टिकारक है ॥ ७१ ॥

गव्यदधिगुणाः ।

गव्यं दधि तु वातघ्नं मङ्गल्यं शुचि रोचनम् ।
स्निग्धं विपाके मधुरं दीपनं बलवर्द्धनम् ॥ ७२ ॥

अर्थ-गायका दही-वातनाशक, मङ्गलजनक, शुचि, रोचन, स्निग्ध, पचनेमें मधुर, अग्निप्रदीपक और बलवर्द्धक है॥७२॥

छागदधिगुणाः ।

छागं दधि लघु प्रोक्तं कफवातक्षयापहम् ।
दुर्नामश्वासकासेषु हितमग्नेश्च दीपनम् ॥ ७३ ॥

अर्थ-बकरीका दही-हलका,अग्निदीपक तथा कफ, वात, क्षय, बवासीर, श्वास और खाँसीको दूर करनेवाला है ॥ ७३॥

मेषदधिगुणाः ।

आविकं दधि दुर्नामकफव्याधिप्रकोपकम् ॥७४॥

अर्थ-भेडका दही-बवासीर और कफरोगकू कुपित करे है ॥ ७४ ॥

महिषदधिगुणाः ।

माहिषं दध्यतिस्निग्धं रक्तपित्तप्रसादनम् ।
विपाके मधुरं वृष्यं गुरु श्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ ७५ ॥

अर्थ-भैंसका दही-अत्यन्तस्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, पचनेमें मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, भारी और कफकारी है ॥ ७५ ॥

घोटकदधिगुणाः ।

वाडवं दधि वातघ्नं दीपनं चक्षुषोर्हितम् ॥ ७६ ॥

अर्थ-घोडीका दही-वातविनाशक, दीपन और नेत्रोंको हितकारी है ॥ ७६ ॥

उष्ट्रदधिगुणाः ।

औष्ट्रकं दधि सक्षारमत्यम्लं पाकतः कटु ॥ ७७ ॥

अर्थ–ऊँटनीका दही–क्षारयुक्त,अत्यन्त खट्टा और पचनेमें चरपरा है ॥७७ ॥

हस्तिदधिगुणाः ।

हस्तिन्या दधि वीर्य्योष्णं कषायं कफवातनुत्॥७८॥

अर्थ–हथिनीका दही–उष्णवीर्य्य, कषेला, कफ और वातनाशक है ॥ ७८ ॥

मनुष्यदधिगुणाः ।

मानुष्यं मधुरं बल्यं स्निग्धं सन्तर्पणं दधि ॥ ७९ ॥

अर्थ–स्त्रीका दही–मधुर, बलकारक, स्निग्ध और सन्तर्पण (तृप्तिकारक) है ॥ ७९ ॥

स्वादुदधिगुणाः ।

दधि यत्स्वादु तन्मेदःकफाभिष्यंदकारकम् ॥३८०॥

अर्थ–स्वादु दही–मेद, कफ और क्लेदजनक है॥ ३८० ॥

अम्लदधिगुणाः ।

दध्यम्लमतियद्रक्तदूषणं कफपित्तकृत् ।
विदाहि सृष्टविण्मूत्रं वह्निमान्द्यत्रिदोषकृत् ॥ ८१ ॥

अर्थ–खट्टा दही–रुधिरको दूषित करनेवाला, कफकारक, पित्तजनक, दाहकारी, मलमूत्रको निकालनेवाला तथा मन्दाग्नि और त्रिदोषकारक है ॥ ८१ ॥

असारदधिगुणाः ।

दधि त्वसारं रूक्षं च ग्राहि विष्टम्भि शीतलम्॥८२॥

अर्थ–असार (घीरहित) दही–रूखा, ग्राही, विष्टम्भकारक और शीतल है ॥ ८२ ॥

दधिसरगुणाः।

दध्नः सरो गुरुर्वृष्यः स्निग्धो मेदःकफप्रदः ।
बृंहणो मारुतघ्नश्च बलोपचयकारकः ॥ ८३ ॥

अर्थ-दहीकी मलाई-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, मेद और कफदायक, पुष्टिकारक, वातविनाशक तथा बल और स्थूलता-कारक है ॥८३॥

रोगविशेषे दध्नः प्रशस्तता।

पीनसे चातिसारे च शीतके विषमज्वरे ।
अरुचौ मूत्रकृच्छ्रे च कार्श्ये च दधि शस्यते ॥८४॥

अर्थ-पीनस, अतिसार, शीत, विषमज्वर, अरुचि और मूत्रकृच्छ्ररोगमें तथा शरीरकी कृशतामें दही विशेष हित-कारी है ॥ ८४ ॥

कालविशेषे दध्नोऽप्रशस्तता।

शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु प्रायशो दधि गर्हितम् ॥ ८५ ॥

अर्थ-शरद्, ग्रीष्म और वर्षा ऋतुमें दही प्रायः अपकारी है ॥ ८५ ॥

रोगविशेषे दध्नो निषिद्धता।

रक्तपित्तविकारेषु कफोत्थेषु न तद्धितम् ॥ ८६॥

अर्थ-रक्तपित्त और कफोत्पन्न रोगमें दही अहित-कारी है ॥ ८६ ॥

दधिभक्षणनिषिद्धता।

न नक्तं दधि भुञ्जीत न चाप्यघृतशर्करम् ।
नामुद्गयूपं नाक्षौद्रं नोष्णमामलकैर्विना ॥ ८७ ॥

अर्थ-दही रात्रिके समय भक्षण करना चाहिये तथा घृतरहित दधि, शर्करा और मूगके यूषविना, मधु और आमलाहीन दधि तथा अत्यन्त शीतल नहीं खाना चाहिये ॥ ८७ ॥

अक्रमदधिभक्षणगुणाः ।

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्ड्वामयान् क्रमात् ।
प्राप्नुयात् कामलां चापि विधिं हित्वा दधिप्रियः॥८८

अर्थ-विना नियमके दहि खानेसे-ज्वर, रक्तपित्त, विसर्प, कुष्ठ, पाण्डु,भ्रम और कामलादि अनेक रोग उत्पन्न होते हैं॥८८॥

दधिमस्तुगुणाः ।

मस्तु श्लेष्मानिलहरं वृष्यं स्रोतोविशोधनम्॥ ८९ ॥

अर्थ-दधिमस्तु-श्लेष्मवातनाशक, वृष्य और स्रोतविशोधक है ॥ ८९ ॥

दधिकूर्चिकागुणाः ।

वातघ्नी ग्राहिणी रूक्षा दुर्जरा दधिकूर्चिका ॥ ३९०॥

अर्थ-दधिकूर्चिका-वातविनाशक, ग्राही, रूखी और कठिनतासे पचनेवाली है ॥ ३९० ॥

दधिकूर्चिकालक्षणम् ।

अर्द्धोदके पयस्युंचे दध्यम्लं दधिकूर्चिका ॥ ९१ ॥

अर्थ-एकसेर उष्ण दूधमें आदसेर जल मिला लेवे उसमें खट्टा दही मिलादे, उसको दधिकूर्चिका कहते हैं ॥ ९१ ॥ इति दधिवर्गः ॥

तक्रवर्गमाह ।

तक्रं त्रिदोषशमनं स्वादु पाकरसं लघु ।
वीर्य्योष्णं मूत्रकृच्छ्रघ्नं कषायमम्लमग्निदम् ॥ ९२ ॥

अर्थ-तक्र (मट्ठा, छाछ)-त्रिदोषनाशक, पचनेमें स्वादिष्ठ, हलका, उष्णवीर्य्य, मूत्रकृच्छ्रनाशक, कषेला, खट्टा और जठराग्निको दीपन करे है ॥ ९२ ॥

येषु रोगेषु तक्रं देयं तदाह ।

शोथोदरार्शोग्रहणीदोषमूत्रग्रहेऽरुचौ ।
स्नेहव्यापदि पाण्डुत्वे तक्रं दद्यात् गरेषु च ॥९३ ॥

अर्थ-शोथ, उदर, अर्श, संग्रहणी, मूत्रविबन्ध, अरुचि, स्नेहव्यापत्, पाण्डु और विषसे उत्पन्न हुवे रोगोंमें तक्र देना चाहिये ॥ ९३ ॥

तक्रस्याविषयमाह ।

नतु तक्रं क्षते दद्यात् उष्णकाले न दुर्बले।
न मूर्च्छाभ्रमदाहेषु न ज्वरे रक्तपित्तके ॥ ९४ ॥

अर्थ-क्षतरोगमें, ग्रीष्मऋतुमें, दुर्बलमनुष्यको तथा मूर्छा, भ्रम,दाह, ज्वर और रक्तपित्तरोगमें तक्र देना नहीं चाहिये॥९४॥

शीतकालेऽग्निमान्द्ये च कफोत्थेष्वामयेषु च ।
मार्गावरोधे कुष्टे च वायौ तक्रं प्रशस्यते ॥ ९५ ॥

अर्थ-शीतकालमें, मन्दाग्निमें, कफरोगमें, मार्गके अवरोधमें कुष्ठरोगमें और वातरोगमें तक्र हितकारी है ॥ ९५ ॥

तक्रलक्षणमाह ।

तक्रमुद्धृतसारं यद्दधिपादजलान्वितम् ॥ ९६ ॥

अर्थ-दहींमेंसे घी निकाल लेवे फिर उस साररहित दहींमें चौथा भाग जल मिला लेवे उसको तक्र कहते हैं ॥ ९६ ॥

तक्रकूर्चिकागुणाः ।

ग्राहिणी वातला रूक्षा दुर्जरा तक्रकूर्चिका ॥९७॥

अर्थ–तक्रकूर्चिका–ग्राही, वातकारक, रूक्ष और दुर्जर है ॥ ९७ ॥

तक्रकूर्चिकालक्षणमाह ।

तप्ते पयसि तक्रेण संयोगात्तक्रकूर्चिका ॥ ९८ ॥

अर्थ–उष्णदूधमें तक्र मिला लेवे उसको तक्रकूर्चिका कहते हैं ॥ ९८ ॥ इति तक्रवर्गः ॥

अथ नवनीतगुणमाह ।

सद्योजातनवनीतगुणाः ।

नवनीतं नवं वृष्यं ग्राहि पाचनरोचनम् ।
क्षयारुच्यर्दितप्लीहग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥ ९९ ॥

अर्थ–नवीन नवनीत (मक्खन, नोनी)–वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, पाचक, रोचक तथा क्षय, अरुचि, अर्दित, प्लीहा, संग्रहणी और बवासीरको दूर करनेवाली है ॥ ९९ ॥

दुग्धजातनवनीतगुणाः ।

चक्षुष्यं बृंहणं स्निग्धं वृष्यं जीवनकारकम् ।
क्षीरोत्थितं हिमं ग्राहि रक्तपित्ताक्षिरोगनुत् ॥४००॥

अर्थ–दूधमेंसे निकाला हुवा मक्खन–नेत्रोंको हितकारी, बृंहण (पुष्टिकारक), स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, आयुवर्द्धक, शीतल, ग्राही तथा रक्तपित्त और नेत्ररोगनाशक है॥४००॥ इति नवनीतगुणाः॥

अथ घृतवर्गमाह ।

घृतसाधारणगुणाः ।

घृतं बुद्ध्यग्निशुक्रौजोमेधास्मृतिकफावहम् ।
वातपित्तविषोन्मादशोथालक्ष्मीज्वरापहम् ॥ १ ॥
स्नेहोत्तमं योगवाहि सर्वथा मधुरं हिमम् ॥ २ ॥

अर्थ–घी–बुद्धि, अग्नि, शुक्र, ओज, मेधा, स्मरणशक्ति और कफको बढावे है । तथा वात, पित्त, विष, उन्माद, शोथ, अलक्ष्मी और ज्वरको हरे है । यह सर्वस्नेह पदार्थोंमें उत्तम है, योगवाही, मधुर और शीतल है ॥ १ ॥ २ ॥

गव्यघृतगुणाः ।

गव्यं तु वातपित्तघ्नं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ।
सर्वस्नेहोत्तमं शीतं मधुरं रसपाकयोः ॥ ३ ॥

अर्थ–गायका घी–वात और पित्तनाशक है, नेत्रोंको हितकारी, बलवर्द्धक, सर्व चिकनाईयोंमें उत्तम, शीतल, मधुर और पचनेमेंभी मधुर है ॥ ३ ॥

माहिषघृतगुणाः ।

माहिषं स्वादु शीतं च कफदं रक्तपित्तनुत् ॥ ४ ॥

अर्थ–भैंसका घी–स्वादिष्ठ, शीतल, कफकारक और रक्तपित्तनाशक है ॥ ४ ॥

आजघृतगुणाः ।

आजं कासे क्षये पथ्यं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ॥ ५ ॥

अर्थ–बकरीका घी–खांसी और क्षयरोगमें पथ्य है, नेत्रोंको हितकारी और बलवर्द्धक है ॥ ५ ॥

मेषघृतगुणाः।

आविकं पित्तलं योनिदोषे शोषे कफानिले ॥ ६ ॥

अर्थ–भेडका घी–पित्तजनक तथा योनिदोष, शोष, कफ और वातरोगमें हितकारी है ॥ ६ ॥

औष्ट्रघृतगुणाः।

औष्ट्रिकं कफवातघ्नं शोथकृम्युदरापहम् ॥ ७ ॥

अर्थ–ऊँटनीका घी–कफ, वात, सूजन, कृमि और उदररोगको दूर करनेवाला है ॥ ७ ॥

मानुष्यघृतगुणाः।

मानुष्यमतिचक्षुष्यं लघु पाके प्रमेहजित्।
मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ ८ ॥

अर्थ–स्त्रीका घी–तिमिररोग, प्रतिश्याय, आम, खांसी, मूर्छा, कोढ, विष, उन्माद, राक्षसादि ग्रह और अपस्माररोगको हरनेवाला है ॥ ८ ॥

पुराणप्रपुराणघृतलक्षणगुणाश्च।

उग्रगन्धं पुराणं स्याद्दशवर्षस्थितं घृतम्।
लाक्षारसनिभं शीतं प्रपुराणमतःपरम् ॥ ९ ॥
यथा यथा भवेज्जीर्णं गुणवत्स्यात्तथा परम् ॥ ११० ॥

अर्थ–उग्रगन्धयुक्त, लाखके रंगकी समान रंगवाला ऐसे दश वर्षके रक्खे हुवे घीको पुराना घी कहते हैं, दश वर्षके अधिक व्यतीत हो जानेपर प्रपुराण घी कहा जाता है। घी जितना २ पुराना हो जाता है, उतना २ ही अधिकगुणवाला होता है ॥ ॥ ९ ॥ ११० ॥ इति घृतगुणाः ॥

अथ इक्षुवर्गमाह ।

इक्षुसाधारणगुणाः ।

इक्षवो रक्तपित्तघ्ना बल्या वृष्याः कफप्रदाः ।
विपाके मधुराः स्निग्धा गुरवो मूत्रला हिमाः ॥ ११॥

अर्थ-ईख-रक्तपित्तनाशक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारक, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, भारी, मूत्रजनक और शीतल है ॥ ११ ॥

कोपकारेक्षुगुणाः ।

कोपकारो गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः ॥ १२ ॥

अर्थ-कोपकार ईख-भारी, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगनाशक है ॥ १२ ॥

पौंड्रकेक्षुगुणाः ।

पौण्ड्रकः शीतलो वृष्यः स्निग्धो मधुरबृंहणः ॥ १३॥

अर्थ-पौण्ड्रक ईख-शीतल, वृष्य, स्निग्ध, मधुर और बृंहण है ॥ १३ ॥

भीरुकेक्षुगुणाः ।

भीरुः श्लेष्मकरः स्वादुरविदाही गुरुः परम् ॥१४॥

अर्थ-भीरुक ईख-कफकारक, स्वादिष्ठ, अविदाही और भारी है ॥ १४ ॥

वंशकेक्षुगुणाः ।

वंशकस्त्वनभिष्यंदी लघुर्दोषत्रयापहः ॥ १५ ॥

अर्थ-वंशक ईख-अनभिष्यन्दी, लघु और त्रिदोषनाशक है ॥ १५ ॥

कान्तरीक्षुगुणाः।

कान्तारी मधुरा लघ्वी सक्षारा कफवातला ॥ १६॥

अर्थ–कान्तरी ईख–मधुर, हलकी, क्षारयुक्त तथा कफ और वातकारक है ॥ १६ ॥

इक्षुमूलादिगुणाः।

इक्षुमूलोतिमधुरो मध्ये मधुर एव च।
ग्रन्थौ त्वच्यग्रभागे च विज्ञेयो लवणो रसः ॥ १७ ॥

अर्थ–ईखकी जड़–अत्यन्त मधुर है। ईखका मध्यभाग-भी मधुर है। ईखकी गाँठ, त्वचा और अग्रभाग लवणरस (निमकीन) युक्त है ॥ १७ ॥

यन्त्रनिष्पीडितेक्षुरसगुणाः।

वृष्यः शीतः सरः स्निग्धो यन्त्रकस्तु विदह्यति।
मूलाग्रजन्तु जग्धादिपीडनां मलसंस्करात् ॥ १८ ॥
किञ्चित्कालं निवृत्त्या च विकृतिं याति यान्त्रिकः १९

अर्थ–कोलूमें पेली हुई ईखका रस–शीतल, सर (कुछ २ दस्तावर), स्निग्ध और दाहकारक होता है। मूलके अग्र-भागका कीडोंसे खाया हुवा उसको पेलनेसे मलके संस्कारसे कुछेक समयपर्य्यन्त वह ठीक रहकर फिर विकारको प्राप्त हो जाता है ॥ १८ ॥ १९ ॥

पक्वेक्षुरसगुणाः।

पक्वो रसो गुरुः स्निग्धः सतीक्ष्णः कफवातनुत्४२०

अर्थ–ईखका पकाया हुवा रस–भारी, स्निग्ध, तीक्ष्ण तथा कफ और वातनाशक है ॥४२० ॥

फाणितगुणाः ।

फाणितं गुर्वभिष्यन्दि बृंहणं कफशुक्रलम् ॥ २१ ॥

अर्थ–फाणित–भारी, क्लेदजनक, बृंहण (पुष्टिकारक)नथा कफ और शुक्रजनक है ॥ २१ ॥

सामान्येक्षुरसगुणाः ।

इक्षुरसो हिमो वृष्यस्तर्पणो जीवनः परः ।
वातासृक्पित्तजित्स्वादुः स्निग्धः प्रीणनबृंहणः॥२२॥

अर्थ–ईखका रस–शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक आयुवर्द्धक, वातविनाशक, रक्तपित्तनाशक, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, प्रीतिजनक और पुष्टिकारक है ॥ २२ ॥

दन्तनिष्पीडितेक्षुरसगुणाः ।

रक्तप्रसादनो वृष्यो दन्तनिष्पीडितो रसः ॥२३ ॥

अर्थ–दांतोंसे चूसा हुई ईखका रस–वीर्य्यवर्द्धक और रक्तको विमल करे है ॥ २३ ॥

गुडगुणाः ।

गुडो वृष्यो गुरुः स्निग्धो वातघ्नो मूत्रशोधनः ।
नातिपित्तकरो मेदःकफकृमिबलप्रदः ॥ २४ ॥

अर्थ–गुड–वीर्य्यवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, वातविनाशक, मूत्रशोधक, किञ्चित् पित्तजनक तथा मेद, कफ, कृमि और बलकारक है ॥ २४ ॥

पुराणगुडगुणाः ।

गुडः पुराणोऽतिगुणो वातहासृक्प्रसादनः ।
पित्तघ्नो मधुरः स्निग्धो बल्यः पथ्यो विशेषतः॥२५॥

अर्थ–पुराना गुड–अत्यन्त गुणवाला है, वातको हरनेवाला है, रक्तको निर्मल करनेवाला है, पित्तका नाश करनेवाला है, मधुर, स्निग्ध, बलकारक और विशेषकरके पथ्य है ॥ २५ ॥

खण्डगुणाः ।

खण्डं वृष्यतमं बल्यं चक्षुष्यं वातपित्तनुत् ॥२६ ॥

अर्थ–खांड–अधिकतर वीर्य्यको बढानेवाली, बलको उत्पन्न करनेवाली, नेत्रोंको हितकारी तथा वात और पित्तको हरनेवाली है ॥ २६ ॥

शर्करागुणाः ।

शर्करा ज्वरपित्तासृक्मूर्च्छाछर्दितृषापहा ॥२७ ॥

अर्थ–चीनी–ज्वर, रक्तपित्त, मूर्छा, वमन और तृषानिवारक है ॥ २७॥

तमराजगुणाः ।

तृष्णाघ्नस्तमराजस्तु ज्वरदाहास्रपित्तनुत् ॥ २८ ॥

अर्थ–तमराज–तृष्णा, ज्वर, दाह और रक्तपित्तनाशक है ॥ २८ ॥

लसीकादीनां उत्तरोत्तरं निर्मलत्वादिना गुणवत्त्वमाह।

लसीका फाणितगुडं खण्डं मत्स्याण्डिका सिता ।
निर्मला लघवो ज्ञेयाः शीतवीर्य्या यथोत्तरम् ॥२९॥
यथा यथैषां नैर्मल्यं गुणवत्स्यात्तथा तथा ॥१३०॥

अर्थ–लसीका, फाणित, गुड, खण्ड, मत्स्यण्डिका और सिता यह क्रमसे निर्मल, लघुताकी और शीतवीर्य्य हैं अर्थात् लसीका (सीरा) से फाणित (राव), फाणितसे गुड, गुडसे खां-

ड,.खांडसे मत्स्यण्डिका (मिश्री) और मत्स्यण्डिकासे सिता अर्थात् फूलचीनी–निर्मल, लघुपाकी और शीतवीर्य्य है । इनमें जो २ जितनी २ निर्मल हैं उसके उतने २ ही अधिक गुण हैं ॥ २९ ॥ ४३० ॥ इति इक्षुगुणाः ॥

अथ हिंग्वादीनां गुणमाह ।

हिंगुगुणाः ।

हिंगु तीक्ष्णं कटुरसं शूलाजीर्णविबन्धनुत् ।
लघूष्णं पाचनं स्निग्धं दीपनं कफवातजित् ॥ ३१ ॥

अर्थ–हींग–तीक्ष्ण, चरपरी, तथा शूल, अजीर्ण और विबन्धनाशक है ! हलकी, गरम, पाचक, स्निग्ध, अग्निको दीपन करनेवाली और वातको दूर करनेवाली है ॥ ३१ ॥

जीरकगुणाः ।

जीरकं रुचिकृत्स्वादु गन्धाढ्यं कफवातजित् ।
पाके च कटु तीक्ष्णोष्णं लघु पित्ताग्निवर्द्धनम् ॥३२॥

अर्थ–जीरा–रुचिकारक, स्वादिष्ठ, गन्धाढ्य, कफ और वातनाशक है । पचनेमें चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, हलका तथा पित्त और अग्निवर्द्धक है ॥ ३२ ॥

वाप्पीकागुणाः ।

वाप्पीका कटुतीक्ष्णोष्णा कृमिशोथापहा मता॥३३॥

अर्थ–वाप्पीका (हिंगुपत्री)–चरपरी, तीक्ष्ण, गरम तथा कृमि और सूजनको दूर करे है ॥ ३३ ॥

आर्द्रधन्याकगुणाः ।

धन्याकमार्द्रं मधुरं सुगन्धि रुचिकारकम् ॥ ३४ ॥

अर्थ–कचा धनियां–मधुर, सुगन्धियुक्त और रुचिकारी है ॥ ३४ ॥

शुष्कधन्याकगुणाः ।

शुष्कन्तु कफवातघ्नं दाहच्छर्दितृपापहम् ॥ ३५ ॥

अर्थ–सूखा धनियाँ–कफ, वात, दाह,वमन और तृष्णाको शान्ति करे है ॥ ३५ ॥

कासुन्दीवटिकागुणाः ।

कासुन्दीवटिका हृद्या वातश्लेष्मरुजापहा ।
अग्निसंदीपनी रुच्या मलवातानुलोमनी ॥ ३६ ॥

अर्थ–कसौंदीकी वटिका–हृदयको हितकारी, वात और कफरोगनाशक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक तथा मल और वात अनुलोमक है ॥ ३६ ॥

हरिद्रागुणाः ।

हरिद्रा कफवातास्रशोथकण्डूरुजापहा ॥ ३७ ॥

अर्थ–हल्दी–कफ, वातरक्त, सूजन और कण्डूरोगको दूर करनेवाली है ॥ ३७ ॥

शतपुष्पागुणाः ।

शताह्वानिलदाहामशूलतृट्छर्दिनाशिनी ॥ ३८ ॥

अर्थ–वन सौंफ–वात, दाह, आम, शूल, तृपा और वमनको दूर करनेवाली है ॥ ३८ ॥

मधुरीगुणाः ।

मधुरी रोचनी वृष्या दाहासृक्पित्तनाशिनी ॥ ३९ ॥

अर्थ–सौंफ–रोचक,वीर्य्यवर्द्धक, तथा दाह और रक्त-पित्तनाशक है ॥ ३९ ॥

यवानीगुणाः ।

यवानी कोष्ठशूलघ्नी हृद्या पित्ताग्निकारिणी ।
समीरणबलासघ्नी क्रमिणां चैव नाशिनी ॥ ४४० ॥

अर्थ–अजवायन–कोठशूलनाशक, हृदयको हितकारी, पित्तकारक, जठराग्निवर्द्धक, तथा वात, कफ और क्रमिको दूर करनेवाली है ॥ ४४० ॥

शुष्कपिप्पलीगुणाः ।

पिप्पली मधुरा वृष्या कटुका दीपनी सरा ।
स्निग्धोष्णा मारुतश्लेष्मकासश्वासविनाशिनी ॥ ४१ ॥

अर्थ–सूखी पीपल–मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, चरपरी, अग्निको दीपन करनेवाली, सारक (कुछ २ दस्तावर), स्निग्ध, गरम तथा वात, कफ, खाँसी और श्वासको हरनेवाली है ॥ ४१ ॥

आर्द्रपिप्पलीगुणाः ।

पिप्पल्यार्द्रा स्वादुगुर्वी शीता स्निग्धा कफापहा ४२॥

अर्थ–कची पीपल–स्वादिष्ठ, भारी, शीतल, स्निग्ध और कफनाशक है ॥ ४२ ॥

आर्द्रमरिचगुणाः ।

मरिचं स्वादुपाक्यार्द्रं गुरु श्लेष्मप्रसेकि च ॥ ४३ ॥

अर्थ–कची काली मिरच–स्वादुपाकी, भारी और कफको निकालनेवाली है ॥ ४३ ॥

शुष्कमरिचगुणाः।

शुष्कं रुच्याग्निदं रूक्षं कटूष्णं लघु शुक्रनुत् ॥४४॥

अर्थ–सूखी काली मिरच–रुचिकारक, अग्निजनक, रूखी, चरपरी, हलकी और शुक्रनाशक है ॥ ४४ ॥

शुण्ठीगुणाः।

शुण्ठी तु कफवातघ्नी सस्नेहा लघुदीपनी।
विपाके मधुरा वृष्या हृद्योष्णा कटुरोचनी ॥ ४५ ॥

अर्थ–सोंठ–कफघ्न, वातनाशक, स्निग्ध, हलकी, दीपन, पचनेमें मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, हृदयको हितकारी, गरम, चरपरी और रुचिकारक है ॥ ४५ ॥

आर्द्रकगुणाः।

आर्द्रकं कफवातघ्नं विबन्धानाहशूलनुत् ॥ ४६ ॥

अर्थ–अदरख–कफ और वातनाशक तथा विबन्ध, आनाह और शूलको निर्मूल करे है ॥ ४६ ॥

सर्षपसिद्धार्थयोर्गुणाः।

सर्षपः कफवातघ्नस्तीक्ष्णोष्णो रक्तपित्तकृत्।
कटुकः कृमिकुष्ठघ्नः सिद्धार्थश्चापि तद्गुणः ॥ ४७ ॥

अर्थ–सर्सो–कफनाशक, वातविनाशक, तीक्ष्ण, गरम, रक्तपित्तकारक, चरपरी, कृमिनाशक, कुष्ठविनाशक और सिद्धार्थ (सफेद सर्सो) केभी इसीके समान गुण जानने ॥ ४७ ॥

राजिकागुणाः।

राजिका कटुतीक्ष्णोष्णा कृमिशोथविनाशिनी ॥४८॥

अर्थ–राई–चरपरी, तीक्ष्ण, गरम, तथा कृमि और सृजनको दूर करे है ॥ ४८ ॥

रसोनगुणाः ।

लशुनः क्षारमधुरः कण्ठ्यो वृष्यो गुरुः सरः ।
भग्नसन्धानकृद्बल्यो रक्तपित्तप्रदूपणः ॥ ४९ ॥

अर्थ–लशुन–क्षार, मधुर, कण्ठको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, सारक, भग्नसन्धानकारक, बलकारक तथा रक्त और पित्तको दूषित करे है ॥ ४९ ॥

पलाण्डुगुणाः ।

पलाण्डुर्मधुरो वृष्यः कटुः स्निग्धोऽनिलापहः ।
बल्यः पित्तविरोधी च कफनुत्तर्पणो गुरुः ॥४५० ॥

अर्थ–प्याज–मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, चरपरी, स्निग्ध, वातनाशक बलकारक, पित्तविनाशक, कफनाशक, तृप्तिकारक और भारी है ॥ ५० ॥

गुडत्वग्गुणाः ।

गुडत्वक् कफशुक्रामवातघ्नं मधुरं कटु ॥ ५१ ॥

अर्थ–दालचीनी–कफ, शुक्र, आम और वातनाशक है, मधुर और चरपरी है ॥ ५१ ॥

शुष्कतेजपत्रगुणाः ।

शुष्कपत्रं ज्वरश्लेष्मपित्तघ्नं वह्निवर्द्धनम् ॥ ५२ ॥

अर्थ–सूखा तेजपात–ज्वर, कफ और पित्तनाशक है और अग्निवर्द्धक है ॥ ५२ ॥

सैन्धवगुणाः ।

सैन्धवं दोषजिद्वृष्यं चक्षुष्यमविदाहि च।
अग्निसंदीपनं स्निग्धं रोचनं मधुरं लघु ॥ ५३ ॥

अर्थ–सैंधा नोन–त्रिदोषनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, अविदाही, अग्निप्रदीपक, स्निग्ध, रुचिकारक, मधुर और हलका है ॥ ५३ ॥

सौवर्चलगुणाः ।

सौवर्चलं रुचिकरं वीर्य्योष्णं विपदं कटु।
गुल्मशूलविबन्धघ्नं किञ्चित्पित्तकरं लघु ॥ ५४ ॥

अर्थ–सौवर्चल (काला नोन)–रुचिकारक, उष्णवीर्य्य, विपद, कटु, तथा गुल्म,शूल और विबन्धका नाश करे है । किञ्चित्पित्तकारक और हलका है ॥ ५४ ॥

विडलवणगुणाः ।

विडं लवणमुत्क्लेदि वह्निबलविबन्धनुत् ।
मलवातामविष्टम्भशूलाटोपविबन्धनुत् ॥ ५५ ॥

अर्थ–विडलवण (विरिया संचरनोन)–उत्क्लेदी, अग्निका बल, विबन्ध, मल, वात, आम, विष्टम्भ, शूल और आटोपजन्य विबन्धनाशक है ॥ ५५ ॥

औद्भिदलवणगुणाः ।

औद्भिदं तीक्ष्णमुत्क्लेदि सक्षारं कटु तिक्तकम् ॥५६॥

अर्थ–औद्भिदलवण–तीक्ष्ण, उत्क्लेदी, क्षारयुक्त, कटु और कडवा है ॥ ५६ ॥

साम्भारिलवणगुणाः ।

विबन्धानाहशूलघ्नं लोके साम्भारिसंज्ञकम् ॥ ५७ ॥

अर्थ–सामरनोन–विबन्ध, आनाह और शूलको दूर करे है ॥ ५७ ॥

सामुद्रलवणगुणाः ।

सामुद्रं लवणं पाके नात्युष्णमविदाहि च ।
भेदकं मधुरं स्निग्धं शूलघ्नं नातिपित्तलम् ॥ ५८ ॥

अर्थ–समुद्रलवण–पचनेमें लवण रसवाला, किञ्चित् गरम, अविदाही, दस्तावर, मधुर, स्निग्ध, शूलनाशक और अत्यन्त पित्तकारक नहीं है ॥ ५८ ॥

पांशुलवणगुणाः ।

पांशुजं लवणं भेदि पाचनं पित्तकारकम् ।
रोचनं दीपनं स्वादु रेचनं मारुतापहम् ॥ ५९ ॥

अर्थ–पांशुलवण–भेदक, पाचक, पित्तकारक, रोचक, दीपन, स्वादिष्ठ, रेचक और वातविनाशक है ॥ ५९ ॥

प्रसिद्धलवणगुणाः ।

लोकप्रसिद्धं लवणं पाचनं दीपनं सरम् ।
कफवातकृमिहरं लेखनं पित्तकोपनम् ॥ ४६० ॥

अर्थ–साधारण लवण–पाचक, दीपन, सारक, कफ, वात और कृमिनाशक है, लेखन और पित्तको कुपित करे है॥४६०

यवक्षारगुणाः ।

यवक्षारो जयेदर्शःश्वासान् वातकफामयान् ।
गुल्महृद्ग्रहणीपाण्डुप्लीहानाहगलामयान् ॥ ६१ ॥

अर्थ—जवाखार—बवासीर, श्वास, वात, कफरोग, गुल्म, हृदयरोग, संग्रहणी, पाण्डु, प्लीहा, आनाह और गलरोगको दूर करे है ६१

स्वर्जिकाक्षारगुणाः।

तस्मादल्पान्तरगुणः सर्जिकाक्षार उच्यते ॥ ६२ ॥

अर्थ—सज्जी—जवाखारकी अपेक्षा किञ्चित् हीनगुणवाली है ॥ ६२ ॥

टंकणक्षारगुणाः।

श्लेष्मघ्नष्टङ्कणक्षारस्तीक्ष्णोष्णो वह्निवर्द्धनः।
निरुक्षणोऽनिलकरो भेदनः पित्तवर्द्धनः ॥ ६३ ॥

अर्थ—सुहागा—तीक्ष्ण, गरम, अग्निवर्द्धक, रूखा, वातवर्द्धक, भेदक और पित्तवर्द्धक है ॥ ६३ ॥

पलाशादिक्षारगुणाः।

पलाशधवपूतीककरञ्जपाटलादिजाः।
क्षारास्तु पाचनाः सर्वे रक्तपित्तहराः सराः ॥ ६४ ॥
गुल्मार्शःकृमिपुंस्त्वघ्नाः शर्कराश्मरिनाशनाः ॥६५॥

अर्थ—ढाक, धौ, पूतिकरंज, करंज और पाटलादिकोंका क्षार—पाचक, रक्तपित्तनाशक, सारक तथा गुल्म, बवासीर, कृमि, पुरुषता, शर्करा और पथरीरोगका नाश करे है ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

इति हिंग्वादिवर्गः ॥

अथ अन्नवर्गमाह।

उत्तमान्नकथनम्।

तण्डुलाः शाल्यो धौता वारिमध्ये निवासिताः।
स्थाल्यां तप्तजले सिद्धं भक्तं भवति शोभनम्॥६६॥

अर्थ–शालिधानके चावल पानीमें डालके अच्छे प्रकार धोवे और एक हांडीमें जल भरकर उष्ण कर लेवे, फिर उष्ण-जलमें धूले हुवे चावल छोडकर मन्द अग्निसे पचावे। इस प्रकार करनेसे उत्तम अन्न अर्थात् भात सिद्ध होता है ॥ ६६ ॥

अन्नसाधारणगुणाः।

अन्नं वृद्धिकरं वृष्यं प्रीणनं बृंहणं गुरु।
धात्विंद्रियकरं बल्यं क्षुत्क्षामायासकार्श्यजित्॥६७॥

अर्थ–अन्न–शरीरवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिदायक, पुष्टिकारक, भारी, धातु और इन्द्रियोंकी शक्तिको बढानेवाला, बलकारक तथा क्षुधा, दुर्बलता, परिश्रम और कृशतानाशक है ॥ ६७ ॥

नवान्नगुणाः।

नवान्नं श्लेष्मलं स्वादु सुस्निग्धं बृंहणं गुरु ॥ ६८ ॥

अर्थ–नवीन अन्न–कफकारक, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, पुष्टिजनक, और भारी है ॥ ६८ ॥

पुराणान्नगुणाः।

पुराणं विरसं रूक्षं पथ्यं वह्निप्रदीपनम् ॥ ६९॥

अर्थ–पुराना अन्न–विरस, रूखा, पथ्य और अग्निप्रदीपक है ॥ ६९ ॥

अत्युष्णाद्यन्नगुणाः।

अत्युष्णान्नं बलं हन्ति शीतं शुष्कं च दुर्जरम्॥१७०॥

अर्थ–अत्यन्त उष्ण अन्न–बलनाशक है, शीतल अन्न और शुष्क अन्न दुर्जर है ॥ १७० ॥

क्लिन्नतण्डुलसंयुक्तयोश्चान्नयोर्गुणाः ।

अतिक्लिन्नं ग्लानिकरं दुर्जरं तण्डुलान्वितम् ॥ ७१॥

अर्थ—क्लिन्नान्न—ग्लानि करनेवाला और तण्डुलान्वित अन्न दुर्जर है ॥ ७१ ॥

जलधौतसद्योन्नगुणाः ।

सद्योन्नं वारिणा धौतं शीघ्रपाकि हिमं लघु ॥ ७२ ॥

अर्थ—सद्यअन्न—जलसे धुला हुवा शीघ्रपाकी, शीतल और हलका है ॥ ७२ ॥

जलसंयुक्तपर्य्युषितान्नगुणाः।

त्रिदोषकोपनं रूक्षं वार्य्यन्नं निशि संस्थितम् ॥७३॥

अर्थ—जलयुक्त बासी अन्न—त्रिदोषवर्द्धक और रूखा है॥ ७३

भृष्टतण्डुलान्नगुणाः ।

भृष्टतण्डुलजं चान्नं लघु वह्निप्रदीपनम् ॥ ७४ ॥

अर्थ—भुने हुए चावलोंका भात—हलका और अग्निप्रदीपक है ॥ ७४ ॥

यवागूगुणाः ।

यवागूर्ज्वरतृष्णाघ्नी लघ्वी बास्तिविशोधिनी ।
अतिसारे ज्वरे दाहे हिता वह्निप्रदीपनी ॥ ७५ ॥

अर्थ—यवागू—ज्वर और तृषानाशक है, हलकी, बस्तिशोधक, अग्निप्रदीपक तथा ज्वर, अतिसार और दाह इत्यादि रोगोंमें हितकारी है ॥ ७५ ॥

विलेपीगुणाः ।

विलेपी तर्पणी लघ्वी ग्राहिणी क्षुत्तृषापहा ॥ ७६॥

अर्थ–विलेपी–तृप्तिकारक, हलकी, मलरोधक तथा क्षुधा और तृषानाशक है ॥ ७६ ॥

पेयागुणाः ।

पेया स्वेदाग्निजननी वातवर्चोनुलोमनी ।
क्षुत्तृष्णाग्लानिदौर्बल्यकुक्षिरोगविनाशिनी ॥ ७७ ॥

अर्थ–पेया–पसीनेको उत्पन्न करनेवाली, अग्निजनक, वात और मल अनुलोमक, तथा क्षुधा, तृष्णा, ग्लानि, दुर्बलता और कुक्षिरोग नाशक है ॥ ७७ ॥

मण्डगुणाः ।

क्षुद्बोधनो वस्तिविशोधनश्च प्राणप्रदः शोणितवर्द्धनश्च ।
ज्वरापहारी कफपित्तहन्ता वायुं जयेदष्टगुणो हि मण्डः ७८

अर्थ–मण्ड–क्षुधाजनक, वस्तिशोधक, आयुवर्द्धक, रक्तवर्द्धक, ज्वरनाशक, कफपित्तहारक और वातनिवारक है ॥ ७८ ॥

भृष्टतण्डुलगुणाः ।

सुगन्धिः कफहा रूक्षः पित्तलो भृष्टतण्डुलः ॥ ७९ ॥

अर्थ–भुने हुवे चावल–सुगन्धित, कफनाशक, रूखे और पित्तकारक हैं ॥ ७९ ॥

चिपिटकगुणमाह ।

पृथुका गुरवः स्निग्धाः कफविष्टम्भकारकाः ।
बल्याः सक्षीरभावात्तु वातघ्ना भिन्नवर्चसः ॥ ४८० ॥

अर्थ–चौले–भारी, स्निग्ध, तथा कफ और विष्टम्भकारक हैं । दूधमें भीगे हुवे चौले–बलकारक, वातविनाशक और मलभेदक हैं ॥ ४८० ॥

लाजागुणाः ।

लाजास्तृट्छर्द्यतीसारमेहमेदःकफच्छिदः ।
कासपित्तामशमना दीपना लघवो हिमाः ॥ ८१ ॥

अर्थ–खीले–तृषा, वमन, अतिसार, प्रमेह, मेद, कफ, खांसी, पित्त और आमनाशक हैं, तथा अग्निप्रदीपक, हलकी और शीतल हैं ॥ ८१ ॥

लाजामण्डगुणाः ।

लाजामण्डोऽग्निजननो दाहतृष्णानिवारणः ।
ज्वरातिसारशमनः श्लेष्मलः सामपाचनः ॥ ८२ ॥
मन्दाग्निविषमाग्नीनां बालस्थविरयोषिताम् ।
देयं च सुकुमाराणां लाजमण्डः सुसंस्कृतः ॥ ८३ ॥

अर्थ–खीलोंका माड–अग्निप्रदीपक, दाहनिवारक, तृष्णानाशक, ज्वरनाशक, अतिसारहारक, कफकारक, आमपाचक तथा मन्दाग्नि और विषमाग्नियुक्त मनुष्योंको और बालक, वृद्ध, स्त्री तथा कोमल शरीरवाले मनुष्योंको खीलोंका माड देना चाहिये ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

लाजपेयागुणाः ।

लाजपेया श्रमघ्नी तु क्षामकण्ठस्य देहिनः ।
क्षुत्तृष्णाग्लानिदौर्बल्यकुक्षिरोगविनाशिनी ॥ ८४ ॥

अर्थ–खीलोंकी पेया–क्षीण कण्ठवाले मनुष्यका श्रमनाशक तथा क्षुधा, तृषा, ग्लानि, दुर्बलता और कुक्षिरोगको दूर करनेवाली है ॥ ८४ ॥

यवसक्तुगुणाः ।

यवानां सक्तवो रूक्षा लेखना वह्निवर्द्धनाः ॥ ८५ ॥

अर्थ–जौंके सत्तू–रूखे, लेखन और अग्निवर्द्धक हैं ॥८५॥

मन्थगुणाः ।

मन्थः सद्यो बलकरः पिपासाश्रमनाशनः ॥ ८६ ॥

अर्थ–मन्थ–तत्काल बलवर्द्धक तथा पियास और श्रमको दूर करे है ॥ ८६ ॥

मन्थलक्षणम् ।

सक्तवः सर्पिषा युक्ताः शीतया विपरिप्लुताः ।

नात्यच्छा नातिसान्द्राश्च मन्थ इत्यभिधीयते ॥८७॥

अर्थ–सत्तुओंमें घी मिलाकर फिर उसमें इतना जल डाले कि जिससे न तो वह अत्यन्त पतले हो जांय और न अत्यन्त गाढे हो जांय उसको मन्थ कहते हैं ॥ ८७ ॥

धानागुणाः ।

वातलाः कफरोगघ्ना वातवर्चोनुलोमनाः ।

धानासंज्ञास्तु तेऽतीव दुर्जरा लेखनाः स्मृताः॥८८॥

अर्थ–धाना (बहुरी)–वातवर्द्धक, कफरोगनाशक, वात और मलअनुलोमक, अतिकठिनतासे पचनेवाली और लेखन हैं ॥ ८८ ॥

सक्तुपिण्डी-सक्त्ववलेहिकयोर्गुणाः ।

गुर्व्वी पिण्डी खरात्यर्थं लघ्वी सैव विपर्य्ययात् ।

सक्तूनामाशु जीर्य्येत मृदुत्वादवलेहिका ॥८९॥

अर्थ–सत्तुओंका बनाया हुवा पिण्ड–अतिकठिनतासे पचनेवाला है। उसी पिंडको मलकर लिया जावे तो लघुपाकी हो जाता है। शक्तुओंसे बनाई हुई अवलेहिका कोमलताके कारण शीघ्र जीर्णताको प्राप्त होती है॥ ८९॥

वाट्यमण्डगुणाः।

वाट्यमण्डो विबन्धघ्नः शूलानाहविनाशनः।
रोचनो दीपनो हृद्यः पित्तश्लेष्मानिलापहः॥४९०॥

अर्थ–वाट्यमण्ड (भुने हुवे जौंका माँड)–विबन्ध, शूल, आनाह, पित्त, श्लेष्म और वातका नाश करे है। रोचक, दीपन और हृदयको हितकारी है॥४९०॥

मुद्गयूषगुणाः।

मुद्गयूषोऽग्निदो हृद्यः शुद्धानां व्रणिनामपि।
पथ्यो बलासपित्तघ्नो ज्वरहा च कृताकृतः॥ ९१॥

अर्थ–कृत और अकृत इन दोनों प्रकारका मूगका यूष–अग्निदीपक, हृदयको हितकारी, शुद्ध और व्रणवाले मनुष्योंके लिये हितकारी, तथा कफ, पित्त और ज्वरको दूर करे है॥९१॥

अकृतलक्षणमाह।

अस्नेहलवणं सर्वमकृतं कटुकैर्विना॥ ९२॥

अर्थ–नोन, घृत, तेलादि और मरीचादिकरके रहित मूगके यूपको "अकृत" कहते हैं॥ ९२॥

कृतलक्षणमाह।

विज्ञेयं लवणस्नेहकटुकैः संस्कृतः कृतम्॥ ९३॥

अर्थ-नोन, घृत, तेलादि और मरीचादिक करके बनाये हुवे मुद्गयूपको "कृत" कहते हैं ॥ ९३ ॥

रागपाडवलक्षणमाह ।

सतु दाडिममृद्धीकायुक्तः स्याद्रागपाडवः ॥९४ ॥

अर्थ-मूगके यूपमें दाख और अनारका रस मिला लेवे उसको "रागपाडव" कहते हैं ॥ ९४ ॥

तस्य गुणाः ।

रुचिकृल्लघुपाकश्च दोषाणामविरोधकृत् ॥ ९५ ॥

अर्थ-रागपाडव-रुचिकारक, हलका और वातादि दोषोंका अविरोधी है ॥ ९५ ॥

मसूरयूपगुणाः ।

मसूरयूपः संग्राही बृंहणश्च प्रमेहजित् ।
पित्तश्लेष्मज्वरहरस्तथातीसारनाशनः ॥ ९६ ॥

अर्थ-मसूरका यूप-ग्राही, बृंहण तथा प्रमेह, पित्त, श्लेष्म, ज्वर और अतीसारको दूर करनेवाला है ॥ ९६ ॥

कुलत्थयूपगुणाः ।

कुलत्थयूपोऽनिलहा शर्कराश्मरिनाशनः ।
तूणीप्रतूणीकासार्शोगुल्ममेदःकफापहः ॥ ९७ ॥

अर्थ-कुलथीका यूप-वात, शर्करा, अश्मरी, तूणी, प्रतूणी, कास, अर्श, गुल्म, मेद और कफका नाश करनेवाला है ॥९७॥

माषयूपगुणाः ।

माषयूपो गुरुर्भेदी वातघ्नो दीपनो मतः ॥ ९८ ॥

अर्थ-उडदका यूप-भारी, दस्तावर, वातविनाशक और अग्निप्रदीपक है ॥ ९८ ॥

अथ खडयूपलक्षणमाह ।

तक्रं कपित्थचांगेरीमरिचाजाजिचित्रकैः ।
सुपक्कखडयूपोयमयः काम्बिलकः परः ॥ ९९ ॥

अर्थ-तक्र (छाछ), कपित्थ (कैथ), चाङ्गेरी (अम्बिलोना), मिरच, जीरा और चीताकरके पकाये हुवे यूपको खडयूप कहते हैं ॥ ९९ ॥

अथ काम्बलिकयूपलक्षणमाह ।

दध्यम्ललवणस्नेहतिलमाषविपाचितः ॥ ५०० ॥

अर्थ-खट्टा दही, निमक, घृतादि, तिल तथा उडदोंके द्वारा पचाये हुवे यूपको काम्बलिक यूप कहते हैं ॥ ५०० ॥

खडकाम्बलिकयूपयोर्गुणाः ।

खडकाम्बलिकौ यूपौ ग्राहिवातकफापहौ ॥ १ ॥

अर्थ-खडयूप और काम्बलिकयूप-ग्राही, तथा कफ और वातनाशक है ॥ १ ॥ ॥ इति अन्नवर्गः ॥

अथ मत्स्यपाकविधिगुणाश्च ।

दग्धमत्स्यगुणाः ।

दग्धमत्स्यो गुरुर्वृष्यो बृंहणः प्राणवर्द्धनः ।
क्षीणशुक्राश्च ये केचिद्व्रणजर्जरिताश्च ये ॥ २ ॥
नित्यं स्त्रीसेवका ये च क्षीणतेजस एव च ।
'दग्धमत्स्यो हितस्तेषां सतैलल्वणान्वितः ॥ ३ ॥

अर्थ-दग्धमत्स्य-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, प्राणवर्द्धक तेल और लवणसंयुक्त दग्धमत्स्य-शुक्रक्षीणवाले और भ्रमरोगसे पीडित ऐसे मनुष्योंको तथा नित्य स्त्रीके सेवनसे जिनका क्षय हो गया हो ऐसे मनुष्योंको हितकारी है ॥ २ ॥ ३॥

भृष्टमत्स्यगुणाः ।

तस्माद्धीनगुणः किञ्चिद्भृष्टमत्स्य उदाहृतः ।
कफघ्नपित्तजननो रूक्षः शोधन एव च ॥ ४ ॥

अर्थ-भुनी हुई मछली-दग्ध मछलीकी अपेक्षा किञ्चित् हीनगुणवाली है, कफनाशक, पित्तवर्द्धक, रूखी और संशोधक है ॥ ४ ॥

जम्बीररसयुक्तदग्धमत्स्यगुणाः ।

दग्धमत्स्यस्तु जम्बीररसाक्तो वातनाशनः ।
मधुरो रोचनो हृद्यो बृंहणो बलवर्द्धनः ॥ ५ ॥

अर्थ-जम्बीररसयुक्त दग्धमत्स्य-वातनाशक, मधुर, रोचक, हृदयको हितकारी, पुष्टिकारक और बलवर्द्धक है ॥ ५ ॥

मत्स्यपुटपाकविधिः ।

पलालवेष्टितो मत्स्यः कर्दमेन विलेपितः ।
दग्धोऽङ्गारे सलवणो दग्धमत्स्यः प्रकीर्तितः ॥ ६ ॥

अर्थ-मछलीकू प्यालसे बाँधकर कींचका लेप करे फिर अंगारोंमें जलाकर लवण मिला ले उसको दग्धमत्स्य कहते हैं ॥ ६ ॥

सन्तोलितमत्स्यगुणाः।

आर्द्रककटुतैलेन सम्यक् सन्तोलितो भवेत् ।
स स्वादुः कफवातघ्नः शुक्रलो बलवर्द्धनः ॥ ७ ॥

अर्थ–अदरख और कटु तेलके द्वारा सन्तोलित मत्स्य स्वादिष्ठ, कफनाशक, वातविनाशक, शुक्रजनक और बलवर्द्धक है ॥ ७ ॥

मत्स्यव्यञ्जनगुणाः ।

व्यञ्जनं शाकमत्स्याख्यं हृद्यं वृष्यञ्च पुष्टिकृत् ॥८॥

अर्थ–मछलीका शाक वा तर्कारी–हृदयको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक और पुष्टिकारी है ॥ ८ ॥

मत्स्यघण्टगुणाः ।

मत्स्यघण्टो बलकरो वातघ्नो रोचनः परः ॥ ९ ॥

अर्थ–मत्स्यघण्ट–बलकारक, वातनाशक और रोचक है ९

मांसरसगुणाः ।

रसो मांसस्य चक्षुष्यो बृंहणः प्राणवर्द्धनः ।
वृष्यो वातविकारघ्नः स्मृत्योजःस्वरवर्द्धनः ॥५१०॥
भग्नविश्लिष्टसन्धीनां कृशानां व्रणिनां हितः॥११॥

अर्थ–मांसरस (सोरुआ)–नेत्रोंको हितकारी, पुष्टिकारक, प्राणवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, वातविकारविनाशक, स्मरणशक्तिवर्द्धक, ओजवर्द्धक, स्वरशोधक तथा भग्न और विश्लिष्ट सन्धियुक्त मनुष्योंको तथा कृश और व्रणसंयुक्त रोगियोंको हितकारी है ॥ ५१० ॥ ११ ॥

तैलसिद्धमांसगुणाः ।

मांसं यत्तैलसंसिद्धं वीर्योष्णं पित्तलं कटु ।
अग्निसंदीपनं हृद्यं दृष्टिनुत्पुष्टिकृत् गुरु ॥ १२ ॥

अर्थ–तेलमें सिद्ध किया हुआ मांस–उष्णवीर्य, पित्तजनक, चरपरा, अग्निप्रदीपक,हृदयको हितकारी, दृष्टिशक्तिनाशक, पुष्टिकारक और भारी है ॥ १२ ॥

घृतसिद्धमांसगुणाः ।

मांसं तु घृतसंसिद्धं दृष्टिदं पुष्टिकृल्लघु ।
प्रीणनं सर्वधातूनां विशेषान्मुखशोषिणाम् ॥ १३ ॥

अर्थ–घृतमें सिद्ध किया हुआ मांस–दृष्टिशक्तिको बढानेवाला, पुष्टिकारक, हलका, धातुपोषक और मुखशोषवाले मनुष्योंको तृप्तिदायक है ॥ १३ ॥

परिशुष्कमांसलक्षणम् ।

मांसं बहुघृते पक्वं सिद्धं चोष्णाम्बुना मुहुः ।
जीरकाद्यैः समायुक्तं परिशुष्कं तदुच्यते ॥ १४ ॥

अर्थ–मांसको अधिक घीमें भूनकर उष्ण जलसे सिद्ध करे उसमें जीरा इत्यादि मसाले मिला लेवे उसको परिशुष्क मांस कहते हैं ॥ १४ ॥

परिशुष्कमांसगुणाः ।

परिशुष्कं स्थिरं स्निग्धं हर्षणं प्रीणनं गुरु ।
पित्तघ्नं बलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवर्द्धनम् ॥ १५ ॥

अर्थ–परिशुष्कमांस–शरीरको स्थिर करनेवाला, स्निग्ध,

हर्षजनक, तृप्तिदायक, भारी, पित्तनाशक तथा बल, मेधा, अग्नि, मांस, ओज और शुक्रवर्द्धक है ॥ १५ ॥

अथ प्रदिग्धलक्षणमाह।

तदेव घनतक्राढ्यं प्रदिग्धं सत्रिजातकम् ॥ १६ ॥

अर्थ–पूर्वोक्त परिशुष्क मांसमें नागरमोथा, तक्र, दालचीनी, इलायची और तेजपात मिला ले उसको प्रदिग्ध मांस कहते हैं ॥ १६ ॥

प्रदिग्धमांसगुणाः।

प्रदिग्धं बलमांसाग्निवर्द्धनं कफपित्तजित् ॥१७॥

अर्थ–प्रदिग्धमांस–बल, मांस और अग्निवर्द्धक है; तथा कफ और पित्तको जीते है ॥ १७ ॥

शूलिकाप्रोतमांसगुणाः।

मांसं तु शूलिकाप्रोतमंगारेण विपाचितम्।
ज्ञेयं गुरुतरं वृष्यं दीप्ताग्नीनां सदा हितम् ॥१८॥

अर्थ–शूलिकाप्रोतमांस (कबाब)–भारी, वृष्य और दीप्ताग्निवाले मनुष्योंको सदैव हितकारी है ॥ १८ ॥

अथ वेशवारलक्षणमाह।

निरस्थिपिशितं पिष्टं स्निग्धं घृतगुडान्वितम्।
कृष्णामरिचसंयुक्तं वेशवार इति स्मृतम् ॥ १९ ॥

अर्थ–मांसको हड्डीयोंसे अलग करके अच्छे प्रकार पीसकर गुड और घृतद्वारा स्निग्ध करके पीपल और काली मिरच मिला लेवे इसको वेशवार कहते हैं ॥ १९ ॥

वेशवारगुणाः ।

वेशवारो गुरुः स्निग्धो बलोपचयवर्द्धनः ॥ ५२० ॥

अर्थ—वेशवार—भारी, स्निग्ध, तथा बल और स्थूलता-कारक है ॥ ५२० ॥

अनुक्तव्यञ्जनगुणाः ।

द्रव्येण येन येनेह व्यञ्जनं मत्स्यमांसयोः ।
तस्य तस्य च तत्रोक्तैर्गुणदोषैर्विभावयेत् ॥ २१॥

अर्थ—जिस जिस द्रव्यसे मत्स्य मांसका व्यंजन हो उसी उसीके अनुसार उसके गुणदोष जानने॥२१॥ इति व्यञ्जनगुणाः॥

पिष्टकसाधारणगुणाः ।

पिष्टं प्राणकरं रूक्षं विदाहि गुरु दुर्जरम् ॥ २२ ॥

अर्थ—पिष्टक (पिठी)—प्राणरक्षक, रूखी, विदाहकारक और दुर्जर है ॥ २२ ॥

शालितण्डुलकृतपिष्टकगुणाः ।

शालिपिष्टमया भक्ष्याः कफपित्तविनाशनाः ॥२३ ॥

अर्थ—शालिधानके चावलोंकी पिठी—कफपित्तनाशक है॥२३॥

वैदलकृतपिष्टकगुणाः ।

वैदला गुरवो भक्ष्या विष्टम्भिसृष्टमारुताः ॥ २४॥

अर्थ—मूग उडदादिकोंकी पिठी—भारी, विष्टम्भकारी और वातअनुलोमक है ॥ २४ ॥

गुडादिकृतपिष्टकगुणाः ।

सगुडाः सतिलाश्चैव सक्षौद्रक्षीरशर्कराः ।
भक्ष्या हृद्याश्च बल्याश्च गुरवो बृंहणाः पराः ॥२५॥

अर्थ—गुड, तिल, मधु, दूध और चीनीसंयुक्त पिष्टक—हृदयको हितकारी, बलकारी, भारी और पुष्टिकारी है ॥ २५ ॥

स्नेहसिद्धगोधूमकृतभक्ष्यगुणाः।

सस्नेहाः स्नेहसिद्धाश्च भक्ष्या गोधूमसम्भवाः।
गुरवस्तर्पणा हृद्या बलोपचयवर्द्धनाः ॥ २६ ॥

अर्थ—स्नेहादियुक्त और स्नेहसे सिद्ध की हुई गेहूंकी पिठी—भारी, तर्पण (तृप्तिकारक), हृदयको हितकारी तथा बल और स्थूलतावर्द्धक है ॥ २६ ॥

घृतपूरलक्षणमाह।

मर्दितां समितां क्षीरनारिकेलसितादिभिः।
अवगाह्ये घृते पक्वा घृतपूरोऽयमुच्यते ॥ २७ ॥

अर्थ—दूध, नारियल और चीनी आदिसे मर्दित गैंहूके चूनको अधिक घृतमें पका ले इसको घृतपूर अर्थात् घेवर कहते हैं ॥ २७ ॥

घृतपूरगुणाः।

घृतपूरो गुरुर्वृष्यः कफकृद्रक्तमांसदः।
वातपित्तहरो हृद्यः स्वादुः प्राणकरोऽग्निदः ॥ २८ ॥

अर्थ—घृतपूर (घेवर)—भारी, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारक, रक्तवर्द्धक, मांसवर्द्धक, वातनाशक, पित्तघ्न, हृदयको हितकारी, स्वादु तथा बल और अग्निवर्द्धक है ॥ २८ ॥

संयवलक्षणगुणाश्च।

समितामम्बुदुग्धेन खण्डेलामरिचार्द्रकैः।
घृतपक्वां क्षिपेत् खण्डे संयवो बृंहणो गुरुः ॥ २९ ॥

अर्थ-गेहूंके चूनमें दूध, चीनी, इलायची, काली मिरच और अदरख मिला लेवे उसको घीमें पकाकर खांडकी चासनीमें छोड देवे, इसको संयव कहते हैं । यह पुष्टिकारक और भारी है ॥ २९ ॥

मधुमस्तकलक्षणगुणाश्च ।

समिता वेष्टिता मध्ये मधु दत्त्वा भृता घृते ।
मधुमस्तकमुद्दिष्टं तद्वृष्यं गुरु दुर्जरम् ॥ ५३० ॥

अर्थ-गेहूंका चून माढ उसकी लोई कर ले फिर उन लोईयोंको वेल लेवे उसमें मधु भरकर मुख बंधकर घीमें भून ले और पका ले इसको मधुमस्तक कहते हैं । मधुमस्तक-वीर्य्यवर्द्धक, भारी और अत्यन्त कठिनतासे पचनेवाला है ॥ ५३० ॥

चन्द्रप्रभापायसलक्षणगुणाश्च ।

आतप्ततण्डुला धौता परिभ्रष्टा घृतेन च ।
खण्डयुक्तेन दुग्धेन पाचिताः पायसो भवेत् ॥ ३१ ॥
भृष्टजीरचतुर्जातचन्द्रबिन्दुसुरोचनः ॥ ३२ ॥

अर्थ-उष्ण चावलोंको भले प्रकारसे धोयकर घृतमें भून लेवे फिर दूध और चीनीके द्वारा पकाकर उसमें भुने हुवे जीरेका चूर्ण, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर और किञ्चित्मात्र कपूर डाल दे, इसका नाम चन्द्रप्रभापायस अर्थात् खीर है । यह चन्द्रप्रभापायस-सुरोचक है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

पर्पटशष्कुल्योर्गुणाः ।

पर्पटा लघवो रूक्षाः शष्कुल्यः कफपित्तलाः ॥ ३३ ॥

अर्थ-पापड़-हलके और रूखे हैं। शष्कुली-कफ और पित्तजनक है ॥ ३३ ॥

फेनकगुणाः।

फेनका लघवो रूक्षा वृष्या पित्तानिलापहाः ॥३४॥

अर्थ-फेनी-हलकी, रूखी, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त और वातनाशक है ॥ ३४ ॥

वटलड्डुकयोर्गुणाः।

वटो विदाही तृष्णाकृल्लड्डुको दुर्जरः परः ॥ ३५ ॥

अर्थ-बड़े-दाहकारक और तृषाकारक हैं। लड्डू-दुर्जर हैं ॥ ३५ ॥

उपयोगविरुद्धतामाह।

शाकाम्लफलपिण्याककुलत्थलवणामिषैः।
करीरदधिमांसैश्च प्रायः क्षीरं विरुध्यते ॥ ३६ ॥

अर्थ-शाक, अम्लफल, तिलोंकी खल, कुलथी, लवण, मांस, करील, दधि और मांसके साथ दूधका भक्षण करना निषिद्ध है ॥ ३६ ॥

प्राणहारी च हारीतो हरिद्रालवणैः कृतः ॥ ३७॥

अर्थ-हलदी और लवणके साथ हारीतपक्षीका मांस भक्षण करना प्राणोंको हरे है ॥ ३७ ॥

रुबोस्तैलेन संभृष्टं विषं मायूरमाहिषम् ॥ ३८ ॥

अर्थ-अरण्डीके तेलमें भुना हुआ मोरका मांस और भैसका मांस विषकी समान है ॥ ३८ ॥

वराहवसया भृष्टा बलाका तुहरत्यसून् ॥ ३९ ॥

अर्थ–सूअरकी चर्बीसे भुना हुआ बगुलेका मांस–शीघ्र प्राणनाशक है ॥ ३९ ॥

संयुक्ता सैव वारुण्या कुल्मापैश्च विरुध्यते ॥५४०॥

अर्थ–बगुलेका मांस मद्यके साथ तथा कुल्मापके साथ भक्षण करना नहीं चाहिये ॥ ५४० ॥

अविं कुसुम्भशाकेन मत्स्यतैलैः कणां त्यजेत्॥४१॥

अर्थ–भेड़का मांस कसूमके शाकके साथ तथा मछलीके तेलके साथ पीपलका खाना निषेध है ॥ ४१ ॥

मापैरिक्षुविकारांश्च काञ्जिकस्तिलशष्कुली ॥ ४२ ॥

अर्थ–उड़दोंके साथ इक्षुविकार (गुड़, खाँड, चीनी, फूल-चीनी, मिश्री इत्यादि) तथा कांजीके साथ तिलोंकी शष्कुली खाना निषेध है ॥ ४२ ॥

कपोतः सार्षपे भृष्टो घृतं कांस्ये दशाहगम् ॥ ४३ ॥

अर्थ–सर्सोंके तेलमें भुना हुआ कबूतरका मांस खाना नहीं चाहिये । कांसीके बरतनमें दश दिनसे रक्खा हुआ घी खाना निषेध है ॥ ४३ ॥

विषं घृतसमं क्षौद्रं मधुना गगनाम्बुना ॥ ४४ ॥

अर्थ–बराबर घी और मधु मिलाकर खाना तथा मधुके साथ मेघजलका पीना विषके समान अपकारी है ॥ ४४ ॥

मूलकं मापयूपेण मधुना नच भक्षयेत् ॥ ४५ ॥

अर्थ–उड़दोंके यूपके साथ अथवा मधुके साथ मूलीका भक्षण करना निषेध है ॥ ४५ ॥

नारिकेलजलेनापि कर्पूरं नैव भक्षयेत् ॥ ४६ ॥

अर्थ–नारियलके जलके साथ कपूरका खाना अनुचित है ॥ ४६ ॥

एकत्र सर्वमांसानि विरुध्यन्ते परस्परम् ॥ ४७ ॥

अर्थ–सर्वमांसको एकत्र मिलाकर खाना तथा एक जीवके मांसमें दूसरे जीवका मांस मिलाकर खाना विरुद्ध है॥४७॥

विरुद्धभोजने ये रोगा जायन्ते तानाह।

नक्तान्ध्यवीसर्पदकोदराणां विस्फोटकोन्माद-
भगन्दराणाम्। मूर्छामदाध्मानगलग्रहाणां
पाण्ड्वामयस्यामविषस्य चैव ॥ ४८ ॥
किलासकुष्ठग्रहणीगदानां शोथातिसारज्व-
रपीनसानाम्। सन्तानदोषस्य तथैव मृत्यो-
र्विरुद्धमन्नं प्रवदन्ति हेतुः ॥ ४९ ॥

अर्थ–विरुद्धभोजन–नक्तान्ध (रतौंधा), विसर्प, जलोदर, विस्फोट, उन्माद, भगन्दर, मूर्छा, मद, आध्मान, गलवेदना, पाण्डु, आम, विष, किलास, कोढ, संग्रहणी, शोथ, अतिसार, ज्वर, पीनसादि रोग, सन्तान दोष और मृत्युका कारण है ॥४८॥४९॥

विरुद्धाहारजनितरोगाणां चिकित्सामाह।

विरुद्धाहारजान् रोगान् विनिहन्ति विरेचनम्।
वमनं शमनं वापि सर्वं वा हितसेवितम् ॥५०॥

अर्थ—विरुद्ध आहार करनेसे जो रोग उत्पन्न होते हैं, वह सर्व रोग, विरेचन अथवा वमन तथा शमन अथवा हितकारक भोजन करनेसे नाश हो जाते हैं ॥ ५० ॥ इति विरुद्धभोजनम् ॥

अथ भोजनयोगिनः ।

भोजनादौ लवणार्द्रकादिभक्षणगुणाः ।

भोजनाग्रे सदा पथ्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम् ।
अग्निसंदीपनं हृद्यं लवणार्द्रकभक्षणम् ॥ ५१ ॥

अर्थ—भोजनकी आदिमें सेंधे नोनके साथ अदरखका भक्षण करना सदैव पथ्य है, जिह्वा और कण्ठशोधक है, अग्निप्रदीपक और हृदयको हितकारी है ॥ ५१ ॥

आयुर्घृते गुडे रोगा मृत्युर्लीनो विदाहिषु ।
आरोग्यं कटुतिक्तेषु बलं मांसे पयःसु च ॥ ५२ ॥

अर्थ—भोजनसे पूर्व घृत भक्षण करनेसे आयुकी वृद्धि होती है । गुड भक्षण करनेसे रोग उत्पन्न होते हैं । दाहकारक पदार्थ खानेसे मृत्यु निकट आती है । कटु और तिक्तरसवाले पदार्थ खानेसे आरोग्यता होती है और मांस तथा दूधके खानेसे बलकी वृद्धि होती है ॥ ५२ ॥

क्रमादीनां गुणाधिक्यमाह ।

अन्नादष्टगुणं पिष्टं पिष्टादष्टगुणं पयः ।
पयसोऽष्टगुणं मांसं मांसादष्टगुणं घृतम् ॥ ५३ ॥
घृतादष्टगुणं तैलं मर्दनान्न तु भक्षणात् ॥ ५४ ॥

अर्थ—अन्नसे अधिक आठ गुण पिष्टकमें हैं, पिष्टकसे

अधिक आठ गुण दूधमें हैं। दूधसे अधिक आठ गुण मांसमें हैं। मांससे अधिक आठ गुण घृतमें हैं और घृतसे अधिक आठ गुण तेलमें हैं। किन्तु यह गुण तेलके मलनेमें हैं और भक्षण करनेमें नहीं हैं ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

आहारगुणाः।

आहारः प्रीणनः सद्यो बलकृद्देहधारकः ॥ ५५ ॥

अर्थ–आहार–तृप्तिकारक, तत्काल बलकारक और देहधारक है ॥ ५५ ॥

आहारदिङ्निर्णयः।

आयुष्यं प्राङ्मुखे भुङ्क्ते यशस्यं दक्षिणामुखम्।
श्रियं प्रत्यङ्मुखो भुङ्क्ते ऋतं भुङ्क्ते ह्युदङ्मुखः॥५६॥

अर्थ–पूर्वकी ओर मुख करके आहार करनेसे आयु बढता है, दक्षिणकी ओर मुख करके आहार करनेसे यशका लाभ होता है, पश्चिमकी ओर मुख करके आहार करनेसे लक्ष्मी बढती है और उत्तरकी ओर मुख करके आहार करनेसे अहितकी वृद्धि होती है। इस कारण उत्तरकी ओर मुख करके आहार नहीं करना चाहिये ॥ ५६ ॥

भक्षणविषये अन्नादीनां परिमाणमाह।

कुक्षावन्नेन भागौ द्वावेकं पानेन पूरयेत्।
वायोः सञ्चरणार्थञ्च चतुर्थमवशेषयेत् ॥ ५७ ॥

अर्थ–आहारके समय उदरको दो भाग अन्नसे एक भाग पनिकी वस्तुओंमे भर ले, चतुर्थांश शेप वायुके फिरने लिये रख लेवे ॥ ५७ ॥

आचमनगुणाः ।

दन्तान्तरगतं चान्नं शौचेनैवाहरेच्छनैः ।
कुर्य्यादनिर्गतं तद्धि मुखस्यानिष्टगन्धताम् ॥ ५८ ॥

अर्थ—आहार करनेके समय दांतोंमें जो अन्न प्रविष्ट हो जाता है उस अन्नको आचमनके द्वारा शनैः २ निकाल देवे और जो इस अन्नको नहीं निकालते हैं उनके मुखमें अधिकतर दुर्गंध आने लगती है ॥ ५८ ॥

भोजनान्ते कर्त्तव्यता ।

भुक्त्वा पाणितलं घृष्ट्वा चक्षुषोर्यदि दीयते ।
अचिरेणैव तद्वारि तिमिराणि व्यपोहति ॥ ५९ ॥

अर्थ—भोजनके उपरान्त हाथमें हाथ घिसकर आँखोंमें लगानेसे नेत्र जल और तिमिर रोग शीघ्र नाश होता है॥५९॥

भुक्त्वाचम्य करं वामं दत्त्वा कुक्षौ ततः पठेत् ।
मन्त्रः—भुक्तं माहेन्द्रहस्तेन वैश्वानरमुखेन च ॥
गण्डुरस्य च कण्ठेन समुद्रस्य च वह्निना ।
वातापिर्भक्षितो येन पीतो येन महोदधिः ॥
यन्मया खादितं पीतं तदगस्त्यो जरिष्यति ६६०

अर्थ—भोजनके अन्तमें कुल्ला करके कोखमें वाम हाथ धरके पूर्वोक्त " भुक्तं० " इत्यादि मन्त्र पढ लेवे इस मंत्रके पढनेसे भोजन शीघ्र पच जाता है ॥ ५६० ॥ ·

सुखासीनः क्षणं तिष्ठेत् यावन्न लभते सुखम् ॥६१॥

अर्थ–तदनन्तर कुछ कालपर्य्यन्त विश्राम करे। जबतक भारीपन दूर हो ॥ ६१ ॥

भुक्त्वा पादशतं गत्वा वामपार्श्वेण संविशेत्।
एवं चाधोगतं चान्नं सुखं तिष्ठति जीर्य्यति ॥ ६२ ॥

अर्थ–भोजनके अंतमें सौ कदम टहलकर बाँई करवटसे शयन करे इस प्रकार करनेसे अन्न पाकस्थालीमें प्रविष्ट होकर शीघ्र जीर्ण हो जाता है ॥ ६२ ॥

भोजनान्ते उपवेशनादिगुणाः।

भुक्त्वोपविशतस्तुन्दं शयानस्य वपुर्भवेत्।
आयुश्चंक्रममाणस्य मृत्युर्धावति धावतः ॥ ६३ ॥

अर्थ–भोजनके अंतमें बैठनेसे थोंद बढती है, शयन करनेसे शरीर स्थूल होता है, और धीरे २ टहलनेसे आयु बढती है तथा अधिक दौडनेसे मृत्यु निकट आती है ॥ ६३ ॥

इति भोजननियमः ॥

ताम्बूलभक्षणगुणाः।

ताम्बूलं कटुतिक्तमुष्णमधुरं क्षारं कपायान्वितम्।
वातघ्नं कृमिनाशनं कफहरं दुःखस्य विच्छेदनम् ॥
स्त्रीसम्भापणभूपणं धृतिकरं कामाग्निसंदीपनम्।
ताम्बूले निहितास्त्रयोदश गुणाः स्वर्गेपि ते दुर्लभाः ६४

अर्थ–पान–चरपरा, कडवा, गरम, मधुर, क्षार, कपेला, तथा वात, कृमि, कफ और दुःखनाशक है, स्त्रीसंभापणके विपयमें अलंकारकी समान है तथा धारणशक्ति और कामवर्द्धक है। ताम्बूलमें यह १३ गुण हैं ॥ ६४ ॥

शुष्कपूगफलगुणाः ।

शुष्कमग्निकरं पूगं कषायं मधुरं परम् ॥ ६५ ॥

अर्थ-सूखी सुपारी-अग्निप्रदीपक, कषेली और मधुर है ६५

पक्वपूगफलगुणाः ।

पक्कं तु वातलं रूक्षं भेदनं कफनाशनम् ॥ ६६ ॥

अर्थ-पक्की सुपारी-वातवर्द्धक, रूखी, दस्तावर और कफनाशक है ॥ ६६ ॥

अपक्वपूगफलगुणाः ।

गुर्वभिष्यन्दि मधुरं तोयधृग्वह्निनाशनम् ॥ ६७ ॥

अर्थ-कच्ची सुपारी-भारी, क्लेदकारक, मधुर और अग्निनाशक है ॥ ६७ ॥

ताम्बूलपत्रगुणाः ।

ताम्बूलपत्रं तीक्ष्णोष्णं कटुवातकफापहम् ।
पितकृत्स्रंसनं वृष्यं वह्निकृद्वस्तिशोधनम् ॥ ६८ ॥

अर्थ-ताम्बूलपत्र-तीक्ष्ण, गरम, चरपरा, वात और कफनाशक, पित्तकारक, शरीरको शिथिल करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, अग्निप्रदीपक और बस्तिशोधक है ॥ ६८ ॥

पर्णमूलादिगुणाः ।

पर्णमूले भवेद्व्याधिः पर्णाग्रे पापसम्भवः ।
जीर्णपर्णं हरेदायुः सिरा वह्निविनाशिनी ॥ ६९ ॥

अर्थ-पानकी जडको खानेसे अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं, पानके अगले भागको खानेसे पाप उत्पन्न होता है,

पुराना पान आयुको हरता है और पानकी सिरा (नसें) मन्दाग्निकारक हैं ॥ ६९ ॥

चूर्णगुणाः ।

चूर्णं समीरणश्लेष्ममेदोहरमुदाहृतम् ॥ ५७० ॥

अर्थ–चूना–वात, कफ और मेदनाशक है ॥ ५७० ॥

शंखचूर्णगुणाः ।

शंखचूर्णं कटुक्षारमुष्णं कृमिहरं परम् ॥ ७१ ॥

अर्थ–शंखका चूना–चरपरा, क्षार, गरम और कृमिनाशक है ॥ ७१ ॥

खदिरगुणाः ।

खदिरः कुष्ठवीसर्पमेहपित्तकफापहः ॥ ७२ ॥

अर्थ–खैर या कत्था–कोढ, वीसर्प, प्रमेह पित्त और कफनाशक है ॥ ७२ ॥

एलागुणाः ।

एला मूत्रविबन्धघ्नी तृट्छर्दिकफवातजित् ॥७३॥

अर्थ–इलाची–मूत्रविबन्ध, तृषा, वमन, कफ और वातको दूर करे है ॥ ७३ ॥

लवंगगुणाः ।

आध्मानानाहशूलघ्नं लवंगं पाचनं लघु ॥ ७४ ॥

अर्थ–लौंग–आध्मान, अनार और शूलनाशक है तथा पाचक और हलकी है ॥ ७४ ॥

जातीफलगुणाः ।

जातीफलं तृषार्छर्दिशूलघ्नं वातपित्तजित् ॥ ७५ ॥

अर्थ–जायफल–तृषा, वमन, शूल, वात और पित्त नाशक है ॥ ७५ ॥

जातीपत्रीगुणाः ।

जातीपत्री लघुस्तृष्णा तोददौर्गन्ध्यजिन्मता ॥७६॥

अर्थ–जावित्री–हलकी, तथा तृषा, पीडा और दुर्गंधनाशक है ॥ ७६ ॥

कर्पूरगुणाः ।

कर्पूरं शीतलं पाके चक्षुष्यं कफनाशनम् ।
पक्वकर्पूरतः प्राहुरपक्वं गुणवत्तरम् ॥ ७७ ॥

अर्थ–कपूर–पचनेमें शीतल, नेत्रोंको हितकारी और कफनाशक है । पक्वकर्पूरसे अपक्व कर्पूरके अधिक गुण हैं॥७७॥

पूगस्य बालमध्यादिभेदेन गुणमाह ।

आदौ पूगं विषं घोरं द्वितीये भेदि दुर्जरम् ।
तृतीयादिषु पानव्यं सुधातुल्यं रसायनम् ॥ ७८॥

अर्थ–सुपारीका कच्चा फल विषकी समान अहितकारी है । मध्यम अवस्थाका फल भेदक और दुर्जर है. और तीसरी अवस्थाका अर्थात् पक्का फल हितकारी और रसायन है ॥ ७८ ॥

ताम्बूलभक्षणनिषिद्धता ।

ताम्बूलमहितं प्रोक्तं शरीरे रूक्षदुर्बले ।
ज्वरास्यशोषे पित्तास्रमदमूर्छाक्षिरोगिषु ॥ ७९ ॥

अर्थ–पान रूखे और दुर्बल शरीरवाले मनुष्योंको तथा ज्वर, मुखशोष, रक्तपित्त, मद, मूर्छा और नेत्ररोगवाले मनुष्योंको नहीं खाना चाहिये ॥ ७९ ॥

तास्बूलस्यानुपयोगगुणाः।

ताम्बूलानुपयोगात्स्यात् श्लेष्मपित्तानिलान्वितः।
देहहृत्क्लेशदन्ताग्निश्रोत्रवर्णबलक्षयः ॥ ५८० ॥

अर्थ–पानके नहीं खानेसे–कफ, पित्त और वातका कोप उत्पन्न होता है। तथा शरीर, नेत्र, केश, दंत, जठराग्नि, कर्ण, वर्ण और बलका नाश होता है ॥ ५८० ॥ इति भोजनउपयोगः ॥

वर्गा धान्यस्य शाकस्य फलस्य मत्स्यमांसयोः।
द्वौ मद्यमधुनोर्वर्गौ क्षीरेक्षुविकृतिष्वपि ॥ ८१ ॥
संस्कारकं च हिंग्वाद्यमन्नव्यञ्जनपिष्टकम्।
संयोगकविरुद्धानि ये च भोजनयोगिकाः ॥ ८२ ॥
तैर्मध्याह्नपरिच्छेदः समाप्तो राजवल्लभे ॥ ५८३ ॥

अर्थ–धान्यवर्ग, शाकवर्ग, फलवर्ग, मत्स्य और मांसवर्ग, मद्य और मधुवर्ग, क्षीर क्षीरविकृति और क्षीरसंस्कारवर्ग, इक्षु, इक्षुविकृति और इक्षुसंस्कारवर्ग, हिंग्वादिवर्ग, अन्नव्यंजन और पिष्टकादि वर्ग, संयोगविरुद्धवर्ग और भोजनोपयोगवर्गोंकरके राजवल्लभग्रन्थमें माध्याह्निक परिच्छेद समाप्त हुवा ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ५८३ ॥ इति माध्याह्निकपरिच्छेदः ॥

इति श्रीराजवल्लभनिघण्टे द्रव्यगुणचन्द्रिकाटीकायां आयुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यकृते तृतीयपरिच्छेदः समाप्तः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थपरिच्छेदः ॥

अपराह्णपरिच्छेदे प्रकीर्णमभिधीयते ॥ १ ॥

अर्थ–अथानन्तर अपराह्निक परिच्छेदमें मिश्रितवर्ग कहा जाता है ॥ १ ॥

अध्ययनादिगुणाः ।

सतताध्ययनं वादः परतन्त्रावलोकनम् ।
सद्विद्याचार्य्यसेवा च बुद्धिमेधाकरो गणः ॥ २ ॥

अर्थ–सदैव शास्त्रका पढना, पंडितोंसे शास्त्रार्थ करना, उत्तम शास्त्रोंको अवलोकन करना, सद्विद्याको ग्रहण करना और गुरुकी सेवा करनी इस प्रकार करनेसे बुद्धि और मेधाकी वृद्धि होती है ॥ २ ॥

बुद्धिगुणमाह ।

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ।
ऊहापोहार्थविज्ञानं तत्वज्ञानं च धीगुणाः ॥ ३ ॥

अर्थ–गुरुकी शुश्रूषा, गुरुके वचनोंको श्रवण करना और धारण करना तथा शास्त्रार्थका मीमांसजनकज्ञान और ईश्वरविषयका ज्ञान यह छः बुद्धिके गुण हैं ॥ ३ ॥

सद्योमांसादिगुणाः ।

सद्योमांसं नवान्नं च बाला स्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकं चैव सद्यः प्राणकराणि षट् ॥ ४ ॥

अर्थ–तत्कालके मारे हुए पशुका मांस और नवीन अन्न-

का भक्षण करना, वाला स्त्रीका सेवन तथा घृत, दूध और गरम जलका पीना यह कार्य्य तत्काल प्राणकारक हैं ॥ ४ ॥

पूतिमांसादिगुणाः।

पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा वालार्कस्तरुणं दधि।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥ ५ ॥

अर्थ–दुर्गंधयुक्त मांसका भक्षण, वृद्धा स्त्री और भादो तथा आश्विन महीनेकी धूपका सेवन, तरुण (पांच दिनके) दहीका भक्षण तथा प्रातःकालमें मैथुन और निद्रा यह छः कार्य्य तत्काल प्राणनाशक हैं ॥ ५ ॥

देशभेदमाह।

देशस्तु जाङ्गलोनूपः साधारण इति त्रिधा ॥ ६ ॥

अर्थ–जांगल, अनूप और साधारण इन भेदोंसे देश तीन प्रकारका है ॥ ६ ॥

जांगलदेशगुणाः।

जाङ्गलः स्यान्मरुत्पित्तकदुष्णो रूक्ष एव च ॥७॥

अर्थ–जांगलदेश–वातपित्तवर्द्धक, उष्ण और रूक्ष है ॥७॥

आनूपदेशगुणाः।

आनूपः शीतलः स्निग्धो वातश्लेष्मकरो गुरुः ॥ ८ ॥

अर्थ–आनूपदेश–शीतल, स्निग्ध तथा वात और कफकारक और भारी है ॥ ८ ॥

साधारणदेशगुणाः।

साधारणः समगुणः सर्वदोपहरः स्मृतः ॥ ९ ॥

अर्थ-साधारणदेश-जांगल और अनूपदेशकी समान गुणवाला है और त्रिदोषनाशक है ॥ ९ ॥ इति देशगुणाः ॥

अथ षड्रसगुणमाह।

तत्र मधुररसगुणाः।

मधुरः प्रीणनो बल्यो बृंहणोऽनिलपित्तजित्।
रसायनो गुरुः स्निग्धश्चक्षुष्यस्तर्पणः सरः ॥ १० ॥

अर्थ-मधुररस-तृप्तिकारक, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, वातविनाशक, पित्तनाशक, रसायन, भारी, स्निग्ध,नेत्रोंको हितकारी, मनके प्रफुल्लित करनेवाला और सारक है ॥ १० ॥

अम्लरसगुणाः।

अम्लो रुचिकरो हृद्यः प्रीणनो वह्निवर्द्धनः।
वातहा रसनोद्वेगी स्निग्धोष्णो रक्तमांसदः ॥ ११ ॥

अर्थ-अम्लरस-रुचिकारक, हृदयको हितकारी, तृप्तिकारक, जठराग्निवर्द्धक, वातविनाशक, जिह्वाको उद्वेगकारक,स्निग्ध, उष्ण तथा रक्त और मांसवर्द्धक है ॥ ११ ॥

लवणरसगुणाः।

लवणः क्लेदनस्तीक्ष्णः पाचनो दीपनः सरः।
स्निग्धो रुचिकरः स्यन्दी दृष्टिशुक्रहरो गुरुः ॥१२॥

अर्थ-लवणरस-क्लेदकारक, तीक्ष्ण, पाचक, अग्निप्रदीपक, सारक, स्निग्ध, रुचिकारक, स्रावक, दृष्टि और शुक्रनाशक तथा भारी है ॥ १२ ॥

कटुरसगुणाः।

कटुर्जिह्वास्यनासाक्षिरोगकृद्रोचनोऽग्निदः।
उष्णस्तीक्ष्णो लघुः कण्डूकृमिशुक्रकफापहः॥१३॥

अर्थ–कटुरस–जिह्वा. मुख, नासिका और नेत्ररोगकारक है। रुचिदायक, अग्निप्रदीपक, गरम, तीक्ष्ण, हलका तथा कण्डु, कृमि, शुक्र और कफनाशक है॥ १३॥

तिक्तरसगुणाः।

तिक्तः कफोत्क्लेदविषकुष्ठपित्तज्वरापहः।
दीपनः पाचनो रूक्षः कण्डूकृमिहरो लघुः॥ १४॥

अर्थ–तिक्तरस–कफ, उत्क्लेद, विष, कुष्ठ और ज्वरका नाश करनेवाला है। अग्निको दीपन करनेवाला, पाचक, रूखा तथा कण्डु और कृमिनाशक तथा हलका है॥ १४॥

कषायरसगुणाः।

कषायः शोषणः स्तम्भी व्रणपाकार्तिनाशनः।
कफशोणितपित्तघ्नो रूक्षः शीतो गुरुस्तथा॥१५॥

अर्थ–कषायरस–शोषक. स्तम्भकारक, पके हुवे व्रणकी पीडाको दूर करनेवाला, कफनाशक, रक्तनाशक, पित्तघ्न, रूक्ष, शीतल और भारी है॥ १५॥

स्वाद्वम्लरसादिना वातादीनां विनाशकत्वमाह।

स्वाद्वम्ललवणा वातं कषायस्वादुतिक्तकाः।
पित्तं कषायकटुकतिक्ता घ्नन्ति कफं तथा॥१६॥

अर्थ–मधुर, अम्ल और लवणरस वातका, कषाय, मधुर

और तिक्तरस पित्तका, तथा कषाय, कटु और तिक्तरस कफ-का नाश करते हैं ॥ १६ ॥

कट्वम्लरसादिना वातादीनां प्रकोपमाह ।

कट्वम्ललवणाः पित्तं स्वाद्वम्ललवणाः कफम् ।
कटुतिक्तकषायाश्च कोपयन्ति समीरणम् ॥ १७ ॥

अर्थ—कटु, अम्ल और लवणरस पित्तको, मधुर, अम्ल और लवणरस कफको, कटु, तिक्त और कषायरस वातको कुपित करते हैं ॥ १७ ॥

रसादीनां विपाकमाह ।

कटुतिक्तकषायाणां विपाकः प्रायशः कटुः ।
अम्लोम्लं पच्यते स्वादु मधुरं लवणं तथा ॥ १८॥

अर्थ—कटु, तिक्त और कषाय रसवाले द्रव्य प्रायः कटुपाकी होते हैं, अम्लरसवाले द्रव्य अम्लपाकी होते हैं और मधुर तथा लवणरसवाले द्रव्य मधुरपाकी होते हैं ॥ १८ ॥

रसानां भावमाह ।

मधुरो लवणाम्लौ च स्निग्धभावास्त्रयो रसाः ।
वातमूत्रपुरीषाणां प्रायो मोक्षे सुखा मताः ॥१९ ॥
कटुतिक्तकषायास्तु रूक्षभावास्त्रयो रसाः ।
दुःखाविमोक्षे दृश्यन्ते वातविण्मूत्ररेतसाम् ॥२०॥

अर्थ—मधुर, लवण और अम्ल यह तीन रस स्निग्धभावयुक्त हैं। यह वात, मूत्र और मलत्यागके विषयमें सुखदायक हैं। कटु, तिक्त और कषाय यह तीन रस रूक्षभावयुक्त हैं। यह वात,

मल, मूत्र और शुक्र त्यागके विषयमें दुःखदायक हैं॥ १९॥२०॥

मधुरं श्लेष्मलं प्रायो जीर्णाच्छालियवादृते ।
मुद्गात् गोधूमतः क्षौद्रात् सितायाः जाङ्गलामिषात्२१

अर्थ–शालिधान, जौ, गेहूँ, मूंग, मधु, चीनी और जांगलदेशकी मछली, मांसको छोड़कर और सर्व मधुररसवाले द्रव्य प्रायः कफकारक हैं ॥ २१ ॥

प्रायोऽम्लं पित्तजननं दाडिमामलकादृते ॥ २२ ॥

अर्थ–अनार और आमलेको छोड़कर प्रायः अम्लरसवाले द्रव्य पित्तजनक हैं ॥ २२ ॥

अपथ्यं लवणं प्रायश्चक्षुष्योऽन्यत्र सैन्धवात् ॥२३॥

अर्थ–सैंधवलवणको छोड़कर और लवण नेत्रोंको अहितकारी हैं ॥ २३ ॥

तिक्तं कटु च भूयिष्ठं वृष्यं वातप्रकोपनम् ।
न पटोलकणाशुण्ठीवेताग्रलशुनामृतम् ॥ २४ ॥

अर्थ–परवल, पीपल, सोंठ, वेताग्र (वेतका अगला भाग), लहशन और गिलोयको छोड़कर और सर्व तिक्त तथा कटुरसवाले द्रव्य अवृष्य और वातको कुपित करे हैं ॥ २४ ॥

कषायः प्रायशः शीतः स्तम्भनश्चाभयं विना ॥२५॥

अर्थ–हरड़को छोड़कर और सर्व कषायरसवाले द्रव्यशीतल और मलस्तम्भक हैं ॥ २५ ॥

द्रव्याणां वीर्य्यकथनम् ।

मृदुतीक्ष्णगुरुस्निग्धलघुरूक्षोष्णशीतलम् ।
वीर्य्यमष्टविधं प्राहुः शीतोष्णं द्विविधं परे ॥ २६ ॥

अर्थ-वीर्य्य-मृदु, तीक्ष्ण, गुरु, स्निग्ध, लघु, रूक्ष, उष्ण और शीतल इन भेदोंसे आठ प्रकारका है और किसी २ के मतसे शीत और उष्ण इन भेदोंसे दो प्रकारका है ॥ २६ ॥

रसानां वीर्य्यभेदमाह ।

रसाः कट्वम्ललवणा वीर्य्योष्णाश्च यथोत्तरम् ।
तिक्तकषायमधुराः शीतवीर्य्या यथोत्तरम् ॥ २७ ॥

अर्थ-कटु, अम्ल और लवणरस यह एकसे एक अधिक उष्णवीर्य्य हैं अर्थात् कटुरससे अम्लरस और अम्लरससे लवणरस अधिक उष्णवीर्य्य है । तिक्त, कषाय और मधुररस यह एकसे एक अधिक शीतवीर्य्य हैं । अर्थात् तिक्तरससे कषायरस और कषायरससे मधुररस अधिक शीतवीर्य्य हैं ॥ २७ ॥

उष्णशीतवीर्य्ययोर्गुणमाह ।

उष्णः पित्तकरो बल्यो वातश्लेष्महरो लघुः ।
शीतलः पित्तहा बल्यः कफवातकरो गुरुः ॥ २८ ॥

अर्थ-उष्णवीर्य्य पदार्थ-पित्तवर्द्धक, बलकारक, वातकफनाशक और लघुपाकी हैं । शीतवीर्य्य पदार्थ-पित्तनाशक, बलकारक, कफ. वातकारक और भारी हैं ॥ २८ ॥

बुद्धिपट्कद्वयं देशः षड्रसानां विरेचनम् ।
अपराह्णे परिच्छेदे निर्म्मितं राजवल्लभे ॥ २९ ॥

अर्थ-इस राजवल्लभग्रन्थके अपराह्णपरिच्छेदमें वुद्धिकी उत्पत्ति और गुणषट्कद्वय, देशगुण तथा छः प्रकार रसका विवरण समाप्त हुआ ॥ २९ ॥

॥ इति श्रीराजवल्लभनिघण्टे द्रव्यगुणचन्द्रिकाटीकायां आयुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यकृते चतुर्थपरिच्छेदः समाप्तः ॥ ४ ॥

॥ अथ पञ्चमपरिच्छेदः ॥

वयोभेदेन नारीणां बालादिकथनम्।

बालेति गीयते नारी यावत् षोडशवत्सरम्।
तस्मात्परन्तु तरुणी यावद्द्वात्रिंशतं भवेत् ॥ १ ॥
तत ऊर्ध्वं भवेत् प्रौढा यावत् पञ्चाशतं पुनः।
वृद्धा ततः परं ज्ञेया सुरतोत्सववर्जिता ॥ २ ॥

अर्थ-सोलह (१६) वर्षकी स्त्रीको बाला कहते हैं, सोलह वर्षके पश्चात् ३२ वर्ष तककीको तरुणी कहते हैं, ३२ वर्षके पश्चात् पंचाश वर्ष तककीको प्रौढा कहते हैं, पंचाश वर्षके पश्चात् स्त्रीको वृद्धा कहते हैं, वृद्धा स्त्री रतिक्रियामें वर्जित है ॥ १ ॥ २ ॥

बालादिसंसर्गगुणाः।

बाला तु प्राणदा प्रोक्ता तरुणी प्राणधारिणी।
प्रौढा करोति वृद्धत्वं वृद्धा मरणमादिशेत् ॥ ३ ॥

अर्थ-बाला स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी वृद्धि होती है, तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी रक्षा होती है, प्रौढा

स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे वृद्धता आती है और वृद्धा स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे मृत्यु होती है ॥ ३ ॥

बालादिभेदे मैथुनकालनिर्णयः ।

निदाघशरदोर्बाला प्रौढा वर्षावसन्तयोः ।
हेमन्ते शिशिरे योग्या न वृद्धा कापि शस्यते ॥ ४ ॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरद् ऋतुमें बाला स्त्रीके साथ, वर्षा और वसन्त ऋतुमें प्रौढा स्त्रीके साथ, हेमन्त और शीत ऋतुमें तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करना चाहिये, और वृद्धा स्त्रीसे किसी ऋतुमें मैथुन करना नहीं चाहिये ॥ ४ ॥

मैथुननिषिद्धता ।

नर्त्तें च शोडशाद्वर्षात् सतत्याः परतो न च ।
आयुष्कामो नरः स्त्रीभिः संयोगं कर्तुमर्हति ॥ ५ ॥

अर्थ-आयुकी अभिलाषा करनेवाले मनुष्योंको सोलह वर्षसे थोडी और सत्तर वर्षसे अधिक उमरवाली स्त्रीसे मैथुन करना नहीं चाहिये ॥ ५ ॥

मैथुनकालनिर्णयः ।

त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्च सेवेत प्रमदां नरः ।
सर्वेष्वृतुषु ग्रीष्मेषु पक्षान्मासाद्व्रजेद्बुधः ॥ ६ ॥

अर्थ-बुद्धिवान मनुष्योंको-शरद्, हेमन्त, वसन्त और शीतऋतुमें तीन २ दिन बाद तथा ग्रीष्म ऋतुमें पंदरह दिनके अथवा एक महिने बाद मैथुन करना चाहिये ॥ ६ ॥

अतिमैथुनगुणाः ।

ग्लानिकम्पोरुदौर्बल्यं धात्विन्द्रियबलक्षयः ।
क्षयवृद्ध्युपदंशाद्या जायन्तेऽतिव्यवायतः ॥ ७ ॥

अर्थ–अत्यन्त मैथुन करनेवाले मनुष्योंके ग्लानि, कम्प, घुंटनोंमें दुर्बलता, धातु, इन्द्रिय और बलका नाश तथा क्षयरोग, वृद्धि और उपदंशरोग उत्पन्न होता है ॥ ७ ॥

सन्तानोत्पत्तिकथनम् ।

पञ्चपञ्चाशतो नारी सप्तसप्ततितः पुमान् ।
द्वावेतौ न प्रसूयेते प्रसूयेते व्यतिक्रमात् ॥ ८ ॥

अर्थ–पचपन वर्षकी स्त्री और सत्तर वर्षका पुरुष सन्तानको उत्पन्न नहीं कर सक्ता, क्योंकि उस अवस्थामें स्त्रीका रज और पुरुषका वीर्य्य बलहीन हो जाता है, उसमें शक्ति नहीं रहती, परन्तु इससे न्यूनावस्थावाले पुरुप स्त्री सन्तानको उत्पादन कर सक्ते हैं ॥ ८ ॥ इति स्त्रीनिर्णयः ॥

सुखशय्याशनगुणाः ।

सुखशय्याशनं सेव्यं निद्रापुष्टिधृतिप्रदम् ।
श्रमानिलहरं वृष्यं विपरीतमतोन्यथा ॥ ९ ॥

अर्थ–सुखकारक शय्या और उत्तम पदार्थोंका भोजन–निद्रा, पुष्टि और धृतिवर्द्धक है श्रम और वातनाशक है और वीर्य्यवर्द्धक है, इससे विपरीत शय्या और विपरीत भोजन विपरीत गुणकारक है ॥ ९ ॥

भूमिशय्यागुणाः ।

भूशय्याऽनिलपित्तघ्नी बृंहणी शुक्रवर्द्धिनी ॥ १० ॥

अर्थ—भूमिमें सोना—वात-पित्तनाशक, पुष्टिकारक और शुक्रवर्द्धक है ॥ १० ॥

खट्वापटशय्ययोर्गुणाः ।

खट्वा तु वातला प्रोक्ता पटो रूक्षोऽतिवातलः ॥ ११ ॥

अर्थ—खाटमें सोना—वातकारक है । पटशय्यामें सोना—रूक्ष और अत्यन्त वातवर्द्धक है ॥ ११ ॥ इति शय्यागुणाः ॥

अथ पुष्पम् ।

मालतीवृक्षपुष्पपत्राणां गुणाः ।

मालती कफपित्तास्यरुग्व्रणक्रिमिकुष्ठजित् ।
चक्षुष्यं कुसुमं तस्याः पत्रं तत्कफपित्तजित् ॥१२॥

अर्थ—मालतीवृक्ष—कफ, पित्त, मुखरोग, व्रण, कृमि और कुष्ठनाशक है । मालतीके फूल—नेत्रोंको हितकारी हैं । मालतीके पत्ते—कफ और पित्तको जीते हैं ॥ १२ ॥

मल्लिकापुष्पगुणाः ।

मल्लिका कफजित्तिक्ता ज्वरास्तम्भनरोपिणी ॥ १३॥

अर्थ—मोतियाके फूल—कफनाशक, कड़वे, ज्वरास्तम्भक और व्रणको भरनेवाले हैं ॥ १३ ॥

वन्धूकादिपुष्पगुणाः ।

वन्धूकं श्लेष्मलं ग्राहि तद्वदेव च यूथिका ॥ १४ ॥

अर्थ—दुपहरियाके फूल—कफकारक और ग्राही हैं । इसीकी समान जुहीके गुण जानने ॥ १४ ॥

धातकीपुष्पगुणाः ।

धातकीकुसुमं शीतं रक्तपित्तातिसारजित् ॥ १५ ॥

अर्थ–धायके फूल–शीतल, तथा रक्तपित्त और अतिसार-नाशक हैं ॥ १५ ॥

रांगनपुष्पगुणाः ।

रांगनं रक्तपित्तघ्नं मुचुकुन्दं शिरोर्तिजित् ॥ १६ ॥

अर्थ–रांगनपुष्प–रक्तपित्तनाशक हैं । मुचुकुन्दके फूल–शिरोरोगनाशक हैं ॥ १६ ॥

केतकीशिरीषपुष्पयोर्गुणाः ।

केतकं तिक्तकटुकं शिरीषं गरहारि च ॥ १७ ॥

अर्थ–केतकीके फूल–कड़वे और चरपरे हैं । शिरसके फूल विषनाशक हैं ॥ १७ ॥

रक्तपद्मगुणाः ।

पद्मं कषायमधुरं शीतं पित्तकफास्रजित् ॥ १८ ॥

अर्थ–लालकमल–कषेला, मधुर, शीतल तथा पित्त, कफ और रक्तदोषनाशक है ॥ १८ ॥

बकुलादिपुष्पगुणाः ।

तद्वद्बकुलपुन्नागकह्लारोत्पलपाटलम् ॥१९॥

अर्थ–मौलसिरीके फूल, पुन्नागके फूल, सफेद कुमुद, नील-कुमुद और पाटलके फूलोंके गुण लाल कमलकी समान हैं॥१९॥

चम्पकपुष्पगुणाः ।

चम्पकं तिक्तकटुकं शीतं पित्तकफापहम् ॥ २० ॥

अर्थ–चम्पाके फूल–कड़वे, चरपरे, शीतल, पित्त और कफनाशक हैं ॥ २० ॥ ॥ इति पुष्पगुणाः ॥

ज्योत्स्नागुणाः ।

ज्योत्स्ना कषायमधुरा दाहासृक्पित्तनाशिनी॥२१॥

अर्थ–ज्योत्स्ना (चांदनी)–कषेली, मधुर तथा दाह और रक्तपित्तनाशक है ॥ २१ ॥

अन्धकारगुणाः ।

तमो भयावहं तिक्तं दृष्टितेजोऽवरोधनम् ॥ २२ ॥

अर्थ–अन्धकार–भयकारक, कड़वा और दृष्टिके तेजको रोके है ॥ २२ ॥

मैथुनगुणाः ।

व्यवायो धात्वपचयं कुरुते रत्यपत्यदः ॥ २३ ॥

अर्थ–मैथुन–धातुनाशक तथा रति और सन्तानदायक है २३

अतिमैथुनगुणाः ।

अतिव्यवायाज्जायन्ते श्वासकासज्वरादयः ॥ २४ ॥

अर्थ–अधिकमैथुन–श्वास, खाँसी और ज्वरादि रोगोंको उत्पन्न करे है ॥ २४ ॥

मैथुनाकरणगुणाः ।

असेवनान्मेहमेदोग्रन्थिरग्नेश्च मार्दवम् ॥ २५ ॥

अर्थ–मैथुन नहीं करनेसे–प्रमेह, मेद, ग्रन्थि और मन्दाग्नि उत्पन्न होती है ॥ २५ ॥

परिमितमैथुनगुणाः ।

स्मृतिमेधायुरारोग्यपुष्टीन्द्रिययशोबलैः ।
अधिकानन्दजरसो भवन्ति स्त्रीषु संयुताः ॥ २६ ॥

अर्थ–नियमके अनुसार मैथुन करनेसे–स्मरणशक्ति, अ-

भ्यासशक्ति, आयु,आरोग्यता, पुष्टि, इन्द्रियोंकी शक्ति, यश और बलकी वृद्धि होती है और शीघ्र वृद्धावस्था नहीं आती है ॥२६॥

निद्रागुणाः ।

निद्रा तु सेविता काले धातुसाम्यमतन्द्रितान् ।
पुष्टिर्वर्णबलोत्साहानग्निदीप्तिं करोति च ॥ २७ ॥

अर्थ—उपरोक्तसमयमें निद्रासेवनसे—धातुसाम्य, तन्द्राका नाश, पुष्टि, वर्ण, बल, उत्साह और जठराग्निदीपन होती है ॥ २७॥

रात्रिजागरण-दिवास्वप्नयोर्गुणाः ।

रात्रौ जागरणं रूक्षं स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा ।
कफमेदोविषार्त्तानां रात्रौ जागरणं हितम् ॥२८॥
दिवा स्वप्नं च तृट्शूलहिक्काजीर्णातिसारिणाम् ॥२९॥

अर्थ—रात्रिके जागनेसे रूक्षता बढती है और दिनमें सोनेसे शरीरमें स्निग्धता बढती है,इस कारण रात्रिका जागना और दिनका सोना अयोग्य है परन्तु कफ, मेद और विषग्रस्त रोगियोंके लिये रात्रिका जागना हितकारक है तथा तृष्णा, शूल, हिक्का, अजीर्ण और अतिसारवाले रोगियोंके लिये दिवास्वप्न हितकारक है ॥ २८ ॥-२९॥

दिवा वा यदि वा रात्रौ निद्रा सात्मीकृता तु यैः ।
न तेषां स्वपतां दोषो जाग्रतां वा विधीयते ॥३० ॥

अर्थ—जिन मनुष्योंको दिनमें सोनेका और रात्रिमें जागनेका अभ्यास पड जाता है उनको दिनमें सोना और रात्रिमें जागना उचित है ॥ ३० ॥

स्त्रीणां विनिर्णयः शय्या पुष्पं ज्योत्स्ना तमो रतम् ॥
निशाभवः परिच्छेदः समाप्तो राजवल्लभे ॥ ३१ ॥

अर्थ—स्त्रीका निर्णय, शय्या, पुष्प, ज्योत्स्ना, अन्धकार और मैथुनादिगुणोंका वर्णन इनके द्वारा राजवल्लभग्रन्थमें निशाभव परिच्छेद समाप्त हुआ ॥ ३१ ॥

इति श्रीराजवल्लभनिघण्टे द्रव्यगुणचन्द्रिकाटीकायां शालिग्रामवैश्यकृते पञ्चमपरिच्छेदः समाप्तः ॥ ५ ॥

॥ षष्ठः परिच्छेदः ॥

अथ नानौपधिवर्गः ।

बिल्वमूलगुणाः ।

बिल्वमूलं मरुच्छ्लेष्मछर्दिघ्नं रक्तपित्तजित् ॥ १ ॥

अर्थ—बेलकी जड—वात, कफ, वमन और रक्तपित्तको दूर करे है ॥ १ ॥

पाटलाश्योनाकयोर्गुणाः ।

पाटला कफवातघ्नी श्योनाको ग्राहिदीपनः ॥ २ ॥

अर्थ—पाटल—कफ और वातविनाशक है । सोनापाठा—ग्राही और दीपन है ॥ २ ॥

गाम्भारीमूलगुणाः ।

गाम्भारीमूलमत्युष्णमहितं मानुषेषु तत् ॥ ३ ॥

अर्थ—कुम्भेरकी जड—अत्यन्त उष्ण और मनुष्योंको अहितकारी है ॥ ३ ॥

गणिकारीगुणाः ।

गणिकारी तु शोथघ्नी हिता वातविकारिणाम् ॥४॥

अर्थ–अरणी–शोथनाशक और वातरोगवालोंको हितकारी है ॥ ४ ॥

एरण्डमूलगुणाः ।

एरण्डमूलं शूलघ्नं वृष्यं वातकफापहम् ॥ ५ ॥

अर्थ–अंडकी जड–शूलनाशक, वृष्य, वात और कफनाशक है ॥ ५ ॥

गोक्षुरगुणाः ।

गोक्षुरो मूत्रकृच्छ्रघ्नो बल्यो वृष्योनिलापहः ॥६॥

अर्थ–गोखुरू–मूत्रकृच्छ्रनाशक, बलकारक, वृष्य और वातनाशक है ॥ ६ ॥

कण्टकारीगुणाः ।

उष्णवातकफश्वासकासघ्नी कण्टकारिका ॥ ७ ॥

अर्थ–कटेरी–गरम, तथा कफ, श्वास और खांसीको दूर करनेवाली है ॥ ७ ॥

बृहतीगुणाः ।

बृहती पाचनी सोष्णा ग्राहिणी वातनाशिनी ॥ ८ ॥

अर्थ–कटाई–पाचक, गरम, मलरोधक और वातविनाशक है ॥ ८ ॥

शालिपर्णीपृश्निपर्ण्योर्गुणाः ।

शालिपर्णी पृश्निपर्णी ग्राहिणी कफपित्तजित् ॥९॥

अर्थ-सरिवन और पिठवन-मलरोधक तथा कफ और पित्तनाशक है ॥ ९ ॥

बलागुणाः ।

स्निग्धा रुच्या बला वृष्या ग्राहिणी वातपित्तजित् १०

अर्थ-खिरैंटी-स्निग्ध, रुचिकारक, बलकारी, वृष्य, ग्राही तथा वात और पित्तनाशक है ॥ १० ॥

नागबलागुणाः ।

तद्वन्नागबलात्यर्थं कृच्छ्रे क्षीणे क्षते हिता ॥ ११ ॥

अर्थ-नागबला (गंगेरन)-खिरैंटीकी समान गुणवाली है, तथा मूत्रकृच्छ्र, क्षत और क्षीणरोगमें हितकारी है ॥ ११ ॥

अश्वगन्धागुणाः ।

अश्वगन्धा तु वातघ्नी बल्या वृष्या रसायनी ॥ १२ ॥

अर्थ-असगंध-वातविनाशक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक और रसायन है ॥ १२ ॥

शतावरीगुणाः ।

शतावरी वातपित्तमेहरक्तहरा सरा ॥ १३ ॥

अर्थ-सतावर-वात, पित्त, प्रमेह और रुधिरविकारनाशक है ॥ १३ ॥

हस्तिकर्णगुणाः ।

हस्तिकर्णः परं वृष्यो मेधायुर्बलवर्द्धनः ॥ १४ ॥

अर्थ-हस्तिकर्ण-वीर्य्यवर्द्धक, मेधा, आयु और बलवर्द्धक है ॥ १४ ॥

प्रसारणीगुणाः।

वातपित्तहरा सोष्णा बल्या वृष्या प्रसारणी ॥१५॥

अर्थ–पसरन–वात-पित्तनाशक, गरम, बलकारक और वीर्य्यवर्द्धक है ॥ १५ ॥

माषपर्णीमुद्गपर्णिकयोर्गुणाः।

माषपर्णी महावृष्या चक्षुष्या मुद्गपर्णिका ॥ १६ ॥

अर्थ–मषवन–अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक है। मुवनन–नेत्रोंको हितकारी है ॥ १६ ॥

विशालागुणाः।

विशाला कफवातघ्नी चक्षुष्या मूत्रकृच्छ्रजित्॥ १७॥

अर्थ–इन्द्रायन–कफवातनाशक, नेत्रोंको हितकारी और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करे है ॥ १७ ॥

श्यामलतागुणाः।

शारिवा वातपित्तासृक्तृट्छर्दिज्वरनाशिनी ॥ १८॥

अर्थ–करियावासाऊ–वात, पित्त, रुधिरविकार, वमन, और ज्वरको दूर करे है ॥ १८ ॥

अनन्तमूलगुणाः।

अनन्ता ग्राहिणी रक्तपित्तप्रशमनी हिमा ॥ १९ ॥

अर्थ–गौरियावासाऊ–मलरोधक, रक्तपित्तको शान्ति करनेवाली और शीतल है ॥ १९ ॥

गुन्द्रागुणाः।

गुन्द्रा पित्तास्रदाहघ्नी चक्षुष्या मूत्रकृच्छ्रजित्॥२०॥

अर्थ-गुन्द्रा-रक्तपित्तनाशक, दाहनाशक, नेत्रोंको हितकारी और मूत्रकृच्छ्र रोगको जीते है ॥ २० ॥

लोध्रगुणाः ।

लोध्रोऽसृक्कफपित्तघ्नश्चक्षुष्यः शोथजित्सरः ॥२१॥

अर्थ-लोध-रुधिरविकार, कफ और पित्तनाशक है। नेत्रोंको हितकारी, सूजनको दूर करनेवाला और सारक है ॥ २१॥

शाबरलोध्रगुणाः ।

तद्वच्छबरलोध्रोपि चक्षुष्यो मृदुरेचनः ॥ २२ ॥

अर्थ-पठानीलोध-नेत्रोंको हितकारी और मृदु रेचक है और गुण लोधकी समान जानने ॥ २२ ॥

मञ्जिष्ठागुणाः ।

मंजिष्ठा कुष्ठवैस्वर्य्यशोथघ्नी मूत्रकृच्छ्रजित् ॥ २३॥

अर्थ-मजीठ-कोढ, स्वरभंग,सूजन और मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे है ॥ २३ ॥

लाक्षागुणाः ।

लाक्षा भग्नविसर्पघ्नी बल्या त्वग्दोपनाशिनी ॥ २४ ॥

अर्थ-लाख-भग्न और विसर्परोगनाशक है बलकारक और त्वचाके विकारोंको दूर करनेवाली है ॥ २४ ॥

प्रपौण्डरीकगुणाः ।

प्रपौण्डरीकं चक्षुष्यं शिशिरं व्रणरोपणम् ॥ २५ ॥

अर्थ-पुण्डेरिया-नेत्रोंको हितकारी, शीतल और व्रणशोषक है ॥ २५ ॥

जीवन्तीगुणाः।

जीवन्ती श्वासकासघ्नी स्वर्य्या च क्षयनाशिनी॥२६॥

अर्थ–जीवन्ती–श्वास, खाँसी और क्षयरोगको दूर करनेवाली है तथा स्वरशोधक है॥ २६ ॥

अष्टवर्गगुणाः।

अष्टवर्गोऽस्रपित्तघ्नो व्रणहा वातपित्तनुत् ॥ २७॥

अर्थ–अष्टवर्ग–(जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली)–रक्तपित्त, व्रण और वातपित्तनाशक है ॥ २७ ॥

मधुकगुणाः।

मधुकं रक्तपित्तघ्नं व्रणशोधनरोपणम्।
गुरु स्वादु हिमं वृष्यं स्वरवर्णप्रसादनम् ॥ २८॥

अर्थ–मुलैठी–रक्तपित्तनाशक, व्रणशोधक और शोपक है। भारी, स्वादु, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा स्वर और वर्णको प्रसन्नताकारक है॥ २८ ॥

अर्जुनवृक्षगुणाः।

पार्थः पथ्यः क्षते भग्ने रक्तस्तम्भनकृच्छ्रयोः ॥२९॥

अर्थ–अर्जुन (कोह)–भग्न, क्षत, रक्तस्तम्भ और मूत्रकृच्छ्र रोगमें हितकारी है ॥ २९ ॥

अस्थिसंहारगुणाः।

अस्थिभग्नेऽस्थिसंहारो हितो बल्योऽनिलापहः ॥ ३०॥

अर्थ–हडसंघारी–अस्थिभग्नमें हितकारी, बलकारी और वातहारी है ॥ ३० ॥

भृङ्गराजगुणाः ।

भृङ्गराजस्तु चक्षुष्यः केश्यः पाण्डुकफापहः ॥३१॥

अर्थ—भांगरा—नेत्रोंको हितकारी, बालोंको उत्तम करनेवाला तथा पाण्डुरोग और कफनाशक है ॥ ३१ ॥

केशराजगुणाः ।

तद्गुणः केशराजोपि वह्निकृच्च रसायनः ॥ ३२ ॥

अर्थ—कुकरभांगरा—भांगरेके समान गुणवाला है विशेपकरकै अग्निकारक और रसायन है ॥ ३२ ॥

दण्डोत्पलगुणाः ।

दण्डोत्पलद्वयं श्वासकासजिद्वह्निदीपनम् ॥ ३३ ॥

अर्थ—दोनों प्रकारके दंडोत्पल—श्वास और खाँसीको दूर करनेवाले और जठराग्निको दीपन करनेवाले हैं ॥ ३३ ॥

रुदन्तीगुणाः।

रुदन्ती वह्निकृद्वृष्या पित्तघ्नी च रसायनी ॥३४॥

अर्थ—रुदन्ती—अग्निवर्द्धक, वीर्य्यजनक, पित्तनाशक और रसायन है ॥ ३४ ॥

तालमूलीगुणाः ।

तालमूली हिता वाते ग्रहणी च रसायनी ॥ ३५ ॥

अर्थ—मुशली—वातरोगमें हितकारक, ग्राही और रसायन है ॥ ३५ ॥

द्रोणपुष्पीगुणाः ।

द्रोणपुष्पी कफार्शोघ्नी कामलाक्रमिशोथजित् ॥३६॥

अर्थ—गूमा—कफ, बवासीर, कामला, कृमि और सूजनको दूर करे है ॥ ३६ ॥

गिरिकर्णिकागुणाः ।

शोथघ्नी कासहा कंठ्या विषघ्नी गिरिकर्णिका ॥ ३७ ॥

अर्थ–कोयल–शोथ, कास और विषनाशक तथा कण्ठको हितकारी है ॥ ३७ ॥

वृश्चिकालीगुणाः ।

वृश्चिकाली विषघ्नी तु कासमारुतनाशिनी ॥ ३८ ॥

अर्थ–वृश्चिकाली–विषविकार, खाँसी और वातका नाश करनेवाली है ॥ ३८ ॥

अहिंस्रासुदर्शनयोर्गुणाः ।

अहिंस्रा विषशोथघ्नी तद्गुणैव सुदर्शना ॥ ३९ ॥

अर्थ–सुदर्शन और अहिंस्रा–विष और शोथनाशक है ३९

भांर्गीगुणाः ।

भार्गी तु श्वासकासघ्नी गुञ्जा कुष्ठव्रणापहा ॥ ४० ॥

अर्थ–भारंगी–श्वास और खासीको दूर करनेवाली है । चोटँली–कुष्ठ और व्रणनाशक है ॥ ४० ॥

सूर्य्यावर्त्तसैरिपयोर्गुणाः ।

सूर्य्यावर्त्तो विबन्धघ्नः सैरिपः कफवातजित् ॥ ४१ ॥

अर्थ–सूर्य्यावर्त्त–विबन्धनाशक और कटसरैय–कफवातनाशक है ॥ ४१ ॥

कोकिलाक्षहलिनकयोर्गुणाः ।

आमवातानिलापघ्नौ कोकिलाक्षहलीनकौ ॥ ४२ ॥

अर्थ–तालमखाना और केतकी–आमवात और वातनाशक है ॥ ४२ ॥

हलिनीकरवीरयोर्गुणाः ।

हलिनी करवीरश्च कुष्ठदुष्टव्रणापहौ ॥ ४३ ॥

अर्थ—कलिहारी और कनेर—कुष्ठ और दुष्टव्रणको नष्ट करे है ॥ ४३ ॥

कोपातकीगुणाः ।

कोपातकी कफार्शोघ्नी पक्कामाशयशोधिनी ॥४४॥

अर्थ—कोपातकी (तोरई)—कफ और बवासीर नाशक है। तथा पक्काशय और आमाशयशोधक है ॥ ४४ ॥

ज्योतिष्मतीगुणाः ।

मेधा ज्योतिष्मती तीक्ष्णा व्रणविस्फोटनाशिनी॥४५॥

अर्थ—मालकांगनी—मेधाकारक, तीक्ष्ण, व्रण और विस्फोटनाशक है ॥ ४५ ॥

ब्राह्मीगुणाः ।

वयसः स्थापनी ब्राह्मी मेधायुर्बलवर्द्धिनी ॥ ४६ ॥

अर्थ—ब्राह्मी—अवस्थास्थापक, मेधाजनक, आयु और बलवर्द्धक है ॥ ४६ ॥

वचागुणाः ।

वचायुष्या कफवाततृष्णाघ्नी स्मृतिवर्द्धिनी ॥४७॥

अर्थ—वच—आयु और स्मरणशक्तिवर्द्धक है। कफ, वात और तृष्णानाशक है ॥ ४७ ॥

विजयागुणाः ।

शक्राशनं तु तीक्ष्णोष्णं मोहकृत् कुष्ठनाशनम् ।
बलमेधाग्निकृच्छ्लेष्मदोषहारि रसायनम् ॥ ४८ ॥

अर्थ-भांग-तीक्ष्ण, गरम, मोहकारक, कुठनाशक, बलवर्द्धक, मेधाजनक, अग्निवर्द्धक, कफनाशक और रसायन है॥४८॥

शंखपुष्पीगुणाः ।

शंखपुष्पी तु तीक्ष्णोष्णा मेध्या कृमिविषापहा॥४९॥

अर्थ-शंखाहुली-तीक्ष्ण, गरम, मेधाकारक, कृमि और विषनाशक है ॥ ४९ ॥

शिरीषवृक्षगुणाः ।

शिरीषो विषवीसर्पस्वेदत्वग्दोषशोथजित् ॥ ५० ॥

अर्थ-सिरस-विष, विसर्प, पसीना, त्वचाके विकार और सूजनको दूर करे है ॥ ५० ॥

दूर्वागुणाः ।

दूर्वा तु रक्तपित्तघ्नी कण्डूत्वग्दोषनाशिनी ॥५१॥

अर्थ-दूब-रक्तपित्त, कण्डू और त्वचाके दोषको दूर करे है ॥ ५१ ॥

हरिद्रागुणाः ।

हरिद्रा कफपित्तघ्नी कण्डूत्वग्दोषनाशिनी ।
पाण्डुशोथापची चैव मेहकुष्ठव्रणापहा ॥ ५२ ॥

अर्थ-हलदी-कफ, पित्त, कण्डू, त्वचाके दोष, पाण्डुरोग, सूजन, अपची, प्रमेह, कोढ और व्रणका नाश करनेवाली है५२

दारुहरिद्रागुणाः ।

तद्वद्दार्वी विशेषेण कफाभिष्यन्दनाशिनी ॥५३ ॥

अर्थ-दारुहलदी-हलदीकी समान गुणवाली है विशेष करके कफ और अभिष्यन्दनाशक है ॥ ५३ ॥

अवल्गुजगुणाः ।

अवल्गुजो वातकफपित्तत्वग्दोषनाशनः ॥ ५४ ॥

अर्थ–बापची–वात, कफ, पित्त और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ॥ ५४ ॥

एडगजगुणाः ।

तद्वदेडगजो गुल्मोदरार्शःकुष्ठजित्कटुः ॥ ५५ ॥

अर्थ–पमार (चकवड़)–गुल्म, उदररोग, बवासीर और कुष्ठनाशक है तथा चरपरा है ॥ ५५ ॥

करञ्जनिम्बफलयोर्गुणाः ।

करञ्जनिम्बजफलं कृमिकुष्ठप्रमेहजित् ॥ ५६ ॥

अर्थ–करंज और नीमके फल–कृमि, कुष्ठ और प्रमेहको दूर करे है ॥ ५६ ॥

विडंगगुणाः ।

विडंगमीषत्तिक्तं तु कृमिघ्नं विषनाशनम् ॥ ५७ ॥

अर्थ–वायविरंग–किञ्चित् कडवी, कृमि और विषनाशक है ॥ ५७ ॥

रेणुकागुणाः ।

रेणुका कफवातघ्नी दीपनी पित्तकृल्लघुः ॥ ५८ ॥

अर्थ–रेणुका–कफ और वातनाशक, दीपन, पित्तकारक और हलकी है ॥ ५८ ॥

भूर्जशिंशपयोर्गुणाः ।

भूर्जो बल्यः कफास्रघ्नः शिंशपा वातनाशिनी ॥५९॥

अर्थ–भोजपत्र–बलकारक कफनाशक और रुधिरदोष-निवारक है। सीसम वातनाशक है ॥ ५९ ॥

आस्फोतागुणाः।

आस्फोता विषकुष्ठघ्नी तिनिशो दाहपित्तनुत् ॥६०॥

अर्थ–आस्फोता (एक प्रकारका बेला)– विष और कुष्ठ-नाशक है। तिरिच्छ–दाह और पित्तनिवारक है ॥ ६० ॥

धातकीगुणाः।

धातकीकुसुमं शीतं रक्तपित्तातिसारनुत् ॥६१॥

अर्थ–धायके फूल–शीतल तथा रक्तपित्त और अतिसार-को हरनेवाले हैं ॥ ६१ ॥

शालगुणाः।

असनः कफपित्तघ्नः कदरो दन्तदार्ढ्यकृत् ॥ ६२ ॥

अर्थ–शालवृक्ष–कफ और पित्तनाशक है। सफेद खैर–दांतोंको दृढ करे है ॥ ६२ ॥

निम्बवृक्षगुणाः।

निम्बः पित्तकफच्छर्दिव्रणहृत् वातकुष्ठनुत् ॥ ६३ ॥

अर्थ–नीम–पित्त, कफ, वमन, व्रण, वात और कुष्ठको दूर करे है ॥ ६३ ॥

महानिम्बगुणाः।

महानिम्बः परं ग्राही कषायोम्लश्च शीतलः ॥ ६४ ॥

अर्थ–बकायन–मलरोधक, कषैली, खट्टी और शीतल है ॥ ६४ ॥

भूनिम्बगुणाः ।

भूनिम्बो वातलो रूक्षः कफपित्तज्वरापहः ॥ ६५ ॥

अर्थ–चिरायता–वातकारक, रूखा, कफ, पित्त और ज्वरनाशक है ॥ ६५ ॥

पर्पटगुणाः ।

पर्पटो पित्तहृद्दाहज्वरजित्कफशोषणः ॥ ६६ ॥

अर्थ–पित्तपापडा (फा० शातरा)–पित्तहारक, दाहनिवारक, ज्वरनाशक और कफशोषक है ॥ ६६ ॥

पाठागुणाः ।

पाठातिसारशमनी लघ्वी दोषत्रयापहा ॥ ६७ ॥

अर्थ–पाढ–अतिसारनाशक, हलका और त्रिदोषनाशक है ॥ ६७ ॥

कुटजगुणाः ।

कुटजः कफपितास्रत्वग्दोषार्शोऽतिसारजित् ॥ ६८॥

अर्थ–कुडा–कफ, रक्तपित्त, त्वचाके विकार, बवासीर और अतिसारको दूर करे है ॥ ६८ ॥

इन्द्रयवगुणाः ।

तद्बीजं ज्वरजित्तिक्तं रक्तपित्तातिसारजित् ॥ ६९ ॥

अर्थ–इन्द्रजो–ज्वरनाशक, कडवे, रक्तपित्त और अतिसारको दूर करे है ॥ ६९ ॥

ह्रीबेरगुणाः ।

ह्रीबेरं छर्दिहृल्लासतृष्णातीसारनाशनम् ॥ ७०॥

अर्थ–सुगंधवाला–वमन, उबकाई, तृषा और अतिसारका नाश करे है ॥ ७० ॥

मुस्तकगुणाः।

मुस्तकं तिक्तकटुकं वातघ्नं ग्राहि दीपनम् ॥ ७१ ॥

अर्थ–नागरमोथा–कडवा, चरपरा, वातनाशक, मलरोधक और दीपन है ॥ ७१ ॥

अतिविषगुणाः।

पाचन्यतिविषा तिक्ता ग्राहिणी दोषनाशिनी ॥७२॥

अर्थ–अतीस–पाचक, कडवा, मलरोधक और त्रिदोषनाशक है ॥ ७२ ॥

आर्द्रकगुणाः।

शृङ्गवेरोऽनिलश्वासकासहिक्काज्वरापहः ॥ ७३ ॥

अर्थ–अदरख–वात, श्वास, खाँसी, हिचकी और ज्वरको नाश करे है ॥ ७३ ॥

कङ्कलगुणाः।

कङ्कलं कफरोगघ्नं श्वासकासज्वरापहम् ॥ ७४ ॥

अर्थ–कायफल–कफरोग, श्वास, खाँसी और ज्वरका नाश करे है ॥ ७४ ॥

कुष्ठगुणाः।

कुष्ठं वातकफश्वासकासहिक्काज्वरापहम् ॥ ७५ ॥

अर्थ–कूठ–वात, कफ, श्वास, खाँसी, हिचकी और ज्वरको हरे है ॥ ७५ ॥

शोभाञ्जनगुणाः ।

शोभाञ्जनः कटुस्तिक्तः कफविद्रधिगुल्मनुत् ॥७६॥

अर्थ—सैंजिना—चरपरा, कड़वा तथा कफ, विद्रधि और गुल्मनाशक है ॥ ७६ ॥

यापगुणाः ।

यापो सरो ज्वरच्छर्दिश्लेष्मपित्तविसर्पजित् ॥७७॥

अर्थ—जवासा—ज्वर, वमन, कफ, पित्त और विसर्परोगनाशक है ॥ ७७ ॥

कटुकागुणाः ।

कटुका तु सरा रूक्षा कफपित्तज्वरापहा ॥ ७८ ॥

अर्थ—कुटकी—सारक (कुछ २ दस्तावर), रूखी, तथा कफ, पित्त और ज्वरनाशक है ॥ ७८ ॥

रास्नात्रायन्तीकयोर्गुणाः ।

रास्ना शोथामवातघ्नी त्रायन्ती कफवातनुत् ॥ ७९ ॥

अर्थ—रास्ना—शोथ और आमवातनाशक है । त्रायमान—कफ और वातनाशक है ॥ ७९ ॥

वरुणवृक्षगुणाः ।

वरुणोऽनिलशूलघ्नो भेदी चोष्णाश्मरीहरः ॥ ८० ॥

अर्थ—वरना—वात, शूल और पथरीको दूर करे है, दस्तावर और गरम है ॥ ८० ॥

पारिभद्रगुणाः ।

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेदक्रमीन् जयेत् ॥ ८१॥

अर्थ-फरहद-वात, कफ, सूजन और कृमिरोगका नाश करे है ॥ ८१ ॥

वासकगुणाः ।

वासकः कासवैस्वर्य्यरक्तपित्तकफापहः ॥ ८२ ॥

अर्थ-बाँसा-अडूसा-विसौंटा-खाँसी, स्वरभंग, रक्तपित्त और कफको हरनेवाला है ॥ ८२ ॥

गुडूचीगुणाः ।

गुडूची ग्राहिणी बल्या त्रिदोषघ्नी रसायनी ।
दीपनी ज्वरतृट्छर्दिकामलावातपित्तनुत् ॥ ८३ ॥

अर्थ-गिलोय-ग्राही, बलकारक, त्रिदोषनाशक, रसायन, अग्निको दीपन करनेवाली, तथा ज्वर, तृषा, वमन, कामला और वातपित्तनाशक है ॥ ८३ ॥

पिप्पलीमूलगुणाः।

भेदनं पिप्पलीमूलं दीपनं कफनाशनम् ॥ ८४ ॥

अर्थ-पीपरामूल-दस्तावर,दीपन और कफनाशक है ८४॥

चविकागजपिप्पलीगुणाः ।

चविकागजपिप्पल्यौ पिप्पलीमूलवत्स्मृते ॥८५॥

अर्थ-चव्य और गजपीपलके गुण-पीपरामूलकी समान हैं ॥ ८५ ॥

चित्रकगुणाः ।

चित्रकोऽग्निसमः पाके शोथार्शःकृमिकुष्ठहा॥८६॥

अर्थ-चीता-पचनेमें अग्निकी समान है तथा शोथ, बवासीर, कृमि और कुष्ठनाशक है ॥ ८६ ॥

दन्तीगुणाः ।

दन्ती साष्ठीलिकाध्मानगुल्मोदरहरा सरा ॥ ८७ ॥

अर्थ-दन्ती-अष्ठीलिका, आध्मान, गुल्म और उदररोग-नाशक है ॥ ८७ ॥

स्नुहीक्षीरगुणाः ।

दूषीविषोदरप्लीहगुल्मकुष्ठप्रमेहनुत् ।
बहुदोषे प्रयोक्तव्यं वह्नितुल्यं सुधापयः ॥ ८८ ॥

अर्थ-थूहरका दूध-दूषित विष, उदररोग, प्लीहा, गुल्म, कुष्ठ और प्रमेह रोगका नाश करे है। बहुत दोषयुक्त रोगमें इसका प्रयोग है और अग्निकी समान पाचक है ॥ ८८ ॥

अर्कवृक्षगुणाः ।

अर्कः क्रुमिहरस्तीक्ष्णः सरोर्शःकफदोषजित् ॥८९॥

अर्थ-आक-कृमिनाशक, तीक्ष्ण, सारक और कफनाशक है ॥ ८९ ॥

अर्कक्षीरगुणाः ।

तत्पयः क्रुमिदोषघ्नं हितं कुष्ठोदरार्शजित् ॥९०॥

अर्थ-आकका दूध-कृमिदोषनाशक, तथा कोढ, उदररोग और अर्शरोगमें हितकारी है ॥ ९० ॥

जयपालगुणाः ।

कानकं कफनुत्क्लेदि तीक्ष्णमुष्णं विरेचनम् ॥९१॥

अर्थ-जमालगोटा-कफनाशक, क्लेदकारक, तीक्ष्ण, गरम और विरेचक है ॥ ९१ ॥

धत्तूरगुणाः।

धत्तूरो मदमूर्छाकृत् कफघ्नो वह्निपित्तकृत् ॥ ९२॥

अर्थ-धतूरा-मद और मूर्छाको उत्पन्न करे है, कफनाशक तथा अग्नि और पित्तकारक है ॥ ९२ ॥

भल्लातकगुणाः।

भल्लातकं फलं स्निग्धं कृमिदुर्नामनाशनम्।
दन्तस्थैर्यकरं ग्राहि कषायं मधुरं च तत् ॥ ९३ ॥

अर्थ-भिलावा-स्निग्ध, कृमिनाशक, अर्शघ्न, दाँतोंको स्थिर करनेवाला मलरोधक, कषेला और मधुर है ॥ ९३ ॥

भल्लातवृन्तं मधुरं कषायं वातकोपनम्।
विष्टम्भि दुर्जरं शीतं रक्तपित्तप्रदूषणम् ॥ ९४ ॥

अर्थ-भिलावेका डंठल-मधुर, कषेला, वातप्रकोपक, विष्टम्भकारक, दुर्जर, शीतल और रक्तपित्तको दूषित करे है ९४

गुग्गुलुसाधारणगुणाः।

गुग्गुलो दीपनस्तिक्तः सकषायो रसायनः।
कटुर्मेदोनिलश्लेष्मकुष्ठघ्नः स्रंसनो लघुः ॥ ९५ ॥
सुस्वादः पीडकाघ्नश्च सोष्णश्च स्पर्शशीतलः।
वर्ण्यः स्वर्य्यः कटुः पाके रूक्षस्तीक्ष्णोग्निदीपनः९६
क्लेदमेहोपचीग्रन्थिशोथकृमिविनाशनः।
स्निग्धः काञ्चनसङ्काशः पक्वजम्बूफलोपमः ॥ ९७॥

अर्थ-गूगल-दीपन, कडवा, कषेला, रसायन, चरपरा तथा मेदरोग, वात, कफ और कुष्ठको नष्ट करे है, स्रंसन (ऊर्द्धगत

दोषोंको गिरानेवाला), हलका, स्वादिष्ठ, पिडकानाशक, उष्णवीर्य्य, स्पर्शमें शीतल, वर्णको उज्वल करनेवाला, स्वरशोधक, पचनेमें चरपरा, रूखा, तीक्ष्ण, अग्निप्रदीपक तथा क्लेद, अपची, ग्रन्थि, शोथ और क्रिमिरोगनाशक है । स्निग्ध तथा सुवर्णकी समान वर्णवाला और पकी हुई जामुनकी सदृश होता है ॥ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

नूतनगुग्गुलुगुणाः ।

नूतनो गुग्गुलुः प्रोक्तः सुगन्धिश्चापि पिच्छिलः॥९८॥

अर्थ–नवीन गूगल–सुगन्धित और पिच्छिल है ॥ ९८ ॥

पुराणगुग्गुलगुणाः ।

पुराणः शुष्को दुर्गन्धो मलानां नापकर्षकः॥९९॥

अर्थ–पुराना गूगल–सूखा, दुर्गंधयुक्त और मलको बांधनेवाला है ॥ ९९ ॥

रक्तत्रिवृतागुणाः ।

अरुणा त्रिवृता स्वादुः कषाया मृदुरेचनी ।
रूक्षा च कटुका चैव पाके तिक्ता कफापहा ॥१००॥

अर्थ–लाल निसोत–स्वादिष्ठ, कषेला, मृदुरेची, रूखा, चरपरा, पचनेमें कड़वा और कफनाशक है ॥ १०० ॥

श्वेतत्रिवृतागुणाः ।

तस्याश्चाल्पान्तरगुणा विज्ञेया त्रिवृता सिता ।
ज्वरहृद्रोगवातासृगुदावर्त्तादिरोगनुत् ॥ १ ॥

अर्थ–सफेद निसोत–लाल निसोतकी अपेक्षा न्यून गुणवा-

ला है। तथा ज्वर, हृदयरोग, वातरक्त और उदावर्त्तादि रोगको दूर करे है ॥ १ ॥

राजवृक्षगुणाः ।

राजवृक्षोऽधिकः पथ्यो मृदुर्मधुरशीतलः ॥ २ ॥

अर्थ–अमलतास–अधिकपथ्य, मृदु (नरम), मधुर और शीतल है ॥ २ ॥

राजवृक्षफलगुणाः।

तत्फलं मधुरं वृष्यं वातपित्तहरं सरम् ॥ ३ ॥

अर्थ–अमलतासकी फली–मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, वातपित्त-नाशक और सारक है ॥ ३ ॥

रोहितवृक्षगुणाः ।

रोहीतको यकृत्प्लीहगुल्मोदरहरः सरः ॥ ४ ॥

अर्थ–रोहितक (रोहेड़ा)–यकृत, प्लीहा, गुल्म और उदररोगनाशक तथा सारक है ॥ ४ ॥

वृद्धदारगुणाः ।

रसायनो वृद्धदारः शोथामवातरोगजित् ॥ ५ ॥

अर्थ–विधारा–रसायन, शोथ और आमवातनाशक है॥५॥

अपामार्गगुणाः ।

अपामार्गोऽग्निवत्तीक्ष्णः छेदनः स्रंसनः परः ॥ ६ ॥

अर्थ–अपामार्ग (चिरचिरा)–अग्निकी समान तीक्ष्ण, छेदक और स्रंसन है ॥ ६ ॥

सिन्धुवारगुणाः ।

सिन्धुवारो विषश्लेष्मकुष्ठव्रणविषापहः ॥ ७ ॥

20027

अर्थ–सह्यालू–विष, कफ, कोढ, व्रण और विषको दूर करे है ॥ ७ ॥

तुलसीगुणाः ।

तुलसी पित्तकृद्वातकृमिदौर्गन्ध्यनाशिनी ।
पार्श्वशूलारतिश्वासकासहिक्काविकारजित् ॥ ८ ॥

अर्थ–तुलसी–पित्तकारक, तथा कृमि, दुर्गंध, पार्श्वशूल, अरति, श्वास, खाँसी और हिक्कारोगको दूर करे है ॥ ८ ॥

मूर्वागुणाः ।

मूर्वा तु बृंहणी बल्या कफवातामयान् जयेत् ॥९॥

अर्थ–चुरनहार–वाजीकरण- बलकारक तथा कफ और वातको दूर करे है ॥ ९ ॥

वंशलोचनगुणाः ।

कषाया मधुरा रूक्षा वातघ्नी वंशलोचना ॥ ११० ॥

अर्थ–वंशलोचन–कषेला, मधुर, रूखा और वातनाशक है ॥ ११० ॥

स्वर्णक्षीरीगुणाः ।

स्वर्णक्षीरी क्षयश्वासकासघ्नी मधुरा हिमा ॥ ११ ॥

अर्थ–सत्यानासी कटेरी–क्षय, श्वास और खाँसीको दूर करे है तथा मधुर और शीतल है ॥ ११ ॥

हेमन्तशिशिरकृत्यम् ।

शीते शीतानिलस्पर्शसंरुद्धो बलिनां बली ।
पक्ता भवति हेमन्ते मात्राद्रव्यगुरुक्षमः ॥ १२ ॥

स यदा नेन्धनं युक्तं लभते देहजं तथा।
रसं निहन्त्यतो वायुः शीतः शीते प्रकुप्यति ॥१३॥
तस्मात्तुषारसमये स्निग्धाम्ललवणान् रसान् ।
औदकानूपमांसानां मेध्यानामुपयोजयेत् ॥ १४ ॥
बिलेशयानां मांसानि प्रहसानां भृतानि च ।
भक्षयेन्मदिरां सीधुं मधु चापि पिबेन्नरः ॥ १५॥
गोरसानिक्षुविकृतीर्वसां तैलं नवौदनम् ।
हेमन्तेऽभ्यस्यतस्तोयमुष्णञ्चायुर्न हीयते ॥ १६ ॥
अभ्यङ्गोत्सादनं मूर्ध्नि तैलं जेन्ताकमोतपम् ।
भजेद्भूमिगृहं चोष्णमुष्णं गर्भगृहं तथा ॥ १७॥
शीते सुसंवृतं सेव्यं यानं शयनमासनम् ।
प्रावाराजिनकौपेयप्रवेणीकुथकास्तृतम् ॥ १८॥
गुरूष्णवासा दिग्धाङ्गो गुरुणाऽगुरुणा सदा ।
शयने प्रमदां पीनां विशालोत्थितसुस्तनीम् ॥१९॥
आलिङ्ग्यागुरुदिग्धाङ्गीं सुप्यात् समदमन्मथः ।
प्रकामं च निषेवेत मैथुनं शिशिरागमे ॥ १२०॥
वर्जयेदन्नपानानि लघूनि शीतलानि च ।
प्रवातं प्रमिताहारमुदमन्थं हिमागमे ॥ २१ ॥
हेमन्ते शिशिरे तुल्ये शिशिरेऽल्पं विशेषणम् ।
रौक्ष्यमादानजं शीतं मेघमारुतवर्षजम् ॥ २२ ॥
तस्माद्धेमन्तिकः सर्वः शिशिरे विधिरिष्यते ।
निवातमुष्णन्त्वधिकं शिशिरे गृहमाश्रयेत् ॥ २३॥

कटुतिक्तकषायाणि वातलानि लघूनि च ।
वर्जयेदन्नपानानि शिशिरे शीतलानि च ॥ २४ ॥

अर्थ–हेमन्तकाल (अगहन, पूष) में शीतल पवन चलनेसे मनुष्योंके शरीरकी गर्मी बाहर नहीं निकलती, इसीलिये हेमन्तकालमें बलवान पुरुषोंकी पाचकाग्नि प्रबल उत्पन्न होकर अधिक और भारी वस्तुओंके पचानेको सामर्थ्य होता है। ऐसेही जो प्रबल अग्नि उचित परिमाणसे पाक करनेकी वस्तु न पावे तो वह शरीरकी रसधातुका क्षय करना आरम्भ करता है। रसोंके क्षय होनेके लिये और शीतल पवनके कुपित होनेके कारण, इस ऋतुमें स्निग्ध द्रव्य, खट्टा, और लवण रसयुक्त द्रव्य, पवित्र जलीय (पवित्र जलके रहनेवाले जीव) और आनूप (जलके समीप रहनेवाले स्थानोंमें जो पशु वास करते हैं) वा, जलीय (गड्ढोंके रहनेवाले) पशुओंका अथवा प्रसह (जो पक्षी भोजनकी सामग्री पातेही तत्काल उस भोजनको भक्षण कर लेते हैं) ऐसे जीवोंका मांस भक्षण करै, और फिर सीधुनामक मद पीकर पीछे सहत पिये। इस ऋतुमें दूध, इक्षुविकृति (गुडादिक), वसा (चर्बी), तेल और नये चावल आदिक अन्न भोजन करना चाहिये। इस ऋतुमें गरम करके जल पीनेवाले मनुष्यकी आयु नष्ट नहीं होती। इस समयमें अभ्यङ्ग (तेल आदिकका मलना), उत्सादन (हलदी इत्यादिक शरीरमें मलना, उबटन) जेन्ताक (स्वेदविशेष) आदिका

व्यवहार करै, ईट अथवा मिट्टीके बने हुए गरम गृहमें, अथवा उष्णगृह (गृहमें ईट और मिट्टीके बने हुए घरके बीचवाले कोठेको गर्भगृह कहते हैं) ऐसे स्थानमें वास करना चाहिये,और कम्बल, चर्म्म (पोस्तीन वगैरह), रेशमीन प्रवेणी (विचित्र कम्बल) आदिसे भलीभांति ढकी हुई सवारी, पालकी, डोल इत्यादि, शय्या और आसवका व्यवहार करै, सदा मोटा और गरम वस्त्र पहिरै, घिसे हुए गाढे अगर चन्दनादिका लेप करै, शयनके समय वारुणी पीकर कामयुक्त चित्तसे नवयौवना, पीनांगी, उठे हुए स्तन (छाती) वाली, अगर आदि सुगन्धि ये जिसके शरीरमें लग रहीं, ऐसी सुन्दर रूपवाली स्त्रीके साथ शय्यापर शयन करके उसको आलिंगन करै, और इच्छानुसार मैथुन करके फिर सो रहै, और इस ऋतुमेंके वात बढानेवाले भोजन, और पानीय अर्थात् पीनेके द्रव्य, प्रबल वायु, और थोडा आहार करना चाहिये, और उदमन्थ (पानीमें घोले हुए सत्तू) का त्याग कर दे,हेमन्त.और शिशिरकाल दोनों लगभग एकसेही हैं, केवल थोडासा भेद यही है, कि शिशिरकालमें आदानजात (इस समयमें सूर्यके द्वारा शरीरका चिकना पदार्थ ग्रहण किया जाता है) रूखापन, मेघ, वायु और वर्षासे उत्पन्न हुवा शीत अधिक होता है, इसलिये हेमन्तकालके आचार व्यवहार शिशिरकाल (माघ, फाल्गुन) में आचरण करे, इस समयमें पवनहीन गरम गृहमें रहना चाहिये, और चरपरे, कडुवे, कपैले रसवाले पदार्थ, वायुके बढानेवाले द्रव्य, हलकी

वस्तु और शीतल भोजन और पनीला आहार नहीं करना चाहिये ॥१२॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥१८॥ ॥ १९ ॥ १२० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

वसन्तकृत्यम् ।

हेमन्ते निचितः श्लेष्मा दिनकृद्भाभिरीरितः ।
कायाग्निं बाधते रोगांस्ततः प्रकुरुते बहून् ॥ २५ ॥
तस्माद्वसन्ते कर्म्माणि वमनादीनि कारयेत् ।
गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवा स्वप्नं च वर्जयेत् ॥ २६ ॥
व्यायामोद्वर्तनं धूमं कवलग्रहमञ्जनम् ।
सुखाम्बुना शौचविधिं शीलयेत्कुसुमागमे ॥ २७ ॥
चन्दनागुरुदिग्धाङ्गो यवगोधूमभोजनम् ।
शारभं शाशमैणेयं मांसं लावकपिञ्जलम् ॥ २८ ॥
भक्षयेन्निगदं सीधुं पिबन्माध्वीकमेव वा ।
वसन्तेऽनुभवेत्स्त्रीणां काननानां च यौवनम् ॥ २९॥

अर्थ—हेमन्तऋतुमें संचितश्लेष्मा, सूर्यकी तीक्ष्ण किरणोंसे चलायमान होकर शरीरकी अग्निको हीन करता है, इस कारण वसन्तऋतु (चैत, वैशाख) में अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं, इसलिये वसन्तकालमें कफके दमन करनेको वमनादि क्रिया करनेकी आवश्यकता है । इस ऋतुमें भारी, खट्टी, मधुररसवाली वस्तु और दिनका सोना छोड देना चाहिये, और दिनका व्यायाम (कशरत), उवटन, हुक्का पीना, कवडग्रहण (अदरख इत्यादिके रससे कुल्ला करना), आंखोंमें अञ्जन डालना, कुछेक

गरम जलसे शौचक्रिया करना, चन्दन और अगरको शरीरमें लगाना, यव, गेंहू, शशकका मांस, खरगोशका मांस, हरिणका मांस, लवेका मांस, और चातकका मांस भक्षण करना, और सीधु व माध्वीनामक मदका पीना बहुत अच्छा है। इस ऋतुमें वनोंके और स्त्रियोंके यौवनका अनुभव लेवे ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥

ग्रीष्मकृत्यम् ।

मयूखैर्जगतः सारं ग्रीष्मे पेपीयते रविः ।
स्वादु शीतं द्रवं स्निग्धमन्नपानं तदा हितम् ॥१३०॥
शीतं सशर्करं मन्थं जाङ्गला मृगपक्षिणः ।
घृतं पयः सशाल्यन्नं भजन् ग्रीष्मे न सीदति॥३१॥
मद्यमाज्यं न वा पेयमथवा सुबहूदकम् ।
लवणाम्लकटूष्णानि व्यायामं चात्र वर्जयेत् ॥३२ ॥
दिवा शीतगृहे निद्रा निशि चन्द्रांशुशीतले ।
भजेच्चन्दनदिग्धाङ्गः प्रवाते हर्म्यमस्तके ॥ ३३ ॥
व्यजनैः पाणिसंस्पर्शैश्चन्दनोदकशीतलैः ।
सेव्यमानो भजेतास्तां मुक्तामणिविभूषितः ॥ ३४ ॥
काननानि च शीतानि जलानि कुसुमानि च ।
ग्रीष्मकाले निषेवेत मैथुनाद्विरतो नरः ॥ ३५ ॥

अर्थ-ग्रीष्मकाल (ज्येष्ठ, आषाढ) में सूर्यकी किरणोंसे पृथ्वीके चिकने पदार्थ सूख जाते हैं, इसलिये स्वादिष्ठ, शीतल द्रव्य और चिकनाईके गुणोंसे संयुक्त भोजन और पीने योग्य

वस्तुका व्यवहार करना चाहिये, इस कालमें मिश्रीका मिला हुवा मट्ठा और जंगला पशु और वनके पक्षियोंका मांस, सट्ठीके चावलोंका भात खाय और दूध पिये, और जिनको मदिराके पीनेका अभ्यास हो, वह थोडीसी मदिरा वा अधिक जल मिली हुई मदिरा पियें, परन्तु जिनको मदिराके पीनेका अभ्यास नहीं हो, उनको इस ऋतुमें शराबका पीना अनुचित है । ग्रीष्मकालमें लवण, खटाई, कडुवा रस, गरम पदार्थ, और कशरत करनी छोड दे, शरीरमें चन्दन लगाय दिनके समय पवन आनेवाले शीतल स्वच्छ मन्दिरमें और रात्रिके समय ठण्डी सुगन्धित पवन चन्द्रमाकी किरणोंसे युक्त मदनबाण और गन्धराजके हार पहर कोटेकी छतपर शयन करे, जब दुपहरके प्रचण्ड सूर्यकी गरमीसे शरीर तप्त हो जाय तो चन्दनके जलको पंखेपर छिडक कर शीतल बयार और रासदासियोंका हाथ छूनेसे सावधान होनेके उपरान्त मणि मुक्ता धारण कर आनन्द करना चाहिये, फिर मैथुनसे निश्चित हो शीतल और सुगंधित पुष्पवाटिका, शीतल जल, और शीतल सुगन्धियुक्त फूलोंका व्यवहार करे ॥ ॥ १३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

वर्षाकृत्यम् ।

आदानदुर्बले देहे पक्ता भवति दुर्बलः ।
स वर्षास्वनिलादीनां दूषणैर्बाध्यते पुनः ॥ ३६ ॥
भूवाष्पान्मेघनिष्यन्दात्पाकादम्लाज्जलस्य च ।
वर्षास्वग्निबले क्षीणे कुप्यन्ति पवनादयः ॥ ३७ ॥

तस्मात्साधारणः सर्वो विधिर्वर्षासु चेष्यते ।
उदमन्थं दिवा स्वप्नमवश्यायं नदीजलम् ॥ ३८ ॥
व्यायाममातपं चैव व्यवायं चात्र वर्द्धयेत् ।
पानभोजनसंस्कारात् प्रायः क्षौद्रान्वितान् हितान् ३९
व्यक्ताम्ललवणस्नेहं वातवर्षाकुलेऽहेति ।
विशेषशीते भोक्तव्यं वर्षास्वनिलशान्तये ॥ १४० ॥
अग्निं संरक्षणवता यवगोधूमशालयः ।
पुराणजांगलैर्मांसैर्भोज्या यूषैश्च संस्कृतैः ॥ ४१ ॥
पिबेत् क्षौद्रान्वितं चाल्पं माध्वीकारिष्टमम्बु वा ।
माहेन्द्रतप्तशीतं वा कौमं सारसमेव वा ॥ ४२ ॥
प्रघर्षोद्वर्तनस्नानगन्धमाल्यपरो भवेत् ।
लघुशुद्धाम्बरं स्थानं भजेदक्लेदि वार्षिकम् ॥ ४३ ॥

अर्थ—आदानकाल (वर्षाऋतु) में देहकी दुर्बलताके हेतुसे अग्निभी दुर्बल हो जाती है, यह दुर्बलाग्नि वर्षाऋतुमें वातादि दोष करके औरभी अधिक निर्बल हो जाती है, इस समयमें पृथ्वीमेंसे बाफ उडती है, मेघ गर्जता है, जलका अम्ल पक जाता है, और अग्निका बल कम होनेसे वायु, पित्त, कफ कुपित होते हैं, इस कारण इस कालमें साधारण विधिका आचरण करना चाहिये, वर्षाकालमें जलका मिला मट्ठा पीना, दिनका सोना, हिम और नदीके जलका सेवन करना, कशरत करना, सूर्यकी धूपमें बैठना, और मैथुन कर्म छोड देना चाहिये, इस

कालमें मधुयुक्त पानी और बहुत हलके भोजनका व्यवहार करना चाहिये, और दिनमें पानी वर्षता हो और शीतल पवन चलती हो तो वायु दूर करनेके लिये खट्टा, लवणरस (नमकीन) और स्नेह (तेल, घृतादि) युक्त पदार्थ भक्षण करना चाहिये, अग्नि रक्षा करनेको पुराने यव, गेहूं, सठीके चावल और जांगलीदेशके पशुओंका मांस खाना, और शुद्ध करा हुआ यूष (अठारह भाग पानी; एक भाग मूंग अग्निमें औंटावे जब चतुर्थ भाग रह जाय उसको छान कर सेंधा नोंन शुंठि, जीरा, मिरच्यादि डाले उसको यूष कहते हैं) मधुयुक्त थोडीसी माध्वीक मदिरा (शराब) या अरिष्ट पिये, मेघजल वा तप्त शीतल जल (जो जल पहिले गरम करके शीतल कर लिया जाय) अथवा कुएका जल, वा सरोवरका जल पिये, इस ऋतुमें शरीरका घिसना, शरीरसे हलदी आदिका लगाना, स्नान, गन्धमाला धारण, हलका, शुद्ध वस्त्र पहिरना चाहिये, और क्लेदरहित उत्तम स्थानमें निवास करे ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

शरत्कृत्यम् ।

वर्षाशीतोचिताङ्गानां सहसैवार्करश्मिभिः ।
तप्तानामाचितं पित्तं प्रायः शरदि कुप्यति ॥ ४४ ॥

तत्रान्नपानं मधुरं लघु शीतं सतिक्तकम्।
पित्तप्रशमनं सेव्यं मात्रया सुप्रकाङ्क्षितैः ॥ ४५ ॥
लावान् कपिञ्जलानेणानुरभ्रान् शरभान् शशान्।
शालीन् सयवगोधूमान् सेव्यानाहुर्घनात्यये॥४६॥
तिक्तस्य सर्पिषः पानं विरेको रक्तमोक्षणम्।
धाराधरात्यये कार्य्यमातपस्य च वर्जनम्॥ ४७ ॥
वसां तैलमवश्यायमौदकानूपमामिषम्।
क्षारं दधि दिवा स्वप्नं प्राग्वातं चात्र वर्जयेत् ॥४८॥
दिवा सूर्य्यांशुसन्तप्तं निशि चन्द्रांशुशीतलम्।
कालेन पक्वं निर्दोषमगस्त्येन विषीकृतम् ॥४९॥
हंसोदकमिति ख्यातं शारदं विमलं जलम्।
स्नानपानावगाहेषु शस्यते तद्यथामृतम् ॥ १५० ॥
शारदानि च माल्यानि वासांसि विमलानि च।
शरत्काले प्रशस्यन्ते प्रदोषे चेन्दुरश्मयः ॥ ५१ ॥

अर्थ—वर्षाकालका शीत संचित हुवा पित्त, शरत्काल (क्वार, कार्तिक) में सूर्यकी किरणोंसे सन्तपित होकर बहुधा कुपित हो जाता है, (अनुबन्धरूपसे वायु और पित्तभी कुपित होते हैं) इसलिये पित्तके दबानेके हेत (अनुबन्ध) कफको दबानेके अर्थभी क्षुधायुक्त पुरुष मधुर, शीतल, हलका, चरपरा

अन्न और पानी योगमात्रासे सेवन करे, और लवा, कपिञ्जल (तीतर सफेद), काला हरिण, मेंढा शरभ और खरगोश आदि-का मांस, सठीके चावलोंका भात और यव, गेंहू खाय, पित्तको दबानेके अर्थ तिक्तरसयुक्त(घृत पंचतिक्तघृतादि) का पीना ठीक है, जो तिक्त घृतके पीनेसे पित्त न दबे तो विरेचन (जुलाबकी आदि) की औषधिका सेवन करके पित्तको दबावे, जो इससे-भी नहीं दबे तो रक्तमोक्षण (फस्त) कराना चाहिये, इस ऋतु-में शरीरको धूप न लगने दे, इस कारण दुपहरिमें फिरना वसा (चर्बी), तेल, हिम, जल, आनूपमांस (जलके निकट स्था-नमें रहनेवाले पक्षियोंके मांसको आनूप कहते हैं)। खार (ज-वाखारादि) दही, दिनका सोना, और प्रबलवायुका सेवन छोड देना चाहिये, वर्षाऋतुमें मेघ बरसनेसे जल नवीन हो जाता है व इस जलमें विषैले पदार्थ मिल जाते हैं, और जलका अम्लपाक हो जाता है, जब शरद्कालमें यह जल स्वभावसे पक जाय और अगस्तके उदयसे विषरहित हो जाय, तब उसके ग्रहण करके सारे दिन सूर्यकी धूपमें और सारी रात चन्द्रमाकी उजि-यालीमें रखकर शीतल करे, (इस प्रकारके जलको हंसोदक कहते हैं) शरत्कालमें स्नान, पान और कुल्ला करनेको हंसो-दकही बहुत श्रेष्ठ है, और अमृतकी समान है, इस कालमें सु-गन्धित पुष्पोंकी माला व निर्मल वस्त्रोंका व्यवहार करना चाहिये

२००२७

और प्रदोष (सन्ध्या) कालमें चन्द्रामार्को किरणोंका सेवन करना उचित है ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ १५० ॥ ५१ ॥ ॥ इति ऋतुकृत्यं समाप्तम् ॥

इति श्रीराजवल्लभनिघण्टे द्रव्यगुणचन्द्रिकाटीकायां आयुर्वेदोद्धारकरामप्रसादात्मजे मुरादाबादनगरनिवासिमाथुरवंशीयशालिग्रामवैश्यकृते षष्ठः परिच्छेदः समाप्तः ॥ ६ ॥

संवत् १९५२ वि० श्रावणमासे शुक्लपक्षे नवम्याम् ।

२००२७

इति
राजवल्लभभाषाटीका
समाप्ता

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " छापाखाना,
कल्याण–मुंबई.

नूतन पुस्तकें.

श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण गोविंदराजीय भूषण और तनिश्लोकी, रामानुजी इन तीनों व्याख्या सहित छपके तैयार है. ग्राहकलोगोंको इसका मूल्य २५ रु० देंगा. और भगवद्गुणदर्पणाख्य श्रीविष्णुसहस्रनामभाष्य १२००० ग्रन्थ भेटमें दिया जायगा. इसका डाकमहसूल अलग पडेगा. डाकमहसूल प्रथम आनेसे पुस्तक व्हाल्युपेबलसे भेजा जायगा. इसका कमिशन नहीं मिलेगा.

बालसंस्कृतप्रभाकर. संस्कृत और शुद्ध हिंदीभाषामें अपूर्व ग्रंथ–संस्कृत सीखनेवाले, विद्यार्थिगणको अत्यंत उपकारक तथा चमत्कारक. जिसमें प्रथम संस्कृत वाक्य और उसके सामने शुद्ध हिंदीवाक्योंमे अर्थ लिखा गया है और अपूर्व २ संस्कृत गंभीरशब्दोंका संग्रह, व्याकरणकी उपयुक्त सबही बातें उदाहरणसहित संक्षिप्ततासे लिखी गई हैं, तथा धर्मशास्त्र ज्योतिष आदि प्राचीन वर्तमानके सबही उपयुक्त विषय लिखे गये हैं। जिससे विद्यार्थिगण संस्कृत बोलनेमें भाषांतर करनेमें तथा सब प्रकारके अन्य विषयोंके ज्ञानमेंभी निपुण २ हो जावेगा, यह देखनेहीसे मालूम होवेगा। ग्लेज कागज कीमत ८ आना। रफ कागज कीं० ६ आना।

कालज्ञान, स्वरोदय, नीति वेद, शास्त्र, पुरान, वैद्यक, कर्म-धर्म-विचार, बडे बडे महात्माओंके बनाये हुए रागरागिनी, चेतावनी, लावनी, और सब मत, तथा अनेकप्रकारकी चुनी चुनी चीजें लिखी हैं. सज्जन लोग इस पुस्तकके देखनेसे कभी तृप्त नहीं होवेंगे. इस ग्रंथमें जो नर जैसे पढनेका इरादा करेंगे वैसाही इसमें पावेंगे. क्योंकि, अंग्रेजी महराठी उरदू भाषाकीभी बहुत पद लिखी हैं. इस ग्रंथका सब ख्याल लिखनेके बारेमें बुद्धि नहीं पुर सकती, यह तो आदिसे अंततक देखनेसेही सज्जनोंको मालुम होवे. इसके **प्रथमखंड** (भाग १ कीमत १। रु०, भाग २ कीमत १॥ रु०) **द्वितीयखंड** (कीमत १ रु०) छपके तैयार हैं.

अभिलाससागर. (अपूर्व ग्रंथ)

यह ग्रंथ भाषामें अभिलाखदास स्वामीजीने बनाया है, इसमें तरंग ग्यारह हैं और प्रत्येक तरंगमें दो चार आठ कई लहरियांभी हैं। गुरुशिष्यसंवादसे ब्रह्म किसको कहते हैं यह इसमें व्यवहाररीतिसे प्रतिपादित है, एक शिष्यने बहुत गुरुओंके पास जा ब्रह्मका प्रश्न किया है और सब गुरुओंने भिन्न २ मतोंसे ब्रह्म बताया है। इन सब मतोंका खंडन कर अंतमें ब्रह्मकी सिद्धि की है। इसमें एक बार थोडा भाग देखनेसे सब ग्रंथ पढनेकी उत्कंठा हो जाती है और पुनः पुनः पढनेसेभी तृप्ति नहीं होती, यह चमत्कार है। की० २ रु०।